दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला–११

शुभाकरगुप्त-विरचिता

अभिसमयमञ्जरी

མངོན་པར་རྟོགས་པའི་སྙེ་མ།



भोट विद्या संस्थानम्

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द २५३७ खीस्ताब्द १९९३

RARE BUDDHIST TEXT SERIES–11

ABHISAMAYAMAÑJARĪ

OF

ŚUBHĀKARA GUPTA



Editors

PROF. SAMDHONG RINPOCHE
Project Director

PROF. VRAJVALLABH DWIVEDI
Deputy Director

RARE BUDDHIST TEXT RESEARCH PROJECT
Central Institute of Higher Tibetan Studies
SARNATH, VARANASI

B. E. 2537 **C. E. 1993**

Co-Editors

Pt. Janardan Pandey
Dr. Banarsi Lal
Dr. Tashi Samphel
Dr. Thakur Sain Negi
Thinlay Ram Shashni
Penpa Dorjee
Vijay Raj Vajracharya

First Edition : 550 Copies, 1993

Price : Rs. 35.00

Published by :
Central Institute of Higher Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221007

Printed by :
Shivam Printers
C. 27/273, Indian Press Colony
Maldahiya, Varanasi-2

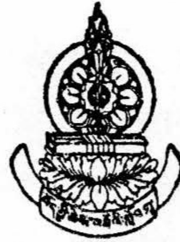
दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला–११

शुभाकरगुप्त-विरचिता

अभिसमयमञ्जरी

མངོན་པར་རྟོགས་པའི་སླེ་མ།

མཛད་པ་པོ། དགེ་བའི་འབྱུང་གནས་སྦས་པ།



सम्पादकौ

प्रो० सम्‌दोङ् रिनपोछे
योजनानिदेशक:

प्रो० व्रजवल्लभ द्विवेदी
उपनिदेशक:

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द २५३७ **ख्रीस्ताब्द १९९३**

सहायक-मण्डल

प्रथम संस्करण : ५५० प्रतियाँ, १९९३

मूल्य : रु० ३५.००

प्रकाशक :
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी–२२१००७

मुद्रक :
शिवम् प्रिन्टर्स
सी० २७/२७३ इण्डियन प्रेस कालोनी
मलदहिया, वाराणसी–२

प्रस्तावना

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना की परामर्शदात्री समिति के 11.8.87 के निर्णय के अनुसार 'धीः' के चतुर्थ अंक में ज्ञानोदय और नवें अंक में डाकिनीजालसंवररहस्य नामक लघु तन्त्र-ग्रन्थों को प्रकाशित किया जा चुका है। अब उसी क्रम में 'धीः' के तेरहवें अंक में अभिसमयमंजरी को प्रकाशित किया जा रहा है।

इस ग्रन्थ की हमें चार पांडुलिपियाँ उपलब्ध हुई हैं। इसका भोट अनुवाद भी उपलब्ध है। इन्हीं सबकी सहायता से इस ग्रन्थ को यथामति संशोधित कर इस शोधयोजना के विद्वानों ने प्रस्तुत किया है। सहायक सामग्री का विवरण इस प्रकार है—

क—गुह्यसमयसाधनसंग्रह

व्यक्तिगत संग्रह प्रो० जगन्नाथ उपाध्याय (कापी 1–2), मूल पाण्डुलिपि धर्मरत्न वज्राचार्य काठमाण्डू, हिदेनोवु ताकाओका की सूची में संकलित सं० DH. 332, (Microfilm Catalogue of the Buddhist Mss of Nepal. 1981, Page–110)।

ख—डाकिनीगुह्यसययसाधनमालातन्त्रराज

राष्ट्रीय अभिलेखालय काठमाण्डू, लगत सं० 3/719, पत्र सं० 177, लिपि-देवनागरी (अभिसमयमञ्जरी पत्र सं० 9–33), जेराक्स प्रति शान्तरक्षित पुस्तकालय, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, परि० सं० 23268।

ग—गुह्यसमयसंग्रह

इंस्टीच्यूट आफ एडवांस स्टडीज ऑफ वर्ल्ड रिलिजन्स, न्यूयार्क सं० एम० बी० बी० I–140. लिपि–नेवारी, पत्र सं० 98 (अभिसमयमञ्जरी–पत्र 7 से 25 तक) फोटो प्रति व्यक्तिगत संग्रह प्रो० जगन्नाथ उपाध्याय।

घ—अभिसमयमञ्जरी

इंस्टीच्यूट आफ एडवांस स्टडीज ऑफ वर्ल्ड रिलिजन्स, न्यूयार्क संख्या-एम० बी० बी० II–243. पत्र सं० 35. लिपि–प्राचीन नेवारी, नेपाली संवत् 880, फोटो प्रति व्यक्तिगत संग्रह प्रो० जगन्नाथ उपाध्याय।

भो-भोटानुवाद, देगे तन्ग्युर संस्करण, तो० सं० 1582

इस ग्रन्थ के रचयिता का नाम क. ख. मातृकाओं में शाक्यरक्षित, घ. मातृका में शान्तरक्षित तथा ग. मातृका और भोट अनुवाद में शुभाकर गुप्त दिया गया है। प्रस्तुत ग्रन्थ (पृ० 15) में ग्रन्थकार अपने गुरु के ग्रन्थ वज्रावली का उल्लेख करते हैं। तदनुसार ग्रन्थकार का नाम शुभाकर गुप्त ही मानना उचित होगा, क्योंकि निष्पन्नयोगावली, वज्रावली जैसे महनीय ग्रन्थों के रचयिता अभयाकर गुप्त के शिष्यों में शुभाकर गुप्त का नाम प्रसिद्ध है। पण्डित अभयाकर गुप्त बंगाल के पालवंशीय राजा रामपाल के समय (1084–1130) में विद्यमान थे। अतः इनका समय 11वीं शताब्दी का अन्तिम और 12वीं शताब्दी का पूर्व भाग माना जाता है। शुभाकर गुप्त का समय तदनुसार 12वीं शताब्दी का मध्य भाग निर्धारित किया जा सकता है। शान्तरक्षित अभयाकर गुप्त से प्राचीन आचार्य हैं और तन्त्रशास्त्र के इतिहास ग्रन्थों में हमें सिंहल द्वीप में जन्मे एक सिद्ध पुरुष के रूप में शाक्यरक्षित का नाम मिलता है। जिनका प्रतिष्ठाननिर्णय नामक एक ही ग्रन्थ उपलब्ध होता है। फलतः अभी हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अभयाकर गुप्त के शिष्य शुभाकर गुप्त ही इस ग्रन्थ के कर्ता हैं। प्रज्ञोपायविनिश्चयसिद्धि के अन्त में आचार्य अनंगवज्र अपने गुरु शुभाकर का स्मरण करते हैं। निश्चय ही ये शुभाकर भी शुभाकर गुप्त से भिन्न प्राचीन आचार्य हैं।

अपने इस लघु ग्रन्थ में लेखक ने अपने गुरु अभयाकर गुप्त की वज्रावली के अतिरिक्त लूयीपाद (पृ० 8, 15) और सिद्ध शबरपाद (पृ० 29) का तथा लूयीपादाभिसमय के साथ अन्य अनेक अभिसमयों (बहुषु चाभिसमयेषु–पृ० 8) का उल्लेख किया है। फलतः 'अभिसमय' शब्द के अर्थ के विषय में जिज्ञासा होती है। गुह्यसमाज (7.34) और कृष्णयमारि तन्त्र (17.23) में बोधि शब्द के साथ अभिसमय शब्द का भी उल्लेख मिलता है। अभिसमयालंकार की स्फुटार्था वृत्ति (पृ० 93) में चतुर्विध प्रयोग मार्ग को अभिसमय कहा गया है। नामसंगीति की अमृतकणिका टीका (पृ० 331) में प्रभास्वर निराभास ज्ञान के साक्षात्कार को 'अभिसमय' कहा गया है। इन सबके आधार पर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि साधन मार्ग, अर्थात् प्रयोग मार्ग (उत्पत्तिक्रम) की प्रक्रिया का ही नाम अभिसमय है। विभिन्न अभिसमयों (साधनाओं) में अपने-अपने इष्टदेव का साक्षात्कार करने की, तदाकार होने की विभिन्न आचार्यों द्वारा बताई गई प्रक्रिया में उत्पत्तिक्रम की वह सारी पद्धति बताई जाती है, जिसकी सहायता से साधक अपने इष्टदेव का साक्षात्कार कर अन्ततः तद्भावापन्न हो जाता है। ऊपर के उद्धरणों में 'बोधि' शब्द के साथ आया 'अभिसमय' शब्द इसी अर्थ का बोध कराता है, जब कि नामसंगीति की टीका इस प्रयोगमार्ग द्वारा प्राप्त होने वाले प्रभास्वर पद के लिये भी, उसके फल के लिये भी इसी शब्द का प्रयोग करती है।

ऊपर दिये गये हस्तलेखों को सुलभ कराने में जिन व्यक्तियों और संस्थाओं ने सहायता की है, जिनका नाम-निर्देश ऊपर किया जा चुका है, उनका हम आभार स्वीकार करते हैं। इन ग्रन्थों के संस्कृत और तिब्बती पाठों को परिष्कृत करने वाले दुर्लभ ग्रन्थ शोध योजना में कार्यरत विद्वानों की नामावली का उल्लेख भी यथास्थान कर दिया गया है। इन सबको भी हम धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने बड़ी तत्परता से पाठ-संकलन और सम्पादन कर तथा यथोचित परिशिष्टों को संयोजित कर इस ग्रन्थ को अधिक से अधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया है। अन्त में हम शिवम् प्रेस के व्यवस्थापक एवं कर्मचारियों को भी धन्यवाद देना चाहेंगे, जिन्होंने तत्परतापूर्वक ग्रन्थ को प्रकाशित करने में सहयोग दिया।

सारनाथ

एस० रिन्पोछे
निदेशक

PREFACE

We have already published two minor text called the *Jñānodayatantra* and *Ḍākinījālasaṁvararahasyam* at the instance of the Advisory Committee of the Rare Buddhist Text Research Project in the fourth and ninth issues of the *Dhīḥ* journal respectively. Presently in that series we have brought out the *Abhisamayamañjarī of* Śubhākara Gupta.

The text has been colleted with the help of four mss. The Tibetan translation of the text is also available. With the help of these mss. the Text has been edited by the scholars of this project and presented for the readers. While the text in its edited form we have taken help from the following—

Ka – *Guhyasamayasādhanasaṁgraha*
Dharmaratna Vajracharya, Kathmandu, Nepal.
Dh-332, listed in the microfilm catalogue of Buddhist Manuscripts of Nepal, P-110, 1981, ed. Hidenobu Takaoka,
(Copy No. 1-2 from private collection of Prof. Jagannath Upadhyaya).

Kha – *Ḍākinīguhyasamayasādhanamālā Tantrarāja*
National Archives, Kathmandu
No—3/719 Folio—177
Script—Devanāgarī
(Abhisamayamañjarī Folios 9-33) Photostate copy preserved in the Tibetan Institute, Shantarakṣita Library. Acc. No—23268.

Ga – *Guhyasamayasaṁgraha*
Institute for Advanced Studies of World Religions, NY.
Ms. MBB-I—140 Script—Newāri
Folio-98
(Abhisamayamañjarī, Folio no. 7-25) Photo copy in the private collection of Prof. Jagannath Upadhyaya.

Gha – *Abhisamayamañjarī*
Institute for Advanced Studies of World Religions, NY.
Ms. MBB-II-243 Folio-35
Script-Newāri 880 Nepali Saṁvat
Photo copy in the private collection of Prof. Jagannath Upadhyaya.

Bhoṭa-Tibetan translation, Derge bsTanḥGyur Toh. No. 1582

Varient authourship is ascribed to the text in these mss. Ms Ka and Kha bear Śākyarakṣita as its author and Ms Gha mentions Śāntarakṣita as author.

But in Ms Ga and Tibetan translation it mentions Śubhākaragupta as the author of the text. Page no. 15 of the present text atributed *Vajrāvalī* to his master. This shows that Śubhākaragupta is the author of the text, because he was one of the famous disciples of Ācārya Abhayākara Gupta who wrote celebrated work like *Niṣpannayogāvalī* and *Vajrāvalī*. Ācārya Abhayākara Gupta lived during the time of king Rāmapāla (1084-1130) of Pāla dynasty in Bengal. So we can assert the date of Abhayākara Gupta between the end of eleventh and the beginning of twelfth century A. D. This helps us to assert that Śubhākara Gupta lived in mid 12th century. Ācārya Śāntarakṣita was much earlier than Abhayākara Gupta. Name of Śākyarakṣita could be traced in the History of Tantra Śāstra as a great ascetic born in Siṁhala island. Only one Text called *Pratiṣṭhānanirṇaya* is atributed to his credit. For these reasons we come to the conclusion that Ācārya Śubhākara Gupta, a famous desciple of Ācārya Abhayākara Gupta, is the author of the present text. Ācārya Anaṅga Vajra salutes his master Śubhākara in the end of his text *Prajñopāya-viniścayasiddhi*, which leads us to this assertion that Ācārya Śubhākara was a different scholar who is earlier than Śubhākara Gupta.

In this minor text, beside *Vajrāvalī* of his master, the author had quoted Lūyīpāda (p. 15), Siddha Śabarapāda (p. 29) and *Lūyīpādābhisamaya* with many other Abhisamayas. In *Guhyasamāja* (7.34) and Kṛṣṇayamāritantra (17.23) mention Abhisamaya with word *Bodhi* can be seen. In *Amṛtakaṇikā*, Commentary of *Nāmasaṁgīti* (p. 331) Abhisamya is asserted as the direct cognition of Buddha nature.

On these bases we can say Abhisamaya (clear realization) is the name of observance of path of preparation. In various Abhisamayas the way and manner of direct cognition of ones personal deity and becoming inseparable with the deity were explained which help a practioner to become one with his deity after direct cognition of his personal deity. The word *Bodhi* comming with Abhisamaya as stated above explains the same perception, But in the commentary of *Nāmasaṁgīti* the word is used for clear light stage (Prabhāsvara) and its fruit which can be obtained from the path of preparation.

We express our gratitute to individuals and the institutions which made the manuscript available for us. We are also thankful to the scholars of RBTRP, who helped edit the Sanskrit and Tibetan versions of the texts. We acknowledge the help of the scholars for collating and placing the appendices accordingly for the benefit of the readers. In the end we thank the management and worker of Shivam Printers to expedite the work in print.

S. Rinpoche
Director

Sarnath.

སྔོན་གླེང་།

ནང་པའི་ཆེས་དཀོན་པའི་གསུང་རབ་ཉམས་ཞིབ་འཆར་གཞིའི་གྲོས་འདེབས་ཚོགས་ཆུང་གི ༤༨ ཕྱི་ཟླ་ ༤ པའི་ཚེས ༡༡ གི་གྲོས་ཚོད་བཞིན་ཧྲཱིཿ དུས་རབ་བཞི་པའི་ནང་དུ་ཡེ་ཤེས་འཆར་བ་དང་དུས་རབ་དགུ་པའི་ནང་དུ་མཁའ་འགྲོ་མ་དྲ་བ་སྡོམ་པའི་སྙིང་པོ་ཞེས་རྒྱུད་གཞུང་ཆུང་ངུ་གཉིས་དཔར་སྐྲུན་ཞུས་ཡོད་པའི་རིམ་པ་འདིའི་འོག་དུས་རབ་བཅུ་གསུམ་པའི་ནང་དུ་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་སྙེ་མ་དཔར་སྐྲུན་ཞུས་ཡོད།

གསུང་རབ་འདིའི་ལག་བྲིས་མ་བཞི་ལག་སོན་བྱུང་ཞིང་དོན་འགྱུར་ཡང་ཡོད་པ་རྣམས་ལ་བརྟེན་འཆར་གཞི་འདིའི་མཁས་དབང་ལས་བྱེད་རྣམས་ཀྱིས་བློས་གང་ནུས་ཞུས་དག་བྱས་ཏེ་གསུང་རབ་འདི་དཔར་སྐྲུན་ཞུས་ཡོད་པར་མཐུན་གྱུར་ཆ་རྐྱེན་ཞུས་ཁངས་ག་ཤམ་གསལ།

ཀ–གསང་བའི་དམ་ཚིག་སྒྲུབ་ཐབས་བསྡུས་པ།

སློབ་དཔོན་འཇིག་རྟེན་དབང་ཕྱུག་གི་སྒྲ་སྒྲེར་དཔེ་མཛོད་ (བྲིས་དེབ ༡–༣)།

ཀཱ་ཋ་མ་ཎྜུ་ཌུའི་རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་ཆོས་ཀྱི་རིན་ཆེན་གྱི་རྩ་བའི་ལག་བྲིས་མ།

(ཧིདེནོ་ཨུད་ཀ་ཨོ་ཀའི་དཀར་ཆག་བདུས་ཨང་ DH. 332. བལ་ཡུལ་གྱི་ནང་པའི་ལག་བྲིས་མ་ (མིནྣསཀྲིཔ་ཊ) ཐྲ་གཟུགས་ཕིང་ཤོག (མའིཀྲོ་ཕིལྨ་) དཀར་ཆག ༡༩༤༡ ལྡེབ ༡༡༠)

ཁ–རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་མཁའ་འགྲོ་མ་གསང་བའི་དམ་ཚིག་སྒྲུབ་ཐབས་ཕྲེང་བ།

བལ་ཡུལ་རྒྱལ་ཁབ་ཀྱི་ཡིག་ཆ་ཁང་། ཀཱ་ཋ་མ་ཎྜུ་ཌུ།

ལག་བྲིས་མ་ཨང་ (ལགད་སཾ) ༣/༨༡༩

ལྡེབ་གྲངས–༡༨༨

ཡིག་གཟུགས—དེ་ཝ་ནཱ་ག་རཱི་ (མངོན་པར་རྟོགས་པའི་སྙེ་མ་གྲངས ༦—༢༢) ཤཱ་ཀྲ་
དབུས་བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོ་འི་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་ཞི་འཚོ་དཔེ་མཛོད་དུ་བཞུགས་
པའི་འབྲེལ་པར་ (ཛེ་རོ་ཀས) འདྲ་ཤུས་ཉོས་ཨང་ ༢༢༢༧༨

ག—གསང་བའི་དམ་ཚིག་བསྡུས་པ།

ནཱ་ཡཱ་ཀ ཨཛམ་གླིང་ཆོས་ཀྱི་ཆེས་མཐོ་འི་སློབ་ཁང་།

([illegible] ནཱ་ཡཱ་ཀ)།

ཨང་—ཨེམ༎ བི༎ བི༎ ༡—༡༥༠

ཡིག་གཟུགས—ནེ་ཝཱ་རཱི།

ལྡེབ་གྲངས—༦༨

(མངོན་པར་རྟོགས་པའི་སྙེ་མ་ལྡེབ ༤ ནས ༢༤ བར)།

སློབ་དཔོན་འཇིག་རྟེན་མགོན་པོ་མཆོག་གི་སྐུ་སྐྱེར་དཔེ་མཛོད་དུ་བཞུགས་པའི་པར་
བཤུས།

ང—མངོན་པར་རྟོགས་པའི་སྙེ་མ།

[illegible] ནཱ་ཡཱ་ཀ།

ཨང་—ཨེམ༎ བི༎ བི༎ ༢—༢༥༢

ལྡེབ་གྲངས—༢༤

ཡིག་གཟུགས—ནེ་ཝཱ་རཱི་རྙིང་པ།

བལ་ཡུལ་ལོ—༨༨༠

སློབ་དཔོན་འཇིག་རྟེན་མགོན་པོ་མཆོག་གི་སྐུ་སྐྱེར་དཔེ་མཛོད་དུ་བཞུགས་པའི་པར་
བཤུས།

བོད་འགྱུར—སྒྲ་དགེ་བསྙེན་འགྱུར།

རྒྱུད—　　འ། ལྡེབ་ ༢༤—༩༩

མཛད་པ་པོ— དགེ་བའི་འབྱུང་གནས་སྦས་པ།

ཆོས་ཚན་ཨང་—༡༤༨༢

རྒྱ་བའི་མ་དཔེ་ཀ་པ་དང་ཁ་པ་གཉིས་སུ་གཞུང་འདིའི་མཛད་པ་པོའི་མཚན་ཨཱཀུ་འཚོ་དང་། མ་དཔེ་ཁྭ་པའི་ནང་དུ་ཞི་བ་འཚོ། དེ་བཞིན་མ་དཔེ་ག་པ་དང་བོད་འགྱུར་དུ་དགེ་བའི་འབྱུང་གནས་སྦས་པ་གསལ་འདུག གསུང་རབ་འདིའི་ (ལྡེབ ༡༤) ནང་དུ་གཞུང་མཛད་པ་པོས་རང་གི་བླ་མའི་གསུང་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པའི་སྐོར་གླིང་བར་མཛད་འདུག་པ་དེ་ལྟར་གཞུང་མཛད་པ་པོའི་མཚན་དགེ་བའི་འབྱུང་གནས་སྦས་པ་ཉིད་དུ་ཚད་འཛིན་བྱེད་འོས་པར་སྣང་། གང་གིས་ན་རྫོགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་ཐེག་པ་དང་རྡོ་རྗེའི་ཐེག་པ་ལྟ་བུའི་གཞུང་གལ་ཆེ་དག་མཛད་པོ་འཇིགས་མེད་འབྱུང་གནས་སྦས་པའི་སློབ་མ་རྣམས་ཀྱི་ནང་དགེ་བའི་འབྱུང་གནས་སྦས་པའི་མཚན་ཡོངས་སུ་གྲགས་པ་ཞིག་རེད།

མཁས་དབང་འཇིགས་མེད་འབྱུང་གནས་སྦས་པ་ནི་བངྒཱ་ལའི་པཱ་ལ་རྒྱལ་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་དགའ་སྐྱོང་གི་དུས་ (༡༠༨༩—༡༡༢༠) སུ་ཞལ་བཞུགས་ཡོད་པ་ཞིག་རེད། དེས་ན་ཁོང་གི་དུས་ཚོད་ནི་བརྒྱ་ཕྲག་བཅུ་གཅིག་པའི་མཇུག་དང་བཅུ་གཉིས་པའི་སྟོད་ཙམ་དུ་ཚད་འཛིན་བྱས་ཡོད་པ་ལྟར་དགེ་བའི་འབྱུང་གནས་སྦས་པའི་དུས་བརྒྱ་ཕྲག་བཅུ་གཉིས་པའི་དཀྱིལ་ཙམ་དུ་ངེས་གཏན་བྱ་འོས། ཞི་བ་འཚོ་ནི་འཇིགས་མེད་འབྱུང་གནས་སྦས་པ་ལས་སྔ་བའི་སློབ་དཔོན་ཡིན་པ་དང་། རྒྱུད་ཀྱི་བྱུང་རབས་རྣམས་སུ་སི་ངྒ་ལའི་གླིང་དུ་འཁྲུངས་པའི་གྲུབ་པའི་སྐྱེས་བུ་ཞིག་གི་ཚུལ་དུ་ཨཱཀུ་འཚོའི་མཚན་བྱུང་འདུག་པ་གང་གི (མཚན་ཐོག་ནས) གནས་ལ་སོགས་པ་གདན་ལ་དབབ་པ་ཞེས་པའི་གཞུང་གཅིག་རང་རྙེད་འདུག དེས་ན་རེ་ཞིག་འཇིགས་མེད་འབྱུང་གནས་སྦས་པའི་སློབ་མ་དགེ་བའི་འབྱུང་གནས་སྦས་པ་ཉིད་གཞུང་འདིའི་མཛད་པ་པོ་ཡིན་པར་ཐག་གཅོད་བྱའོ། །ཐབས་དང་ཤེས་རབ་རྣམ་

པར་གདན་ལ་དབབ་པར་སྒྲུབ་པའི་མཇུག་ཏུ་སློབ་དཔོན་ཡན་ལག་མེད་པའི་རྡོ་རྗེས་ཉིད་ཀྱི
བླ་མ་དགེ་བའི་འབྱུང་གནས་རྗེས་སུ་དྲན་པར་མཛད་འདུག ངེས་པར་དུ་འདི་ཡང་དགེ་
བའི་འབྱུང་གནས་སྦས་པ་ལས་ཐ་དད་ཀྱི་སློབ་དཔོན་སྔ་མ་ཞིག་ཡིན་པར་མངོན།

རང་གི་གཞུང་ཚུང་ངུ་འདིའི་ནང་རྫོགས་པ་པོས་རང་ཉིད་ཀྱི་བླ་མ་འཇིགས་མེད
འབྱུང་གནས་སྦས་པའི་རྡོ་རྗེ་ཕྲེང་བ་མ་ཟད་ལཱུ་ཡི་པཱ་ད་ (ལེབ ༨, ༡༥) དང་གྲུབ་ཐོབ
ཤ་བ་ར་པཱ་ད་ (ལེབ ༣༠) དེ་བཞིན་ལཱུ་ཡི་པའི་མངོན་པར་རྟོགས་པ་དང་མཉམ་མངོན
རྟོགས་གཞན་མང་པོ་ (ལེབ་བརྒྱད་པར། མངོན་པར་རྟོགས་པ་མང་པོ་ལས) ཞིག་གསལ་
བར་མཛད་འདུག་པ་དེས་ན་མངོན་པར་རྟོགས་པ་ཞེས་པའི་ཚིག་དོན་སྐོར་ཤེས་འདོད
བཏུས། གསང་བ་འདུས་པ་ (༥/༣༨) དང་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་གི་རྒྱུད་ (༡༥/༣༣)
དུ་བྱུང་ཚུལ་ཀྱི་ཚིག་མཉམ་དུ་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་ཚིག་ཀྱང་བྱུང་འདུག མཚན་ཡང་དག་
པར་བརྗོད་པའི་འགྲེལ་པ་བདུད་རྩིའི་ཐིགས་པར་ (ལེབ ༣༣༡) འོད་གསལ་སྣང་བ་མེད་
པའི་ཡེ་ཤེས་མངོན་སུམ་དུ་བྱེད་པ་ལ་མངོན་པར་རྟོགས་པ་ཞེས་གསུངས་འདུག་པ་འདི
དག་ཐམས་ཅད་ལ་རྟེན་སྒྲུབ་ཐབས་ཀྱི་ལམ་མམ་སྦྱོར་ལམ་ (བསྐྱེད་རིམ་) གྱི་རྣམ་བཞག
ཉིད་ལ་མངོན་པར་རྟོགས་པ་ཞེས་པའི་དོན་དུ་བཟུང་འོས་པར་སྣང་། སློབ་དཔོན་རྣམས་
ཀྱིས་གསུངས་པའི་སྒྲུབ་ཐབས་རྣམས་སུ་མངོན་རྟོགས་སྣ་ཚོགས་སུ་རང་རང་གི་ཡི་དམ་གྱི
ལྷ་མངོན་དུ་བྱ་ཚུལ་དང་དེའི་རྣམ་པར་འགྱུར་ཚུལ། བསྐྱེད་རིམ་གྱི་ཐབས་ཚུལ་འདི་དག་
ཐམས་ཅད་གསུངས་ཡོད་པ་དག་ལ་བརྟེན་སྒྲུབ་པ་པོས་ཡི་དམ་གྱི་ལྷ་མངོན་དུ་བྱས་ཏེ
མཐར་དེ་དང་རྟོགས་པ་མཉམ་པར་གྱུར་ཐུབ། གོང་གསལ་དཔེ་མཚོན་རྣམས་སུ་དྲང་ཚུལ་
ཀྱི་ཚིག་མཉམ་དུ་བསླབས་པའི་མངོན་རྟོགས་ཀྱི་ཚིག་རྣམས་ཀྱིས་དོན་འདི་རང་བསྟན་ཡོད
མཚན་ཡང་དག་པར་བརྗོད་པའི་འགྲེལ་པར་སྦྱོར་ལམ་གྱི་སྒོ་ནས་ཐོབ་རྒྱུའི་འོད་གསལ
གྱི་ལམ་དང་དེའི་འབྲས་བུའི་དོན་དུ་འང་ཚིག་འདི་རང་སྦྱོར་བར་བྱས་འདུག

གོང་གསལ་ལག་བྲིས་མ་རྣམས་རྙིང་ཐབས་སྲུ་སྐྱི་སྐྲིར་ཁག་ནས་གྲོགས་རམ……
གནང་ཡོད་པ་དག་གི་མཚན་གོང་དུ་ངེས་སྟོན་ཞུས་ཡོད་པ་རྣམས་ཀྱི་བཀའ་དྲིན་སྟོང་……
བཅངས་ཐོག   གསུང་རབ་འདིའི་ལེགས་སྒྲུར་དང་ངོད་དཔེའི་དག་ཞུས་བྱེད་པོ་ནང་པའི་
ཆེས་དཀོན་པའི་གསུང་རབ་ཉམས་ཞིབ་འཚར་གཞིའི་ལས་བྱེད་པ་མཁས་དབང་རྣམས……
ཀྱི་མཚན་ཐོ་སྐབས་མཚམས་སོ་སོར་གསལ་ཡོད་པ་དག་ལའང་ཐུགས་སྣང་ཆེན་པོས་དག
ཞུས་དང་ཞུ་སྒྲིགས་ཀྱིས་དགོས་མཁོ འི་ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་ཀྱིས་ལེགས་པར་བརྒྱན་ཏེ་རབ
འདི་ཕན་ཐོགས་ཅི་ཆེར་ཡོང་ཐབས་ལ་འབད་རྩོལ་ངུས་འདུག་པར་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་རྒྱུ་དང་།
དཔར་སྐྲུན་ཞུ་ཕྱོགས་ཐད་ཤིཔྲམ་པར་ཁང་གི་འགན་འཛིན་པ་དང་ལས་བྱེད་ཆེ་ཕྲ་རྣམས……
ཀྱིས་ཀྱང་དོ་ཁུར་ཆེན་པོས་མཐུན་གྲོགས་གནང་བར་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་རྒྱུ་བཅས་ལྷག་དབུས……
བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོ འི་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་ངེས་སྟོན་པ་ཟམ་གདོང་སྤྲུལ་སྐུས་ཕྱི་ལོ……
༡༩༩༢ ཟླ ༤ ཚེས་ ༦ ལ་བྲིས།

●

विषय-सूची

●

अभिसमयमञ्जरी

[1]ॐ नमो [2]वज्रवाराह्यै

नमोऽस्तु वज्रयोगिन्यै शून्यताकरुणात्मने ।
बिभर्ति मूर्तिवैचित्र्यं यो जगद्भावभेदतः ॥

या संबोधिसुधासुधावनवशाद् वैशद्यविद्योतिता
शान्ताद्या तनुते विनेयजनता रागाद्बहिः शोणता ।
बिभ्राणा कुलिशं कपालममलं खट्वाङ्गमुग्रद्युति[3]
सेयं वज्रविरा(ला)सिनी भगवती भूयाद्विभूत्यै तव ॥

इह गुरुबुद्धयोरभिन्नश्रद्धः [4]सुगृहीतबोधिचित्तः सम्यगासादिताभिषेको मुक्त[5]कुन्तलकलापः पञ्चवटिकादिप्रयोगपरिशोधितवक्त्रो योगी क्वचित् श्मशान-पर्वतादिदेशे सुखासनोपविष्टः साक्षाच्छवोपविष्टो वा ॐ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह क्ष हुं हुं फट्—इत्यालिकालिपङ्क्ति-स्फुरट(त्)पञ्चरश्मिकां त्रिरुच्चार्य परिवेष्ट्य स्थितां स्फुरन्[6](त्)त्रिचक्रदेवता-वृन्द[7]मर्दितविघ्नवृन्दां[8] भावयेत् । इति वाग्विशुद्धिः ।

विशुद्धिस्कन्धादिसमुत्थः(त्थं) पूजादिकं बोधेः शीघ्रकारणं भवतीति स्कन्धादिविशुद्धिमधिमुञ्चेत् । तत्र रूपादिषु विज्ञानपर्यन्तेषु फेनबुद्बुदमरीचिकदली-मायोपमत्वेन [9]निश्चेयो(या) वैरोचनादयः । तथतायामक्षोभ्यः । यद्वा वैरोचनादि-देवताधिमोक्ष एव तेषां [10]विशुद्धिः । [11]दशदिग्लोकधातुस्था वीरयोगिन्याकर्षयेत् ।

---

1. 'ॐ' नास्ति ग. घ. । 2. श्रीवज्र–भो. । 3. ज्योतिः–क. ख । 4. संगृहीत–क. । 5. कुण्डल–ख. ग. । 6. स्फुरन्ति चक्र–क. ख. ग. घ., गृहीतः पाठस्तु भोटानुसारी । 7. वृन्दं–क. ख. ग. । 8. वृन्दा–क. ख. ग. । 9. निश्चयो–क. । 10. 'विशुद्धिः' नास्ति–ख. । 11. 'दशदिग्लोक''''''''वलिमन्त्रविशुद्धिः' नास्ति– ग. घ. भो. ।

ॐ योगशुद्धाः सर्वधर्मा योगशुद्धोऽहम् । ॐ आः अरलि होः जः हुं वं हो वज्र-डाकिनी समयस्त्वं दृश्य होः वज्राञ्जल्या ऊर्ध्वविकचमुद्रया वलिं दद्यात् निशार्धके[1] । ॐ ख ख खाहि खाहि सर्वयक्षराक्षसभूतप्रेतपिशाचोन्मादा[पस्मा]र-डाकडाकिन्यादय [2]इमं वलिं गृह्णन्तु समयं रक्षन्तु भुजर्थ पिबर्थ जिघ्रर्थ माति-क्रमथ मम सर्वाकारज्ञतया [3]सर्वसु[ख]विवृद्धये सहायका भवन्तु हुं हुं फट् फट् स्वाहा । वलिमन्त्रविशुद्धिः ।

तत्र रूपवेदनासंज्ञासंस्कारविज्ञानेषु वैरोचनरत्नसम्भवामिताभामोघसिद्धि-वज्रसत्त्वाः । रूपादितथतायामक्षोभ्यः । सितपीतरक्तहरितशुक्लकृष्ण[ा]: [4]षडेते वर्णतो बोद्धव्याः । वैरोचन[:] चक्रोद्यतदक्षिणकरो घण्टायुत[5]सगर्भकटिस्थवामकरः । रत्नसंभवामिताभामोघसिद्धयो [6]रत्नरक्तपद्मविश्ववज्रोद्यतसलीलदक्षिणभुजा घण्टाकटिस्थ[7]वामकराः । वज्रसत्त्वो वज्रधारी सलीलहृद्गतदक्षिणकरः, घण्टायुत-सगर्व(र्भ)कटिस्थ[8]वामकरः । अक्षोभ्यवज्र[:] [9]सवज्रभूस्पर्शमुद्रान्वितदक्षिणकरः, घण्टान्वितसगर्व(र्भ)कटिस्थवामकरः । चक्षुःश्रोत(त्र)घ्राणवक्त्रस्पर्शेषु मोहवज्र-द्वेषवज्रईर्ष्यावज्ररागवज्रमात्सर्यवज्राः, क्षितिगर्भवज्रपाणिखगर्भलोकेश्वरसर्वणी-(नी)वरणविष्कम्भीनामान्तराः, शुक्लकृष्णपीतरक्तश्याम[10]वर्णाः । सर्वा-यतनेष्वैश्वर्यवज्रः समन्तभद्रनामान्तरः शुक्लः । मोहवज्रश्चक्रोद्यतदक्षिणकरः, सलीलघण्टान्वितहृद्गतवामकरः । द्वेषवज्रः सवज्रहृद्गतदक्षिणकरः, घण्टान्वित-सगर्व(र्भ)कटिस्थवामकरः । ईर्ष्यावज्ररागवज्रमात्सर्यवज्राः क्रमशो रत्न[11]रक्त-पद्मविश्ववज्रोद्यतसलीलदक्षिणभुजाः, घण्टान्वितसलीलहृद्गतवामकरः(राः) । ऐश्वर्यवज्रस्तु सवज्रहृद्गतदक्षिणकरः, घटान्वितसगर्भकटिस्थवामकरः । तत्र

---

1. धिको–ख. । 2. इमां–ख. । 3. सततख–क. । 4. एते–क. भो., षट् ते–ख. ।
5. 'सगर्भ' इति भोटपाठे, अत्राग्रेऽपि सगर्भपदं क्वापि नास्ति । 6. 'रत्न' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।
7. स्था–क. ख, हृद्गत–भो. । 8. स्था–क. । 9. सत्त्व–क. । 10. 'रक्त' इत्यधिकः पाठः–क. ख. ग. घ. ।
11. रक्ष–क., वज्र–ख. ।

मोहविनाशनाद् मोहवज्रः, द्वेषद्वेषणाद् द्वेषवज्रः, ईर्ष्यासर्वासङ्गमात्सर्यविनाशादीर्ष्यावज्रादयस्त्रयः। सर्वैश्वर्यदानादैश्वर्यवज्रः, [एते] पृथिव्यप्तेजोवायुधातु-[1]विशुद्धस्वभावाः।

पातनी-मारणी-आकर्षणी-नर्तेश्वर्यः पीतकृष्णरक्तहरितवर्णा [2]एकवक्त्राश्चतुर्भुजाः। चक्रकर्ति-वज्रकर्ति-[3]पद्मकर्ति-खड्गकर्ति[4]धारिदक्षिणभुजद्वयोः(याः), कपालखट्वाङ्गधारिवामभुजद्वयोः(याः)। रो(लो)चना-मामकी-पाण्डरा-ताराख्या आकाशधातुस्वभावाः। पद्मजालिनी[5]धूम्रवर्णा धूम्रशुक्लरक्तत्रिमुखा षड्भुजा कपालखट्वाङ्गपाशधारी(रि)वामभुजत्रयो(या), अङ्कुशब्रह्ममुण्डकर्तिभूषितदक्षिण[6]भुजत्रयो(या), धर्मधातुवज्रस्वभावा। तत्र पातन्यादयो नामानुरूपकर्मप्रसाधिकाः। वैरोचनादय आलीढ[7]पदा जटामुकुटिनस्त्रिनेत्राः पञ्चमुद्रिणः। देव्यो मुक्तकेश्यो नग्ना आलीढ[8]पदास्त्रिनेत्राः पञ्चमुद्राः।

ततः स्वहृदन्ते[9] शुषिरे [10]रंकारबीजनिर्जातरविमण्डलस्थरक्तवंकारं दृष्ट्वा तत्किरणैरन्तः[11]कल्मषमपास्य प्रतिरोमविवरविनि[12]र्गतैर्वक्ष्यमाणं भगवतीमण्डलचक्रं गुरुबुद्धबोधिसत्त्वांश्चाकृष्यानीय [13]नभसि पुरतो विभाव्य वन्दित्वा बीजरश्मिविस्फारित[14]वीणादिषोडशदेवीभिरर्चयेत्[15]। तत्र वीणा वंशा मृदङ्गा मुरजा[16] एकवक्त्राश्चतुर्भुजा नीलपीतरक्तहरिताः[17] स्वस्ववाद्यवादनतत्पराः प्रधानभुजद्वयोः(या।), वज्र-वज्रघण्टाधराऽपरभुजद्वयोः(याः)। हास्या लास्या गीता नृत्या एकमुखाश्चतुर्भुजा अरुणनीलपीतहरिताः। हास्या [18]लास्याभिनये प्रधानकरद्वयोः(या)।[19] लास्या वज्रवज्रघण्टाधारिसगर्व(र्भ)[20]लास्याभिनयप्रधानभुजद्वयोः(या)। गीता कंसीकाधारि-

1. 'विशुद्ध' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 2. 'एक ·· भुजाः' नास्ति–भो.। 3. 'पद्मकर्ति' नास्ति–क ख.। 4. धारिणं–ख., 'दक्षि' नास्ति–क. ख.ग.घ, गृ. भो.। 5. ज्वालिनी–क. ख.ग.घ., गृ. भो.। 6. दक्षिणकरे–भो.। 7-8. आलीढ-प्रत्यालीढ–भो.। 9. दन्त–क. ख. ग.। 10. 'रंकार' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 11. कल्मषमयं सूर्य–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 12. र्गतवरै–क.ख.ग.घ., गृ. भो.। 13. तमसि–क.। 14. विस्फुरित–क.। 15. रर्चैत्–ख. 16. मुरुजा–क. ख.। 17. तवर्णाः–भो.। 18. 'लास्या' नास्ति–भो.। 19. करादयो–क.। 20. 'लास्याभिनय' नास्ति–भो.।

प्रधानभुजद्वयो:(या)। नृत्या कमलाभिनयप्रधानभुजद्वयो:(या)। आसामन्यदक्षिणेतर-भुजयोः कपालखट्वाङ्गाः[1]। पुष्पा धूपा दीपा गन्धा श्वेतधूम्रदीपशिखाभरक्त-वर्णाः, चतुर्भुजैकवक्त्राः। आसां प्रधानैकभुजे पुष्पधूपकटच्छुदीपयष्टि[2]गन्धशङ्ख-धराः,[3] इतरभुजत्रयेषु डमरुकपालखट्वाङ्गानि। आदर्शा रसा स्पर्शा धर्मा [4]श्वेतरक्तहरितधवलाश्चतुर्भुजैकमुखाः प्रधानैकभुजेन दर्पणरसपात्रविश्व[5]वज्रधर्मो-दयधराः, इतरभुजत्रयेषु डमरुकपालखट्वाङ्गानि।

तदनु वक्ष्यमाणाष्टपदमन्त्रैरभिस्तुत्य[6] पापदेशना-पुण्यानुमोदना-निर्वाण-काम[ना]-जिनचिरस्थिति-अर्थाध्येषणा-धर्मचक्रप्रवृत्त्यर्थं[7]बुद्धयाचना - स्वपुण्यपरिणा-मना चेति सप्तविधानुत्तरपूजां कृत्वा रत्नत्रयशरणगमन-जिनमार्गाश्रयण-आत्मभाव-[8] निर्यातन-बोधिचित्तोत्पादपुरःसरं [9]सर्वसत्त्वानामेकपुत्रवत्तथैवैकरसमहासुख-संयोजनां वाञ्छात्मिकां मैत्रीम्, दुःखोद्धरणकामेणा(कामना)कारां करुणाम्, उत्पन्न-कुशलमूलभोगैश्वर्यादिष्ववियोगेच्छास्वभावां मुदिताम्, सर्वत्र प्रतिघानुनयरहित-धर्मतायां स्वरसवाहितयो[10](या) प्रवृत्तिलक्षणामुपेक्षां च भावयित्वोपार्जितपुण्य-संभारो ज्ञानसंभाराभिवृद्धये ॐ स्वभावशुद्धाः सर्वधर्माः स्वभावशुद्धोऽहमित्यर्था-भिमुखीकरणपूर्वकं पठेत्।

अत्र स्वभावशुद्धाः सर्वधर्मा इति ग्राह्यविशुद्धिः, स्वभावशुद्धोऽहमिति ग्राहकविशुद्धिः,

मायां विधाय मायावी यदा संहरते पुनः।
ना(न) किञ्चिद् विद्यते तत्र धर्माणां सा हि धर्मता॥

---

1. खट्वाङ्गधारि–भो.। 2. सुगन्ध–क.। 3. 'धराः' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 4. श्वेतक–ख. ग. घ.। 5. वस्त्र–ग. घ. भो.। 6. तुभ्यं–क., तुभ्य–ख.। 7. 'बुद्ध' नास्ति–भो.। 8. त्मकाय–भो.। 9. 'सर्व' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 10. 'परहितया धर्मतायां बलेन' इत्यधिकम्–भो.।

इति **प्रवचनात्** । त्रैधातुकमा[1]मन्त्रितमण्डलचक्रं च प्रतिभासमात्र[2]स्वभावं प्रभास्वर एव प्रवेश्य, आत्मानं च रवौ, तं वंकारे, [3]तमर्द्धचन्द्रं(न्द्रे), तं बिन्दौ, तं नादे, तद्विकल्पमपि ॐ शून्यताज्ञानवज्रस्वभावात्मकोऽहमित्यर्थानु[4]स्मरणो(णेनो)च्चार्य त्यजेत् । शून्यताज्ञानमेवाभेद्यत्वाद् वज्रम्, तस्य स्वभावस्तदात्मको[5]ऽहमित्यर्थः । ततः पूर्वप्रणि[6]धाना[7]वेधवशात् शून्यतासमाधेव्यु(र्व्यु)त्थाय स्वचित्तमेवोपर्युपरि यं रं वं लं परिणतधनुस्त्रिकोणवर्तुलचतुरस्राकारनीलरक्तश्वेतपीतवर्णचलत्पताकाङ्क-कोटिद्वयज्वालाकं [8]घण्टाकं कोणचतुष्टयं वायुवह्निवरुणक्षितिमण्डलस्वभावं विचिन्त्य तदुपरि [9]सुंकारसमुद्भवं चतुरस्रमष्टश्रृङ्गो(ङ्गं) पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तर-पार्श्वेषु रूप्यवैडूर्यस्फटिकसुवर्णमयं सुमेरुं ध्यात्वा ततः ॐ सुम्भ निसुम्भ [10]हुं हूं फट् । ॐ गृह्ण गृह्ण हुं हूं[11] फट् । ॐ गृह्णापय २ हुं हूं[12] फट् । ॐ आनय हो भगवन् विद्याराज हुं हूं[13] फट् । इति चतुरो मन्त्रान् वामतर्जन्यङ्गुष्ठे छोटिका-दानपूर्वकमुत्सार्य कृष्णहरितरक्तपीतवर्णान् ब्रह्माण्डरसातलव्यापिज्वलन्महाकायान् पूर्वोत्तरपश्चिमदक्षिणासु दिक्षु क्रमेण सुम्भादिमन्त्ररश्मिभिर्यावदिच्छाविस्तरान् चतुरो वज्रप्राकारान् ॐ वज्रप्राकार [14]हूं वं हूं इत्युच्चार्य निवेशयेत् । तत्समकाल-मेव [15]हुंकारज[16]तदधिष्ठितविश्ववज्रेण ॐ मेदिनी वज्रीभव वज्रबन्ध हुँ[17] इति पठित्वा विश्ववज्रमयीं भूमिमा रसातलपर्यन्तामधितिष्ठेत् ।

ततः वज्ररश्मि ॐ वज्रशर[18]ज्वल त्रं सं त्रं इत्यभिधाय पञ्चशूकवज्रा-कारमतिनिबिडमुपरि शरजालम्, तस्याधो वज्रपञ्जर [19]हूं वं हूं इत्युच्चार्य वज्र-पञ्जरम्, ॐ वज्रवितान [20]हूँ खँ हूँ [21]इत्युच्चार्य यथास्थानं वज्रवितानम्, ॐ

1. मातीत–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 2. मात्रेण–क. ख. । 3. वम–भो. । 4. त् गमनो–क., तुगमनो–ख. ग. घ., गृ. भो. । 5. तदात्मस्वभावको–भो. । 6. धानां–ख. । 7. बल–भो. । 8. घटाकं त्रिशूक-वज्रं–भो. । 9. सूँ–क. ख. ग. घ. । 10–13. हूं हूं–सर्वत्र दीर्घः–क., हुं हुं–सर्वत्र ह्रस्वः–ख. ग. घ. । 14. हुं वं हुं–ग. घ., हुं वं हुंः–ख. । 15. हूं–क. ख. ग. घ. । 16. जगद–क. । 17. हूं–भो. । 18. जाल त्रां शं त्रां–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 19. हुँ वँ हुँ–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 20. हुँ खँ हुँ–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 21. इति पाठान्तरं–क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।

वज्रज्वालानलार्क [1]हूं हूं हूं इत्युक्त्वा वज्रज्वालां च चिन्तयेत् । तदनु [2]सुम्भादिमन्त्रचतुष्टये निष्पन्नाः काकास्यादिचतस्रो देवीस्तदेवोभयमन्त्र[3]रश्मिसंभूता यमदाढ्यादिचतस्रो देवीश्चिन्तयेत्[4] । एता द्विभुजा एकवक्त्रा नाभेरधः शूलाकारा दक्षिणे [5]वज्रमुद्गरधारिण्यो वामे आत्मरूपकीलकहस्तो(स्ताः) स्फरणयोगेन गत्वा दशदिग(ग्ग)तविघ्नवृन्दमानीय दीर्घनादोच्चारितहुँकारनिष्पन्नेषु [6]वज्रप्राकार-बाह्येषु समीपे दिग्विदिगस्तु(दिक्षु) कूपेषु प्रवेश्य ॐ घ घ घाटय घाटय सर्वदुष्टान् फट् फट्[7] कीलय कीलय सर्वपापान् [8]फट् फट् [9]हूँ हूँ हूँ वज्रं कीलय वज्रधर आज्ञापयति सर्वविघ्नान् कायवाक्चित्तवज्रं कीलय कीलय [10]हुं फट्, इति कीलनमन्त्रोच्चारणपूर्वकं कीलयन्ति । ॐ वज्रमुद्गरवज्रकीलमा[11]कोटय [12]हुं फट् इत्याकोटनमन्त्रोच्चारण-पूर्वकमाकोटयन्ति । आकोटनकीलनाभ्यां विघ्नवृन्दमहासुखेन तथैकरूपं कुर्वन्तीं भावयेत् ।

पुनः शेषविघ्नानुत्सार्य प्राकारेषु लीयमानासु तासु तोये तोयास्फरण-बिन्दुनिर्गमन्यायेन सीमाबन्धार्थं वर्तुलान् वज्रपञ्चचक्रप्राकारान् चिन्तयेत् । तदेवं वज्रप्राकारादिविघ्नोत्सारणविशुद्धया[13] निःसन्ध्यैकखण्डीभूतं निर्विघ्नं च जगद्[14] ग्धिमुञ्च्य[15] वज्र[16]पञ्जरमध्ये धर्मधातुस्वभावां धर्मोदयामे[17]कारामुपरि विशालामधः सूक्ष्मां विचिन्त्य तन्मध्ये विश्वाब्ज[18]विश्ववज्रस्थ [19]हुं ज स विद्या[20]वैरोचनात्मकं कूटागारं तथागतपृथग्जनयोस्तथतैकरूपत्वेन वैधर्म्यो(र्म्या)ऽभावाच्चतुरस्रं स्मृत्युप-स्थानं सम्यक्प्रहाणं ऋद्धिपाद[म्] इन्द्रियविशुद्धया चतुर्द्वारम्, अष्टाङ्गमार्गविशुद्धया अष्टस्तम्भोपशोभितां(तं) शूरङ्गमगगनगञ्जविमलमुद्रासिंहविक्रीडितसमाधिचतुष्टय-

---

1. हुँ हुँ हुँ–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 2. सुम्भनी आदि–भो. । 3. भयोभयरश्मि-क. ख.ग. घ., गृ. भो. । 4. 'चिन्तयेत्' नास्ति–भो. । 5. 'वज्र' नास्ति–क. ख. । 6. 'वज्र' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 7-8. फट्–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 9.हुँ हुँ हुँ–क. ख. ग. घ. गृ. भो. । 10. हूँ–भो. । 11. कीलाकोटय–ख. ग घ., या कोटय–भो. । 12. हूँ–भो. । 13. विशुद्धानि मध्यैक–क. । 14. सर्वगः–भो । 15. मुच्य ग. घ. । 16. वज्रप्राकार–भो. । 17. दयाकारा–भो. । 18. 'विश्व' नास्ति–क. ख. ग. घ, गृ. भो. । 19 भ्रू–भो. । 20. सविद्य–क. ग. घ., सविश्व–ख. ।

विशुद्ध्या [1]चतुर्देवीपरिक्षिप्तम्, ध्यानचतुष्टयविशुद्ध्या चतुस्तोरणमण्डितम्, सप्तसंबोध्यङ्गविशुद्ध्या हारार्धहारचन्द्रार्कपताकादर्शचामर[2]विभूषितम्, संक्षेपेण तत्तु(त्तद्)-बुद्धगुणविशुद्ध्या तल्लक्षणोपेतम्[3]। तस्य नाभौ अष्टलोकधर्म[4]तामुपलक्षयेद् विशुद्ध्या [5]रक्तवंकारजाष्टदलकमलकर्णिकायाम् अविद्यान्धकारविधमनविशुद्ध्या[6] सूर्यमण्डले द्विगुणालिपरिणता[7]दर्शज्ञानस्वभावचन्द्र[8]मण्डलं ड ढ द ध य लोपेतद्विगुणकालि-परिणतसमताज्ञानस्वभावसूर्य[9]मण्डलयोर्मेलापकमहासुखं संपुटमध्यरक्त[10]वंकारज-वज्र[11]मुष्टचन्तर्गतभानुस्थ[12]वंबीजं प्रत्यवेक्षणा[13]ज्ञानस्वभावं तन्निर्मितरश्मिना स्फरित्वा दशदिक्षु भगवत्याकारेण सत्त्वार्थं कृत्वा पुनस्तत्रैव संहरणं कृत्या-नुष्ठानज्ञानम्[14]। एतत् सर्वपरिणामेनात्मानं भगवतीं वज्रवाराहीं सुविशुद्ध-धर्मधातु[15]ज्ञानस्वभावं महारागविशुद्ध्या दाडिमीकुसुमसंकाशं सत्यद्वयविशुद्ध्या भुजद्वयोः, दक्षिणेन प्रसृतोर्ध्वतर्जनिकया दुष्टतर्जनिकया(?) दुष्टतर्जनपरेण समरसी-भूत[16]पञ्चज्ञानविशुद्ध्यारुणवज्रधरां[17]वामेनाध एकशूकोर्ध्वं कृष्णपञ्चशूका-न्वित[18]दण्डानुगतशुष्कं सार्द्रं शिरो विश्ववज्रकनककलशमूलविनिर्गतरणत्सूक्ष्मघण्टि-कान्वितविश्वपताकाविराजितोपायस्वभावबाहुदण्डा[19]सक्त[20]शुक्लखट्वाङ्गमहासुख-महाकरुणारसमयासृक्पूर्णकपालं च बिभ्रतीं मिथ्या दृष्टिप्रहाणा[21]विकृतैकाननां चतुर्मारविनाशनाद् दंष्ट्रोत्कटभीषणां कायवाक्चित्तविशुद्धकृपारक्तनेत्रत्रयाम्। अद्वैततत्त्वस्य चतुरशीतिसाहस्रधर्मस्कन्धै[22]र्विकिरणविशुद्ध्ये[23](द्ध्या) मुक्तकेशीं चक्रिकुण्डलकण्ठिकारुचकखट्वाङ्गमेखलाख्याः(ख्य)पञ्चमुद्राधराम्।

---

1. कामगुणचतुष्पटचतुर्देवी–भो., चतुर्वेदी–ख. ग. घ.। 2. 'विभूषितं' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 3. पेत–क. ख. घ.। 4. धर्मलिप्ति–भो.। 5. रक्ष–क. ख.। 6. विशुद्धा–ख.। 7. तादर्शनज्ञा–क. ख.। 8-9. 'मण्डलं' नास्ति क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 10. पंकार–भो.। 11. वज्रनाभेरन्त–भो.। 12. 'वं' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 13. 'ज्ञान' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 14. 'ज्ञानम्' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 15. 'धर्मधातु' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 16. 'पञ्च' नास्ति–भो.। 17. 'वामेन' नास्ति–भो.। 18. सित–क. ख. ग., वितं–घ.। 19. शक्र–क.। 20. 'शुक्ल' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 21. हाणवि–क.। 22. विनिर्देशेन–भो.। 23. द्धयो–ख. ग. घ.।

कण्ठिकारुचककुण्डलानि शिरोमणिविभूषिताम् ।
यज्ञोपवीतं[1] भस्मेति मुद्राषट्कं प्रकीर्तितम् ।।

इति **केचित्**[2] । मण्डलनायिकात्वेन षण्मुद्रितामित्येके । दिगम्बरां नवयौवनशालिनी[म्] आलिकालिपञ्चाशदक्षरस्वभावां ग्रन्थित[3]सार्द्रनरशिरोमालिनीं शून्यतालीढजगच्छू(त्सू)चकत्वेन वामपादेनाकुञ्च्य दक्षिणं पञ्चवितस्तिप्रसारणादालीढेना[4]क्रान्तरक्ता[5]ष्टपत्रपद्मस्थसूर्यमण्डलोपरि पतितशाश्वतोच्छेदविकल्पस्वभावभैरवकालरात्री(त्रि)म्,[6] सुविशुद्धज्ञाना[7]लोकयोगात् सूर्यप्रभामण्डलिनीम्, शून्यतारूपतया जगदनुपलम्भसाम्यान्महातेजसम्, रजोयोगात् स्रवन्तीं करकलितकपालगलदसृक्पानप्रसङ्गाद्रुधिरप्रियां वज्रावलीद्वयमध्याकृतपञ्चतथागतात्मककपालमालाबद्धत्रिशिखां विश्वानुग्राहकत्वेन विश्ववज्राक्रान्तमौलीं सर्वलोकधातुसंग्राहकते(त्वे)न चक्षुःश्रोत्रघ्राणजिह्वाकायमनआलयक्लिष्टमनोविज्ञानमित्यष्टविज्ञानं(नां) नैरात्म्यास्वरूपत्वेन श्मशानाष्टकमध्यवर्तिनीं भावयेत् ।

यत्तु **लूयीपादाभिसमये** रक्षावज्र[8]पञ्जरादेरनन्तरं शून्यताभावनोक्ता, तदधिमात्रप्रज्ञाधिकारात् । तस्य शून्यतैव परं रक्षेति । सर्वजनसंग्रहणैः पुनरत्र शून्यताभावनानन्तरं रक्षापञ्जरादिकमुक्तम्, बहुषु चाभिसमयेष्वियमेवानुपूर्वी दृश्यत इति । पूर्वादिदलेषु चतुर्षु वामावर्तेन यथाक्रमं डाकिनी-लामा-खण्डरोहा-रूपिण्यः । कृष्णश्यामरक्तगौरा[9] एकवक्त्राश्चतुर्भुजा वामे खट्वाङ्गकपालधराः । दक्षिणे डमरुकर्तिधारिण्यस्त्रिनेत्रा दंष्ट्राकरालवदना मुक्तकेश्यो नग्ना आलीढपदाः पञ्चमुद्राधरा गलन्मुण्डमालिन्यो वज्रमालाङ्कललाट[10]-मेखलाः सराव[11]घुंघुरादिविभूषिता भावनीयाः । आग्नेयादि[12]विदिग्दलेषु दक्षिणावर्तेन बोधिचित्तेन रजसा पञ्चामृतैः पञ्चप्रदीपैः सिद्धरसवद-

1. पवीतिन–ग. घ. । 2. 'केचित्' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 3. शतार्द्ध–क. ख. । 4. लीढाभिनयेन–भो., ढेता–क. । 5. रक्षा–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 6. रात्रीकां–क., रात्रिकां–ग. घ. । 7. जाता–क. । 8. 'वज्र' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 9. पीत–भो. । 10. कंकलाट–क., ललाटा–ग. घ. । 11. घुघुरा–ख. ग. घ. । 12. दिग्दलेषु–क., विदिग्चतुर्दलेषु–भो. ।

मृतीभूतैः [1]परिपूर्णानि चत्वारि पद्म[2]भाजनानि भाव्यानि ।

तद्बहिर्नीलवज्रावलीवा(व)लयितनीलाष्टारप्रथमचित्तचक्रस्य पूर्वोत्तरपश्चिमदक्षिणारेषु[3] पुल्लीरमलय-जालन्धर-ओडियानार्बुदपीठस्वभावेषु प्रचण्डाचण्डाक्षीप्रभा[4]वतीमहानासाः । आग्नेयनैर्ऋतिवायव्यैशानेषु गोदावरी-रामेश्वर-देवीकोट्ट-मालव-[5]पीठात्मकेषूपपीठेषु वीरमती-खर्वरी-लङ्केश्वरी-द्रुमछा(च्छा)याः । रक्तपद्मावलीपरिवृत[6] रक्ताष्टारद्वितीयवाक्चक्रस्य पूर्वोत्तरारयोः कामरूपौड्रक्षेत्रयोरैरावती महाभैरवा[7], पश्चिमदक्षिणयोस्त्रिशकुनि-कोशलोपक्षेत्रात्मना(नो)र्वायुवेगा सुराभक्षौः(क्षी) । आग्नेयनैर्ऋत्ययोः कलिङ्ग-लम्पाकछन्दोहयोः श्यामादेवी सुभद्रा । वायव्यैशानयोः काञ्चीहिमालयोपछन्दोहयोर्हयकर्णा खगानना । शुक्लचक्रा[8]वलीपरिवेष्टितशुक्लाष्टारतृतीयकायचक्रस्य पूर्वोत्तरारयोः प्रेतपुरीगृहदेवतामेलापकयोश्चक्रवेगा खण्डरोहा । पश्चिमदक्षिणयोः सौराष्ट्रसुवर्णद्वीपोपमेलापकयोः शौण्डिनीचक्रवर्मिण्यौ । आग्नेयनैर्ऋत्ययोर्नगरसिन्धु[9]श्मशानयो[10]र्मरुकुलूतयो[11]रुपश्मशानयोश्चक्रवर्तिनी महावीर्या । एताश्च प्रचण्डादिदेव्य [12]एकवक्त्रा द्विभुजाः, वामेन रक्तपूर्णकपालं दक्षिणे दुष्टतर्जनकर्तिकां[13] बिभर्त्यः । अपरं वेशाभरणादिकं डाकिन्यादिवदासाम् । द्वारे काकास्या-उलूकास्या-श्वानास्या-शूकरास्या डाकिन्यादिवत् । मुखानि[14] परमासां नामानुगतानि । कोणेषु यमदाढी-यमदूती-यमदंष्ट्रिणी-यममथन्यो मानुषीमुखाः सव्येतरदिग्देव्यः सव्येतरकायार्धसदृशशरीरार्धाः[15] । शवासनास्व(स्त्व)[16]ष्टावपीमाः । परिशिष्टवेशादिकं डाकिन्या[दि]वदेव । सर्वाश्च ता देव्यो भगवतीनिष्पत्तिसमकालमेव झटिति निष्पन्ना द्रष्टव्याः ।

---

1. 'परि' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 2. भांजन–क. घ. । 3. दक्षिणेषु–क., णासु–ख. ग. घ., गृ. भो. । 4. मती–क. ख. । 5. लवोपपीठात्मकेषु–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 6. वृत्ता–क. । 7. भैरवो–क. ख. घ. । 8. वज्रा–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 9. सिंदुर–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 10. मेरुकुलत–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 11. 'उप' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 12. 'एकवक्त्रा' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 13. काभर्त्यः- क. ख. । 14. मुखादि–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 15. रार्धः–क. ख. । 16. स्ताव–ग. घ. ।

ततः कवचद्वयं कृत्वा ज्ञानचक्र[1]विभावनमिति लूयीपादोक्तरक्षाकवचं कुर्यात्। भ्रूँ हूँ खँ अः[2] हाँ ह[3]कारैरायतनानि संशोध्य वाराही-यामिनी-मोहनी-सञ्चारिनी(णी)-संत्राशि(सि)नी-चण्डिकानां षष्ठ(ड्)देवीनां मन्त्रैः स्वस्व-देवता[4]वन्नैरात्म्येन [5]कवचयेत्। ॐ वं नाभौ। [6]हां यां हृदि। [7]ह्रीं मों वक्त्रे। [8]ह्रें ह्रीं मूर्ध्नि। हूँ हूँ शिखायाम्। फट् फट् सर्वाङ्गेष्वस्त्रे। अथवा मन्त्रदेवतयोर[9]भेदात् तत्तन्मनसि निष्पन्नास्तेषु तेषु[10] स्थानेषु त[त्त]द्देवता एव भाव्याः। तत्र वाराही रक्तनीलहरितमुखी वामे कपालखट्वाङ्गपाश(शान्), दक्षिणेऽङ्कुशब्रह्ममुण्डकर्ति(र्तीः) बिभ्राणा। यामिनी-मोहनी-सञ्चारिणी-संत्राशि-(सि)नी-चण्डिका नीलसितपीतहरितधूम्र[11]वर्णाश्चतुर्भुजाः सकपालखट्वाङ्गघण्टाश्च वामे, दक्षिणे डमरुकर्तिका दधानाः। सर्वाश्च मुक्तकेश्यो नग्नास्त्रिनेत्रा आलीढासनस्था द्रष्टव्याः। तदनु ललाटकण्ठहृदयेषु ॐ आः [12]हुँ इत्यक्षराणि शुक्लरक्त-नीला[नि] निवेशयेत्। ततो हृन्मध्यवर्तिरक्ताष्ट[13]दलपद्मस्थितभानुमण्डलोपरि रक्तवज्रवरटकान्तर्गतरविस्थं वंबीजरश्मिर्दशदिग्वर्ति सर्व[14]वीरवीरेश्वरी[15]परिणत-रूपं ज्ञानचक्रं जःकारेणाकृष्य [16]तन्निर्गतवीणादिषोडशदेवीभिरर्घादिपुरःसरं पूज-यित्वा फेंकार[17]पाठपूर्वकं [18]जालामुद्रां बद्ध्वा ललाटे वामावर्तेन भ्रामयेत्। [19]हुँकारेण [20]स्वसमयचक्रे जले जलमिव प्रवेश्य वंकारेण बन्धयित्वा होःकारेण संतोष्य ॐ योगशुद्धाः सर्वधर्मा योगशुद्धोऽहमिति पठेत्। ज्ञानचक्रा[21]कर्षण-[22]समकालमेवाकृष्टाभिर्वज्रविलासिनीभिर्ज्ञानामृतपूर्णकपालडमरुधारिणीभिर्हृद्बीजनि-र्गतवीणादिदेवीपूजिताभिः—

---

1. भावनं–भो.। 2-3. आँ–हाँ–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 4. वर्णवन्नै–भो.। 5. भाव-येत्–क.। 6. हँ यों–भो.। 7. ह्लि–भो.। 8. ह्लें हिं–भो.। 9. 'अभेदात्''''मनसि' नास्ति–भो.। 10. 'तेषु' नास्ति–घ.। 11. धूम्रधूसरवर्णा–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 12. हूँ–भो.। 13. मण्डल–क. ख.। 14. 'वीर' नास्ति–भो.। 15. संहरत्–भो.। 16. 'तन्निर्गत' नास्ति–भो.। 17. फेंकारनादत–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 18. ज्वाला–क.। 19. हूँ–भो.। 20. 'स्व' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 21. 'आकर्षण' नास्ति–भो.। 22. समय–घ.।

यथा हि जातमात्रेण स्नापिताः सर्वतथागताः ।
तथाहं स्नापयिष्यामि शुद्धं दिव्येन वारिणा ॥

इति पठन्तीभिरीषदावर्जितवामकरकपालोद्भूत[1]ज्ञानामृतधाराभिरभिषिच्यमानमहासुखात्मानं विचिन्त्य[2] शेषाम्बुनिष्पन्नान् तथागतान् शिरसि विभाव्य ॐ सर्वतथागताभिषेकतः[3] समयश्रिये हूँ इत्यधितिष्ठेत् । तत्र भगवत्याः कुलेशः शिरसि वैरोचनः, डाकिन्यादीनां रत्नसंभवः, चित्तवाक्काय[4]चक्रगतानां यथासंख्यमक्षोभ्यामिताभशाश्वताः, समयचक्रस्थानाममोघसिद्धिः । पश्चादमृतास्वादनं कुर्यात् । यंकारेण वायुमण्डलं तदुपरि रंकारजाग्निमण्डलं[5]तत्र शुक्ल-आःकारजं शुक्लपद्मभाजनं मुण्डत्रयकृतचू[6]लिकावस्थितस्तत्र ॐ[7]त्रं अं खं हूँ लां मां पां तां[8]कारज[9]तदधिष्ठितपञ्चामृतपञ्चप्रदीपां(पान्) निष्पाद्य वायुप्रेरितज्वलिताग्नितापविलीनबीजाक्षरादिकमभिनवभानुवर्णद्रवरूपमवलोक्य तदुपरि वितस्तिमात्रमतिक्रम्य शुक्लहूंभवाधोमुखामृतमये शुक्लखट्वाङ्गं दृष्ट्वा तस्मिन्नपि तद्वाष्पस्पर्शात् तत्राविलीय पतितेन तद् द्रव पारदवर्णं शीतलं विचिन्त्य पुनस्तदुपरि [10]त्र्यक्षरमुपर्युपरि दृष्ट्वा तद्रश्मिभिस्त्रैलोक्योदरवर्तिसर्वामृतेन सार्धमशेषतथागतहृदयवर्तिज्ञानामृतमाकृष्य तत्रैवान्तर्भाव्य क्रमश[11]स्त्र्यक्षरेणापि विलीनैः पुनस्त्र्यक्षरेणाधिष्ठायात्मानं माण्डलेयं देवीनां च जिह्वायां शुक्लहूंकारजयवफलप्रमाणं शुक्लवज्रं ध्यात्वा तद्रश्मिनलिकाभिः प्राशनां कुर्यात् । ततो वक्ष्यमाणाष्टपदार्चनमन्त्रैः स्तूयात् । यद्येतावति महति मण्डलचक्रचित्तं[12] चिरतरं स्थिरीकर्तुमसमर्थः, तदा नाभिकमलस्थरविसोमसम्पुटान्तर्गत[13]वंबीजमृणा[14]लोद्भूतरश्मिरेखायां

---

1. नियत-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 2. विचिन्त्ये-ख. ग. घ. । 3. कसमश्रिये-क.ख. ग. घ., गृ. भो. । 4. 'चक्र' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 5. तदुपरि-भो. । 6. लिकायामवस्थित-क. ख । 7. त्राँ आँ-क.ख. ग. घ., आ-घ, गृ. भो. । 8. 'वाँ' इत्यधिकः पाठः-भो. । 9 जात-क. ख. । 10-11. अक्षर-क. । 12. 'चित्तं' नास्ति-भो. । 13. खं.-भो. । 14. लतत्त्वाकार-क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।

चित्तस्थिरीकरणद्वारेण प्राणापानयोर्नाडीद्वयवाहपरि[1]हारान्मध्यमाप्रवेशे ज्वलितयोश्चाण्डाल्या द्रावितस्य शिरः शशि[2]चक्रव्यातिक्रमेणानन्दादिभेदात् सहजोदये सकलविकल्पसंहारात् सकृद्वा मण्डलचक्रस्यानुपलम्भः, क्रमेण वा शून्यतान्तर्भावः ।

तत्रायं क्रमः—जगत् श्मशानेषु, श्मशानानि[3] बाह्यचक्रे, बाह्यचक्रं कायचक्रे, कायचक्रं वाक्चक्रे, वाक्चक्रं चित्तचक्रे, चित्तचक्रस्य दिग्गता डाकिन्यादिषु, [4]विदिग्गता रूपिण्यादिषु, डाकिन्यादयश्च महासुखचक्रगता भगवतीमुखे,[5] भगवत्यासनाम्भोजं भानौ, भानुं भैरवे, भैरवं कालरात्र्याम्, कालरात्रिं खट्वाङ्गे, खट्वाङ्गं भगवत्याम्, भगवतीं नाभिकमले, नाभिकमलं रविसोमसंपुटे, रविसोमसंपुटं [6]वंकारे, वंकारम् अर्द्धचन्द्रे, अर्द्धचन्द्रं बिन्दौ, बिन्दुं नादेऽन्तर्भाव्य नादमपि वालाग्रशतसहस्रभागरूपं पश्येत् । अधिमात्रं[7] तु तमपि नोपलभ्य(भ)ते । [8]एवं ज्ञानचक्रस्वभावतयापि भगवत्याः प्रभास्वरे प्रवेशः । एवं भूयो भूयः प्रविशेदुत्तिष्ठेत् । तदुक्तम्—

श्वासवातो यथाऽऽदर्शे लयं गच्छति सर्वतः ।
भूतकोटिं तथा योगी प्रविशेच्च मुहुर्मुहुः ।।

पुनः पुनः प्रवेशनैश्च सत्यद्वयाभिन्ननिष्पन्नं[9] युगनद्धसमाधिं[10] योगी साक्षात् करोतीति । खेदे सति नाभिसरोजस्थ[11]वंबीजे चित्तं निवेश्य वक्ष्यमाणहृदयोपहृदय[12]योर्यथाभिलाषमन्यतरस्योच्चारणसमयमेव तद्बीजनादान्निर्गत[13]वायुना [14]सह पञ्चचक्राणि संस्फार्य जगदर्थं कारयित्वा वायोः प्रवेशसमये मालासूता(सूत्रा)-कर्षण[15]न्यायेन मन्त्रेण सह तस्मिन्नेव प्रवेशयेत् । वक्ष्यमाणप्रत्येक[16]देवीमन्त्रजापार्थिनां

---

1. हरान्–क. । 2. शशिशनि–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 3. 'बाह्यप्रासादे, प्रासादं समयचक्रे' इत्यधिकः पाठः–भो. । 4. 'विदिग्गता रूपिण्यादिषु' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 5. आसने–भो. । 6. वकारे वकारं–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 7. मात्रस्तु–ग. घ. । 8. 'एवं' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो । 9. 'निष्पन्नं' नास्ति–भो., पन्न–क. । 10. समाधि–क. । 11. वम–ख. । 12. यमन्त्रयो–सार्व., गृ. भो. । 13. निर्गम–क. ख. ग. । 14. 'सह' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 15. मुत्पाद्येत–क. । 16. देवता–सार्व. गृ. भो. ।

तु प्रत्येक[1]देवीमन्त्रोच्चारणसमाप्तौ प्रत्येकस्फरणसंहरणं पूर्ववत् कर्तव्यम् । अथवा तत एव पूर्ववदुत्तिष्ठन्तीमवधूतीवर्त्मना मुखान्निःसृत्य पद्मे स्वस्थानं गत्वा तथैव भ्रमन्तीमक्षरमालां भावयेत्[2], हृदयोपहृदययोरन्यतरं वक्ष्यमाणमालामन्त्रं वा जपेत् । अथवा तदेव बीजं परिवेष्टितां दीपमालामिव मन्त्रमालामालोकयन् अद्रुतमविलम्बितमसत्संकल्पवर्जितमिति [3]जापयेत् ।

ॐ वज्रवैरोचनीये हुं हूँ फट् स्वाहा । भगवत्या हृदयमन्त्रः । ॐ वज्रवैरोचनीये स्वाहा । इत्ययमपि हृदयमन्त्रः । ॐ[4] सर्वबुद्धडाकिनीये वज्रवर्णनीये [5]हुं हूं फट् स्वाहा । उपहृदयमन्त्रः । महाप्रभावा एते मन्त्राः । ॐ नमो भगवति[6] वज्रवाराहि वँ हुं हूं फट् । ॐ नमः आर्यापराजिते त्रैलोक्यमाते महाविद्येश्वरि हुं हूं फट् । ॐ नमः सर्वभूतभयावहे महावज्रे[7] हुं हूं फट् । ॐ नमो वज्रासने अजितेऽपराजिते वश्यंकरि नेत्र[8]भ्रामणी हुं[9] हूं फट् । ॐ नमः शोषणि रोषणि[10] क्रोधकराले[11] हुं हूं फट् । ॐ नमः सन्त्रासनि[12] मारणि प्रभेदनि [13]अपराजये हुँ हूँ फट् । ॐ नमो जये विजये जम्भनि स्तम्भनि मोहनि [14]हुँ हूँ फट् । ॐ नमो वज्रवाराहि महायोगेश्वरि खगे [15]हुँ हूँ फट् । अयं भगवत्या अष्टपद[16]पूजामन्त्रः ।

अथ च मालामन्त्रो भवति—ॐ वज्रवाराहि प्रोतङ्गे प्रोतङ्गे हन [17]हन प्राणान् किंकिनि खिंखिनि धुन धुन वज्रहस्ते शोषय शोषय [18]वज्रखट्वाङ्गकपालधारिणि महापिशितमांसाशिनि मानु[19]षान्त्रप्रावृते सान्निध्ये नरशिरोमालाग्रथित-

---

1. नास्ति–भो. । 2. यन्–ग. भो. । 3. 'जापयेत्' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 4. ॐ ॐ ॐ–क. ख. । 5. 'हुँ हूँ फट्' नास्ति–क. ख. ग घ., गृ. भो. । 6. वते–ख. । 7. वज्र–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 8. भ्रमणि–क. ख. ग. घ., गृ भो. । 9 'हूँ' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 10. 'विषणि' इत्यधिकः पाठः–भो. । 11. लिनि हुँ–भो. । 12. त्रासनी–भो. । 13. पराजये–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 14-15. हूँ–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 16. 'पूजा' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 17. 'हन' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 18. 'वज्र' नास्ति क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 19. षातु–ख. ग. घ., षानु–क. ।

धारिणि सुम्भनिसुम्भे हन हन प्राणान् सर्वपापं सत्त्वानां सर्वपशूनां [1]महामांसच्छेदनि क्रोधमूर्ते[2] दंष्ट्राकरालिनि महामुद्रे श्रीहेरुकदेवस्याग्रमहिषि सहस्रशिरे सहस्रबाहवे शतसहस्राननने ज्वलिततेजसे ज्वालामुखि पिङ्गललोचने वज्रशरीरे वज्रासने मिलि मिलि तिमिलि तिमिलि हे हे ह ह हुँ हूँ ख ख धु धु रु रु [3]धुरु धुरु [4]मुरु मुरु [5]अद्वैतमहायोगिनि पठितसिद्धे [6]द्रैं धं द्रैं धं [7]ग्रं हे हे ह ह भीमे हस [8]हस वीरे हा हा हो हो हुँ हूँ त्रैलोक्यविनाशनि[9] शतसहस्रकोटितथागतपरिवारे हुँ हूँ फट् सिंहरूपे खः गजरूपे गः त्रैलोक्योदरे[10] महासमुद्रमेखले ग्रस ग्रस हुँ हूँ फट् वीराद्वैते [11]हुँ हूँ हा हा महापशुमोहनि [12]योगेश्वरि त्वं डाकिनी लोकानां वन्दनी सद्यः प्रत्ययकारिणी हूँ हूँ [13]फट् भूतत्रासनि महावीरे परमसिद्धे योगेश्वरि[14] फट् हुँ हूँ फट् स्वाहा ।

महाप्रभावोऽयं मन्त्रः पठितसिद्धिः । सोमग्रहे[15] चन्द्रमसं पश्यन् तावज्जपेद् यावच्चन्द्रो मुक्तो भवति । पश्चाद्यावदावर्तयति तावत्[16] स्त्रीसहस्रैरनुगम्यते । भावनापुरस्सरं सकृदुच्चारणादाकर्षयति मारयति क्रूरचेतसामुच्चाटन-विद्वेषस्तम्भनं च कुरुते । [17]श्मशानाङ्गारं सकृज्जप्तं गृहे ग्रामे नगरे वा क्षिपेत्, दाहं दर्शयति । मयूरपिच्छकमाकाशे भ्रामयेत्, पुनरुपशमयति । [18]इत्यादि बहुप्रकारमस्य सामर्थ्यमन्यत्रोक्तम् ।

---

1. 'महा' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 2. मूर्ति–भो. । 3. 'धुरु धुरु' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 4. सुरु सुरु–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 5. अद्वैते–क. भो. । 6. द्रँ व्रँ द्रँ प्रँ–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 7. गुं–क. । 8. 'हस' नास्ति–घ. । 9. 'शनि' नास्ति–भो. । 10. उदरि–भो. । 11. हुँ हुँ-ख. । 12. यामेश्वरी–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 13. 'फट्' नास्ति–ग. घ. । 14. योगीश्वरि-भो. । 15. 'सूर्यग्रहे वा' इत्यधिकम्-भो. । 16. तावतस्तु–ग. । 17. 'पुष्पं सकृज्जप्तमाकाशे क्षिपेत्, ब्रह्मादि अन्यान् दर्शयितुं समर्थम्' इत्यधिकः पाठः–भो. । 18. 'कर्परं सकृज्जप्तं चतुरङ्गसेनावर्गं दर्शयति । मयूरपिच्छं परावृत्तं भ्रामयेत्, (तदा) अन्तर्धानं भविष्यति' इत्यधिकः पाठः-भो. ।

ॐ डाकिनीये[1] हुँ हूँ[2] फट्, डाकिन्याः। ॐ लामे हुँ हूँ फट्, लामायाः। ॐ खण्डरोहे हुँ हूँ फट्, खण्डरोहायाः। सार्वकर्मिकोऽयं मन्त्रः। ॐ रूपिणीये [3]हुँ हूँ फट्, रूपिण्याः। अथ प्रचण्डादीनां मन्त्रा भवन्ति। ॐ प्रचण्डे हुँ हूँ फट्। [4]ॐ चण्डाक्षीये[5] हुँ हूँ फट्। ॐ प्रभा[6]वतीये हुँ हूँ फट्। ॐ महानासे हुँ हूँ फट्। [7]ॐ वीरमतीये हुँ हूँ फट्। ॐ खर्वरीये हुँ हूँ फट्। ॐ लङ्केश्वरीये हुँ हूँ फट्। ॐ द्रुमच्छाये हुँ हूँ फट्। ॐ ऐरावतीये हुँ हूँ फट्। ॐ महाभैरवीये हुँ हूँ फट्। ॐ वायुवेगे हुँ हूँ फट्। ॐ सुराभक्षीये हुँ हूँ फट्। ॐ श्यामादेवीये हुँ हूँ फट्। ॐ सुभद्रे हुँ हूँ फट्। ॐ हयकर्णे हुँ हूँ फट्। ॐ खगानने हुँ हूँ फट्। ॐ चक्रवेगे हुँ हूँ फट्। ॐ खण्डरोहे हुँ हूँ फट्। ॐ शौण्डिनीये हुँ हूँ फट्। ॐ चक्रवर्मणीये हुँ हूँ फट्। ॐ सुवीरे हुँ हूँ फट्। ॐ महाबले हुँ हूँ फट्। ॐ चक्रवर्तिनीये हुँ हूँ फट्। ॐ महावीर्ये हुँ हूँ फट्। ॐ काकास्ये हुँ हूँ फट्। ॐ उलूकास्ये हुँ हूँ फट्। ॐ श्वानास्ये हुँ हूँ फट्। ॐ शूकरास्ये हुँ हूँ फट्। ॐ यमडादी(ढी)ये हुँ हूँ फट्। ॐ यमदूतीये हुँ हूँ फट्। ॐ यमदंष्ट्रिणीये[8] हुँ हूँ फट्। ॐ यममथनीये हुँ हूँ फट्। एवं तावल्लूयीपादाभिसमयक्रमेण।

विस्तरतः सप्तत्रिंशदात्मकं [9]देवीभगवत्या [10]मण्डलचक्रं तत्रैव मण्डलभेदानन्तरं **वज्रावल्यामस्मद्गुरुभिरुपदर्शितं** लिख्यते। नायिकादयः सर्वा द्विभुजाः, [11]डाकिन्य[12]श्चतुर्भुजाश्चतस्रः। काकास्यादयश्च वामेन कपालं बाह्वासक्तखट्वाङ्गं च बिभ्राणाः, सव्येन डमरुकम्। अपरं सर्वं पूर्ववत्। अथवा भगवती पीतवर्णा नीला वा, डाकिन्यादयश्चतस्रस्तु पीताः। सव्येन डमरुभृत्(तः)। चित्तचक्रस्य योगिन्यः सिताः सवज्रतर्जनीकसव्येतरकराः[13]। वाक्चक्रस्य कृष्णाः [14]सपद्मतर्जनीकसव्य-

---

1. न्ये–क.। 2. 'हूँ' नास्ति–क.। 3. इतः परं 'हूँ हूँ' इति सर्वत्र दीर्घः पाठः, गृ. भो। 4. 'ॐ चण्ड''''वतीये हुँ हूँ फट्' नास्ति–भो.। 5. लीये–क.। 6. मतीये–ख.। 7. 'ॐ' नास्ति–ख. ग. घ.। 8. ष्ट्रीये–ख.। 9. 'देवी' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 10. मण्डलं–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 11. 'डाकि''''तस्रः' नास्ति–भो.। 12. न्यादयश्च–ख. ग. घ.। 13. येन करा–ग. घ.। 14. सवज्र–भो.।

हस्तोः(स्ताः) । कायचक्रस्य रक्ताः सव्येन तर्जनीकचक्रभृतः[1] । काकास्यादयः सव्येन सतर्जनीककर्तिधराः । सर्वा देव्यो वामहस्तेन कपालधारिणः(ण्यः) । यमदाढ्यादयः सव्येन डमरुं वामेन तर्जनीक[2]नरमुण्डं बिभ्रत्यः । डाकिन्यादीनां [3]काकास्यादीनां च वामबाहौ खट्वाङ्गम् । एताश्च द्वादशार्धपर्यङ्केन नृत्यन्त्यः । अपरं सर्वं पूर्ववत् । देवताऽहङ्कार[4]त्यागाय सर्वज्ञतालाभाय दर्शनाय च डाकिन्यादयः सप्तत्रिंशद्बोधिपाक्षिकधर्मस्वभावा वेदितव्याः ।

तत्र रूपस्कन्धपरिज्ञानप्रारम्भलक्षणकायानुस्मृत्युपस्थानं डाकिनी । वेदनास्कन्धपरिज्ञानप्रारम्भलक्षणवेदनानुस्मृत्युपस्थानं लामा । [5]संज्ञासंस्कारस्कन्धमायारूपत्वाच्च धारणलक्षणधर्मानुस्मृत्युपस्थानं खण्डरोहा । विज्ञानस्कन्ध[6]स्वरूप[7]प्रविभेदलक्षण[8]विशुद्ध्या चित्तानुस्मृत्युपस्थानं रूपिणी । धर्मश्रवणाभिलाषात्यन्तादरलक्षण-छन्दऋद्धिपादः प्रचण्डा । [9]वीर्यानवरताभ्यासा वीर्य[10]ऋद्धिपादश्चण्डाक्षी । अत्यन्तविचारणा मीमांसा-ऋद्धिपादः प्रभावती । बोधिसाक्षा[11]त्करणाशयातिशयश्चित्त-ऋद्धिपादो महानासा । सत्यरत्नत्रयकर्मफलाभि[12]संप्रत्यय[13]स्तत्त्वावधारणैश्वर्यादि श्रद्धेन्द्रियं वीरमती । अवश्यकर्तव्यतावधारणं वीर्येन्द्रियं खर्वरी । अविद्याप्रतिप[14]क्षामुषितस्मरणाधिपत्यस्मृतीन्द्रियं लङ्केश्वरी । चित्ताग्रतैश्वर्यात् समाधीन्द्रियं द्रुमच्छाया । हेयोपादेयो(या)वधारणैश्वर्यात्[15] प्रज्ञेन्द्रियमैरावती ।

श्रद्धादीन्द्रियाण्येव प्रकर्षपर्यन्त[16]गमनाद्बलानि । श्रद्धाबलं महाभैरवा[17] । वीर्यबलं वायुवेगा । स्मृतिबलं सुराभक्षी । समाधिबलं श्यामादेवी । प्रज्ञाबलं सुभद्रा ।

---

1. भृत्–ख. । 2. 'नर' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 3. 'काकास्यादीनां' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 4. रयोगा–घ. । 5. 'संज्ञा' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 6. 'स्वरूप' नास्ति–भो. । 7. प्रीतिवेद–क. ख. घ. घ., गृ. भो. । ८. 'विशुद्ध्या' नास्ति–भो. । 9. वीर्यो–क., वीर्यानवरैता–ख. ग. घ. । 10. 'ऋद्धि''''मीमांसा' नास्ति–क. । 11. कारणा–क. । 12. भिससंप्रत्ययः–ख. ग. घ. । 13. श्रद्धादितत्यव–क., श्रद्धातदित्यव–ख. ग. घ., गृ. भो. । 14. त्यवेक्षा–क. ख. ग. । 15. यत्–क. । 16-शमनोवज्वलानि–ख. ग. घ., शनोज्वलानि–क., गृ. भो. । 17. भैरव-ग. घ. ।

समाधिरेव संबोधेः कारणम् । समाधिसंबोध्यङ्गं हयकर्णा । कौशीद्यानवकाशो[1] वीर्यसंबोध्यङ्गं खगानना । कुशले[2]ष्वोत्सहः(षूत्साहः) प्रीतिसंबोध्यङ्गं चक्रवेगा । कुशलकर्मणि कर्मण्यता[3] प्रस्रब्धिसंबोध्यङ्गं खण्डरोहा । नैरात्म्यस्वरूपेणावधारणा धर्मप्रविचयसंबोध्यङ्गं शौण्डिनी । अविस्मरणशीलता स्मृतिसंबोध्यङ्गं चक्रवर्मिणी । [4]समाधावमनसिकारोपेक्षासंबोध्यङ्गं सुवीरा । अविपरीतार्थप्रतिपत्तिः सम्यग्दृष्टिर्महाबला । [5]आरब्धसत्कृत्यापरित्यागः सम्यक्संकल्पश्चक्रवर्तिनी । सत्त्वा[6]विसंवादनवचनं[7] सम्यग्वाग् महावीर्या । दशकुशलानतिक्रमात् कृत्यं सम्यक्कर्मान्तः काकास्या । सत्त्व[ा]विहेठनायाजीवनं[8] सम्यगाजीव उलूकास्या । कुशला[9]र्थघटनं सम्यग्व्यायामः श्वानास्या । बुद्धवचनानुस्मरणं[10] सम्यक्स्मृतिः शूकरास्या । सम्यक्समाधिर्भगवती वज्रवाराही । अनुत्पन्नानां कुशलानां धर्माणामुत्पादनं यमडा(दा)ढी । [11]उत्पन्नानां [12]कुशलानां धर्माणां संरक्षणं यमदूती । उत्पन्नानामकुशलानां धर्माणां प्रहाणं यमदंष्ट्रिणी । अनुत्पन्नानामकुशलानां धर्माणा[13]मनुत्पादनात् [14]सम्यक्प्रहाणं यममथनी चेति ।

प्रमुदिता-विमला-प्रभाकरी-अर्चिष्मती-अभिमुखी-सुदुर्जया-दूरङ्गमा-अचला-साधुमती-धर्ममेघाख्यदशभूमिविशुद्ध्या क्रमेण पीठोपपीठादिरूपं कायमण्डलमध्यात्मयोगिना भावयितव्यम् । तदुक्तम्—

चतुर्विंशतिभेदेन पीठाद्यत्र व्यवस्थितम् ।
अतस्तद्भ्रमणे नैव खेदः कार्यो न(नु) तात्त्विकैः ॥
क्षीयन्ते धातवस्तेषां भ्रमणाद् बाह्ययोगिनाम् ।
अतो बाह्यं निराकृत्य स्थातव्यं योगिनीनये ॥ इति ।

---

1. काश–क. । 2. लेष्वासहः–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 3. ण्यतो - क. ख. । 4. समावधावताभोगतो-क. ख., नाभोगतो–ग. घ., गृ. भो. । 5. आप्रस–क. । 6. सत्त्वादि– घ. । 7. 'वचनं' नास्ति–भो. । 8. जीवत–क. । 9. लादशार्थ–ग. घ. । 10. स्मरण–ख. ग. घ. । 11. अनुत्प–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 12. 'कुशलानां' नास्ति-भो. । 13. णामुत्पा–क. ख. ग. घ , गृ. भो. । 14. 'सम्यक् प्रहाणं' नास्ति–क. ख ग. घ., गृ. भो. ।

तत्र [1]पुं जां ओं अं गों रां दें मां कां ओं त्रि कौं कं लं कां हिं प्रें गृं सौं सुं नं सिं मं कुं । पुल्लीरमलयशिरसि प्रचण्डा । जालन्धरशिखायां[2] चण्डाक्षी । ओडियानदक्षिणकर्णे[3] प्रभावती । अर्बुदमस्तकपृष्ठे महानासा । पीठम् । गोदावरी-वामकर्णे वीरमती । रामेश्वरभ्रूमध्य(ध्ये) खर्वरी । देवीकोटचक्षुषोर्लङ्केश्वरी । मालवस्कन्धद्वये द्रुमच्छाया । उपपीठम् । चित्तचक्रस्य खेचरी । अनया स्वर्गगतानां संग्रहः ।

कामरूपकक्षयोरैरावती । [4]ओड्रस्तनयुगले महाभैरवा । क्षेत्रम् । त्रिशकुनि-नाभौ वायुवेगा । कौशलनासाग्रे सुराभक्षी । उपक्षेत्रम् । कलिङ्गमुखे श्यामादेवी । लम्पाक(क)कण्ठे सुभद्रा । छन्दोहः । काञ्चीहृदये हयकर्णा । हिमालयमेढ्रे खगानना । उपच्छन्दोहः । वाक्[5]चक्रे [6]भूचरी । अनया मर्त्यानां संग्रहः ।

प्रेतपुरीलिङ्गे चक्रवेगा । गृहदेवतागुडे(दे) खण्डरोहा । मेलापकम् । सौराष्ट्र-ऊरुद्वये शौण्डिनी । सुवर्णद्वीपजङ्घायां चक्रवर्मिणी । उपमेलापकम् । नगर-अङ्गुलीषु सुवीरा । सिन्धु-पादपृष्ठयोर्महाबला । श्मशानम् । मरु-अङ्गुष्ठयोश्चक्र-वर्तिनी । कुलतायां जानुद्वये महावीर्या । उपश्मशानम् । कायचक्रे पातालवासिनी । [7]अनया पातालगतानां संग्रहः ।

अत्रायमुपदेशः—पुं जां इत्यादि सर्वं [8]सानुस्वारं निरूप्यताम् । पुंकाराद्य-क्षरपरिगता[9]न्यरशून्यताचक्राकाराणि पीठादिस्थानानि शिरःप्रभृतिषु झटिति द्रष्टव्यानि । तेषु पीठादिषु तत्तत्स्थानगता [10]नाड्यस्त[11]त्तद्देवतारूपेण परिणमय्य व्यवस्थिता भाव्याः । यथा बाह्य[12]वृक्षादि समीपस्था नद्य[13]स्तोयेन पोषणं

1. अत्रानुस्वाररहितः पाठः–भो. । 2. खाया–घ. । 3. कर्ण–घ. । 4. उड्र–क. । 5. चक्र–क. । 6. खेचरी–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 7. 'अनया''''तानां' नास्ति–भो. । 8. सानुसारं–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 9. अपि शून्य–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 10. नाद्यस्तु–क. ख ग. घ., गृ. भो. । 11. 'तद्' नास्ति–क. । 12. पीठादि–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 13. स्रोतोयोनि–क. ।

कुर्वन्ति, तद्वद्देहेऽपि नाड्यो नखादीनां पोषणं कुर्वन्तीति समानता। बाह्ये वज्रपीठं महाबोधिसंज्ञकं[1] स्थानं नैरञ्जना च नदी। देहे महासुखचक्रं वज्रपीठमवधूती निरञ्जना। वक्त्रवामदक्षिणनासापुटं गुदद्वारेषु क्रमेण काकास्यादयो द्वारपाल्यः। सव्यापसव्यश्रोत(त्र)[2]सव्यापसव्यनेत्रेषु यमदाढ्यादयः। हृल्ललाटकण्ठनाभिकर्णिकासु[3] डाकिन्यादयश्चतस्रः। इति सम्पूर्णं कायमण्डलं मुहुर्मुहुर्दृढमधिमोक्तव्यम्।[4]

ततो बलिं दद्यात्। भोज्यादिकं पुरतः संस्थाप्य प्रागुक्तक्रमेण विशोध्य जालामुद्रातन्मात्राभ्यामानीतं सर्वाकारनिष्पन्नं मण्डल[5]चक्रं पुरतोऽवस्थाप्यार्घादिकपुरःसरं संपूज्यालिकालिपरिणतचन्द्रसूर्य[6]मण्डलस्वभावकरद्वयान्तरगत[7]हूँकारं दृष्ट्वा ॐ अन्योन्यानुगताः सर्वधर्माः [8]स्फर स्फर अनुप्रविष्ट(ष्टाः) सर्वधर्मा अत्यन्तानुप्रविष्टाः सर्वधर्मा हूं इत्युच्चारणपूर्वकं चन्द्रसूर्यारूढहूँकारपरिणामेन वज्राञ्जलिकृतकरतले तदमृतभाण्डमवस्थाप्य ध्यात्वा वा अभिमतसिद्ध्यर्थमिति पठेत्—

देव्यः प्रमाणं समयं प्रमाणं [9]तदुक्तवाचश्च परं प्रमाणम्।
एतेन सत्येन भवेयुरेता देव्यो ममानुग्रहहेतुभूताः॥

ततः पूज्यपूजकपूजादीनामभेदं पश्यन् तदमृतभाण्डं दिक्षु वामावर्तेन पूर्वां दिशमारभ्य, विदिक्षु अग्निकोणमारभ्य दक्षिणावर्तेन भ्रामयन्[10] हूँभवशुक्लवज्रजिह्वायातां नायिकां प्रतित्रिचक्रदेवतानां [11]स्वस्वमन्त्रैरेकवारोच्चारिते [12]भ्रामयन् ॐ अरलिल होः [13]जः हूँ वँ होः[14] वज्रडाकिन्यः समयस्त्वं

---

1. 'संज्ञकं' नास्ति–भो.। 2. 'सव्यापसव्य' नास्ति–भो.। 3. कायासु–क. ख.। 4. वक्तव्यं–क. ख.। 5. 'चक्रं' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 6. 'मण्डल' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 7. गतं–ग. घ.। 8. 'स्फर''''सर्वधर्माः' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 9. तदुक्त''''णम्' नास्ति–घ.। 10. भ्रामयेत्–क. ख.। 11. स्वभाव–क.। 12. भ्रामयेत्–क. ख.। 13. ज–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 14. हो–क. ख. ग. घ., गृ. भो.।

[1]दृश्य हो[2]–इत्यनेन एकद्वित्रिचतुःपञ्चवारोच्चारितेन ढौकयेत् । तत आचमन-हस्तप्रोक्षणताम्बूलादिकं दत्त्वा वीणादिभिः संपूज्य संस्तुत्य प्रार्थयेत्—

भवशमसमसङ्गा भग्नसंकल्पभङ्गी
खमिव सकलभावं भावतो वीक्षमाणाः ।
गुरुतरकरुणाम्भःस्फीतचित्ताम्बुनाथाः
कुरुत कुरुत देव्यो मय्यतीवानुकम्पाम् ॥

ततोऽष्टश्मशानस्थितदिक्पालानां पूर्ववद् भ्रामयन् ॐ ख ख खाहि खाहि सर्वयक्षराक्षसभूतप्रेतपिशाचोन्मादापस्मारडाकडाकिन्यादय इमं वलिं गृह्णन्तु समयं[3] रक्षन्तु मम सर्वसिद्धिं प्रयच्छन्तु [4]यथैवं यथेष्टं भुञ्जथ पिबथ जिघ्रथ अतिक्रमथ मम सर्वाकार[5]तया सत्सुखविवृद्धये सहायिका भवन्तु हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा–इत्यनेन वारद्वयोच्चारितेन ढौकयेत् । तदमृतभक्षणाद् दिक्पालादयो महासुखसमर्पितविग्रहा भाव्याः । तदनु समुदायेन ताम्बूलादिकं दत्त्वा [6]स्वहृद्बीज-निर्गतवीणादिभिः संपूज्या[7]ष्टपदमन्त्रेण संस्तुभ्या(त्या)भिमतसिद्धये प्रार्थ्य च्छोमोहस्तेन संछोभ्य न्यूनादिकविधिपूरणार्थं शताक्षरं [8]मन्त्रं घण्टावादनपूर्वकं पठेत् ।

ततः ॐ योगशुद्धाः सर्वधर्मा योगशुद्धोऽहमिति पठन् कमलावर्त[9]मुद्रया परितोष्य मुद्रोपसंहारेणालिङ्गनाभिनयपूर्वकं वामानामिकाङ्गुष्ठछोटिकादानपूर्वकं ॐ वज्र [10]मुरिति पठन् विसर्जयेत् । चक्रमात्मनि [11]सर्वाकारेण प्रवेशयेत् । ततः प्रणिधानं कृत्वा देवतारूपेण विहरेदिति ।

स्नानकालेऽभिषेकविधिं विदधीत, भोजनकाले तु मण्डलचक्रात्मकं [12]स्वदेहं झटिति विचिन्त्य यथाविधानं वलिं दत्त्वा [13]त्र्यक्षरेण वलिमधिष्ठाय ॐ ख

---

1. 'दृश्य' नास्ति–क. । 2. होः–क. ख. ग. घ, गृ. भो. । 3. समय–क. ख. ग. घ, गृ. भो. । 4. तथैव–क. । 5. कारज्ञतया-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 6. 'स्व' नास्ति–भो. । 7. 'अष्ट'.......'भ्या' नास्ति-भो. । 8. 'मन्त्रं' नास्ति–भो. । 9. वर्तन–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 10. मुरुति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 11. सर्वात्मना–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 12. 'स्व' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 13. अक्षरेण-क. ग. घ. ।

ख खाहि खाहीत्यादि मन्त्रेण एकवारोच्चारितेन दिक्पालेभ्यो दत्त्वा ज्वालनादिविधिना शोधयित्वा विधिवद्भक्ष्यादिकं सर्वधर्मतासमताहङ्कारपूर्वकम् ॐ समयशुद्धाः सर्वधर्माः समयशुद्धोऽहम् इति सर्वधर्मसमताहङ्कारेण [1]हूँकारनिष्पन्नां शुक्लवज्रमयीं जिह्वां विधाय ॐ अमृतोदक हूँ हूँ ठ[2] ठ त्रां आः [3]खँ हूँ इत्यनेनाधिष्ठाय [4]त्र्यक्षरेण नाभिस्थं वंकारं प्रीणयेदिति ।

मध्याह्नसन्ध्यायां तु ध्यानं(न)[5]गृहं प्रविश्य ॐ [6]आः हूँ, ॐ[7] सर्वयोगिनीनां[8] कायवाक्चित्तवज्रस्वभावात्मकोऽहम्, ॐ वज्रशुद्धाः सर्वधर्मा वज्रशुद्धोऽहमिति मन्त्रत्रयमुच्चारयन्[9] झटिति मण्डलचक्रमधिमुच्य पूर्ववत् सर्वं कृत्वा यथासुखं विहरेदिति ।

अर्धरात्रसन्ध्यायां मध्यान्त(ह्न)सन्ध्यावत् सर्वं कृत्वा सर्ववाग्व्यापारमालिकालिमयं बुद्ध्वा अकारादिक्षकारान्तं हुँ हूँ फट् [10]फटित्युच्चार्य प्रभास्वरमामुखीकृत्य निद्रायां च प्रभास्वरतामधिमुञ्चन् शयीत । सर्वासु सन्ध्यासु पर्यन्ते शताक्षरं जपेत् । पुनः प्रभातसन्ध्यायां प्रभास्वरोत्थितमण्डलचक्रमधिमुच्य पूर्वोक्तसर्वमनुतिष्ठेदिति ।

बाह्ये पूजाविधिरुच्यते । इह भगवतीं पूजयितुकामः प्रातरुत्थाय यथावसरं वा वज्रवैरोचनीयोगवान् मन्त्री शुचिप्रदेशे हस्तं दत्त्वा ॐ सुम्भनिसुम्भेत्यादिमन्त्रमुच्चार्य पञ्चामृतसुगन्धादिवटिकया अन्यतमा(म)द्रव्यमिश्रितगोमय[11]वटिकया चतुरस्रमण्डलमुपलिप्य तन्मध्ये हस्तं दत्त्वा पू(पु)जेत्यादिचतुर्विंशत्यक्षराणि पीठोपपीठादिदशनामानि च [12]तत्तद्भूम्यधिमोक्षपूर्वकमुच्चारयेत् । ततस्तत्र मण्डलके झटिति चतुर्महाभूतस्थसुमेरूपरि रक्तपद्मस्थसूर्यवंकारं दृष्ट्वा तद्रश्मिभिर्ज्ञानमण्डलमानीय तत्र प्रवेश्य तत्परिणतां भगवतीं सपरिवारां सर्वाकारनिष्पन्नां पश्येत् ।

---

1. ॐकार–क., हुं–ख. ग. घ., गृ. भो. । 2. पठ–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 3. खाँ–क । 4. अक्ष–घ. । 5. देहं–घ. । 6. आ–ग. । 7. 'ॐ' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 8. योगिनी–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 9. भावयेत्–क. । 10. 'फट्' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 11. वाटिकया–क. । 12. तद्भूम्ये–क. ।

ततः [1]स्वहृद्बीजनिर्गतवीणादिदेवीभिः संपूज्य सप्तरत्नादीनि च [2]तन्निर्गतादि(नि) ढौकयित्वा यथाविधि शोधितवामकरेण मण्डलमध्ये भगवत्यै त्र्यक्षरेण पुष्पं दद्यात्। पुनस्तत्रैव भगवतीहृदयोपहृदयमन्त्राभ्यां [3]ढौकयेत्। ततो डाकिन्यादीनां यममथनीपर्यन्तानां स्वस्वमन्त्रेण दिक्षु वामावर्तेन विदिक्षु दक्षिणावर्तेन यथास्थानं मण्डलके पुष्पं देयम्। ततो वक्ष्यमाणहस्तपूजाक्रमेण करविन्यस्तानां देवतानां च तत्तत्स्थानेषु [4]तत्तन्मन्त्रेण ॐ [5]हृ इत्यादिना पुष्पं दद्यात्। ततस्तद्वामकरगतपुष्पमष्टपदमन्त्रोच्चारणपूर्वकं मण्डलके प्रक्षिप्य शिरसाञ्ज[6]लिकरणपूर्वकं करतलगतं देवताचक्रमात्मनि प्रवेशयेत्। तदनु हृदयाद्यष्टपदमन्त्रस्तुतिपूर्वकं यथावर्तितस्तुतिभिः संस्तुत्य यथाशक्ति पापदेशनादिकं ध्यानमन्त्रजापप्रणिधानादिकं च विधाय शताक्षरमुच्चार्य ॐ योगशुद्धाः सर्वधर्मा योगशुद्धोऽहमिति मन्त्रसहितकमलावर्तमुद्रया संतोष्य मुद्रोपसंहारेणालिङ्गनाभिनय[7]पुरःसरं छोटिकादानसहितम्[8] ॐ वज्र[9]मुरिति पठन् विसर्ज्यं तच्चक्रमात्मनि प्रवेशयेत्। ततो मण्डले रेखां लुम्पेदिति [10]ज्ञातव्यम्।

हस्तपूजाविधिरुच्यते। तत्र गणमण्डलादौ श्रीवज्रवाराहीयोगवान् योगि(गी) वामकरे वृद्धातर्जनीमध्यमानामिकाकनिष्ठा[11]तन्नखमुखेषु वज्रसत्त्ववैरोचनामिताभाक्षोभ्यरत्नसम्भवामोघसिद्धिस्वरूपान् यथाक्रमं शुक्लपीतरक्तकृष्ण[12]हरितवर्णान् [13]ॐ हृ नमः हि स्वाहा हु वौषट् हे हुँ हूँ होः[14] फट्[15] हंकारं विन्यसेत्। करतले झटिति निष्पन्नारक्तपञ्चदलकमलं ध्यात्वा पूर्वादिदिग्दलेषु वामावर्तेन यथाक्रमं यामिनी-मोहिनी-सञ्चारनी(णी)-संत्रासनी-चण्डिकास्वरूपाणि नीलश्वेतपीतहरित-

---

1. 'स्व' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 2. निगतादि–क. ख.। 3. 'ढौकयेत्' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 4. 'तत्तत्' नास्ति–भो.। 5. हे–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 6. शिरस्य-ख. ग. घ.। 7 नये–क. ख. ग.। 8. सहित–क. ख., तां-ग.। 9. मुरुति–क. ख.। 10. 'ज्ञातव्यम्' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ भो.। 11. तत्र खमुखे–क. ख. ग. घ, गृ. भो.। 12. 'रक्त' इत्यधिकं–क.। 13. ॐ हृन महि स्वाहा हूँ वौषट् होः–क. ख., ॐ हः नमो हि स्वाहा हूँ वौषट् होः–ग. घ., गृ. भो.। 14. हो–क. ग. घ.। 15. हूँकारतावन्यसेत्–क., राना–ग. घ., राता–ख., गृ. भो.।

धूम्रधूसरवर्णानि [1]हं यों ह्लिं मों ह्लें ह्लिं हुँ हूँ फट् फट् इति बीजाक्षराणि पश्येत्। कर्णिकायां वज्रवाराहीस्वभावां(वं) रक्तवर्णं ॐ वँ इति बीजम्, एतत्प्रतिबिम्बं[2] त्रिचक्रं वा अधः करपृष्ठेऽपि परिस्फुटं पश्येत्।

ततः करगतान् पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशधातून् पातनी-मारणी-आकर्षणी-नर्तेश्वरी-पद्मजालिनीस्वभावानधिमुञ्चेत्[3]। [4]ततस्तत्करगतानि बीजाक्षराणि द्रवद्रव्येण म्रक्षयित्वा तत्करतलं सर्वयोगिन्य[5]धिष्ठित[6]त्रिचक्र[7]रूपा(प)मधिमुञ्चेत्। द्रवादिद्रव्यं त्र्यक्षर[8]मन्त्रेणाष्टपदमन्त्रेण वा दद्यात्। ततः संपूज्य न्यूनाधिकविधि-पूरणार्थं शताक्षरं पठित्वा चक्राद्यधिष्ठानार्थं[9] मध्येष्य[10] तद्द्रवमपरद्रव्येऽन्यत्र वा स्थापयित्वा हस्तलग्नेन द्रव्येण वामानामिकागृहीतेन हृज्जिह्वाशिरांसि[11] हूँ[12] आः ॐकारोच्चारणपूर्वकं म्रक्षयन्[13] तद्देवतावृन्दमात्मनि प्रविष्टमधिमुञ्चेत्। एतत्तु विधानं[14] **संचारतन्त्रे** प्रसिद्धम्। [इति] हस्तपूजाविधिः।

यद्वा पूर्वोक्तविधिशोधितवामकरानामिकया पीठोपपीठादिदशनामान्युच्चा-रयन् यथाविधिशोधितमदनेन त्रिकोणचक्रद्वय[15]पुटमभिलेख्य तन्मध्ये वर्तुलमण्डलं तत्र [16]स्वहृद्बीजनिर्गतां तत्किरणाकृष्टां [17]साधाराधेयचक्रां भगवतीं विचिन्त्य तस्यै पञ्चामृतादिरूपेण निष्पादितं खाद्यपेया[18]दिकं त्र्यक्षरेणाष्टपद[19]मन्त्रेण वा दत्त्वा पद्मभाजनगतममृतायितं मदनं वृद्धानामिकाभ्यां गृहीत्वा भगवतीं स्वहृदयो-पहृदयाभ्यां डाकिन्यादियममथनीपर्यन्ताश्च यथाक्रमेतासामेव मन्त्रैः संतर्पयेत्। ततः संपूज्य न्यूनातिरेकविधिपूरणार्थं शताक्षरं[20]पठित्वा गणचक्राधिष्ठानार्थं

---

1. हाँ याँ ह्रीं मों (माँ-ग. घ.), हूँ ह्रीं हुँ हँ (हुँ-क. ख.), गृ. भो. । 2. बिम्बां-ख. ग. घ. । 3. मुञ्चयेत्-क. ख. । 4. 'ततः' नास्ति-भो. । 5. तिष्ठित-ख. । 6. तत्रैक-क. । 7. स्थितरूपा-क ख. । 8. क्षरं-क. घ. । 9. ष्ठानाद्यर्थं-क. ख. ग. घ., गृ भो. । 10. 'ष्य' नास्ति-क. । 11. शिरसि-क. भो. । 12. हुं-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 13. येत्-क ख. । 14. संचारणतन्त्रप्रतिसिद्धं-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 15. 'पुट' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 16. 'स्व' नास्ति-क. ख. । 17. वासोधाराध्येयमण्डलां-क. ख. ग घ., गृ. भो. । 18. भोज्या-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 19. पदं-क. । 20. क्षरं पाथित्वा-क. ख. ।

चाध्येष्य[1] ॐ योगशुद्धाः[2] सर्वधर्मा योगशुद्धोऽहमिति पठन् कमलावर्तेन(वर्त)-मुद्रया संतोष्य तन्मुद्रोपसंहार आलिङ्गनाभिनयपूर्वकमनामिकया भूमिं स्पृशन् ॐ वज्र [3]मुरिति पठित्वा विसर्ज्य तच्चक्रमात्मनि प्रवेशयेत् । ततस्तत्र भूमिगतमदनं वामानामिकया[4] गृहीत्वा तेन [5]हृज्जिह्वाशिरांसि हूँ आः ॐकारोच्चारणपूर्वकं म्रक्षयन्[6] तत्करगतमपि देवताचक्रमात्मनि प्रविष्टमालोकयेदिति हस्तेन पूजोक्ता । ततः ॐ[7]शुक्ल ॐकारपरिणतवज्रजिह्वादक्षिणश्रु(स्रु)वेणेतराहुतिं स्वनाभिकमल-कर्णिकायामवस्थितज्वाला[8]मालाकुलमण्डलेषु जुहुयात् । इत्यध्यात्महोमशेषः ।

ॐ आः[9] उच्छिष्टवज्र अधितिष्ठेमं वलिं हूँ स्वाहा । शून्यताकरुणाद्वये त्रैधातुकचक्राकारज्ञानवह्नौ तु यथोपदेशं स्कन्धादीन्धनदहनान्निरुत्तरहोमः । शान्तिकपौष्टिकादिबाह्यहोमस्तु होमविधौ कर्मानुरूपविहितकुण्डकुसुमसमिध-शोषणादिकमनुसृत्य [कार्यः] । विधयो विस्तरभयान्न लिखिताः । एवं तावत् पूजावलिविधानादिसमेतं विस्तरेण भगवत्या भावनामण्डलं निर्दिष्टम् ।

[10]मध्यरुचिस्तु दिग्दलेषु डाकिन्यादयश्चतस्रः, विदिग्दलेषु पद्मभाण्डस्थ-समयद्रव्याणि,[11] मध्ये यथानिर्दिष्टा भगवतीति पञ्चात्मकं मण्डलं भावयेदिति । [12]वलिपूजादिकं तु यथायोगं स्वस्वमन्त्रैः पञ्चानां कर्तव्यम् । रक्षाचक्रादिकं पूर्ववदेव । ओडियानविनिर्गतक्रमेण पुनरियमूर्ध्वपादा भवति । [13]निष्पत्तिबीजं हृदयादि-मन्त्रास्त एव । डाकिन्यादयोऽपि तथैव ।

संक्षिप्तार्थी तु यथोक्तरूपां भगवतीमेव केवलां भावयति । पूजादिकं यथोक्तं[14] भगवत्या विधेयम् । क्वचिदियं [15]स्वहृच्चन्द्रस्थसितॐकाररश्मिभि-

---

1. ष्ये–क. ख. ग. । 2. शुद्धः–भो. । 3. मुरुति–क. ख. । 4. काया–क. ख. । 5. हृद्वी–क., हृद्व–ख., नास्ति–ग. घ., गृ. भो. । 6. येत्–क. ख. । 7. 'ॐ' नास्ति–भो. । 8. ज्वालां कुल-चक्रेषु–क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 9. आ–घ. । 10. मध्ये–क. ग. घ. । 11. द्रव्यादि–क. । 12. पूतिपूजा–क. । 13. उत्पत्ति–भो. । 14, यथायोग्यं–भो. । 15. 'स्व' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।

रानीतबुद्धादीन् पूजयित्वा यावच्छून्यतां विभाव्य चन्द्र[1]वज्रश्च(स्य)वंबीजनिष्पन्ना पद्मचन्द्रासना [2]भाव्यते ।

किञ्चेयमेव भगवती वज्रवैरोचनी वज्रयोगिनीत्युच्यते । अस्याश्च यथागमं यथोपदेशं बहुप्रकारा आम्नायभेदाः । [3]तद्यथा—स्वनाभिस्थ-रंभवत्रिकोणाग्निमण्डलोपरि रक्तवर्तुलारविन्दरक्तह्लींकारं दृष्ट्वा तत्सर्वपरिणामेन रक्तवर्णा[4]मालीढपदाक्रान्तशवां[5] मूर्ध्नि पिङ्गलकेशां चतुर्भुजां दक्षिणाभ्यां वज्राङ्कुशौ वामाभ्यां खट्वाङ्गकपालौ तर्जनीपाशौ च धारयन्तीं बृहदुदरां कोलास्यां भगवती[6]मात्मानं भावयेत् । परिशिष्टरूपां पूर्ववदिति श्रीवज्रघोणा[7]क्रमः ।

विशेषस्तु[8]—ॐ [9]हू ह्लि त्रँ इति हृदयम् । ॐ वज्रवाराही आवेशय सर्वंदुष्टान् ह्लीं स्वाहा [इति] [10]उपहृदयम् । देवीयोग[11]पुरःसरमेतल्लक्षणं जापात् सिद्धयति न संशयः । ॐ आः ह्लीं हूं [12]हः हः अनेन मन्त्रेण महामांसचूर्णेन धूपं दद्यात् । पटाग्रत एक[13]विंशतिदिनैरभिमतं सिद्धयति । ॐ ह्लीं हं हां हः हः हिः[14] हीं: हीं: हीं: [15]फें फेंकारं दद्यात् । सर्वमारप्रशमनार्थं निशावलिः पञ्चोपचारेण दातव्या । अभव्येषु न प्रकाशनीयोऽयं[16] विधिः । तेन वज्रयोगिन्योऽधितिष्ठन्ति । ॐ ह्लीं घातय सर्वंदुष्टान् [17]हूं फट् स्वाहा । अनेन प्रथमतो वलिं दत्त्वा वज्रघोणासाधनमिदमनुष्ठेयम् । प्रागुक्तमपि वलिविधानादिकमत्र[18] क्रियते । अधिकं हि प्रशस्येत[19] इति ।

क्वचिदियं हृद्रक्तपद्मे आँकारजसूर्यस्थशि(सि)तह्लीं[20]काराधिष्ठितारुणपञ्चशूकवज्रपरिणता, सिता(त)लोहित[21]पद्मस्थसूर्यसुप्ताज्ञानपुरुषोपरि आलीढ-

---

1. 'वज्रश्च' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 2. भावयते-क. । 3. तथाहि-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 4. र्णालीढ-क. ख. । 5. वां ऊर्ध्वं-भो. । 6. 'आत्मानं' नास्ति-भो. । 7. घोष-क. । 8. षन्तु-क. ख. । 9. ॐ ह्लीं हूँ ह्लीं ह्लांकृति हृदयं-क., वँ ह्लीं हूं ह्लीं ह्लांकृति हृदयं-ग., ॐ ह्लीं हूँ ह्लीं ह्लांकृति हृदयं-ख. घ., गृ. भो. । 10. 'उप' नास्ति-भो. । 11. यो पुरो मेतल्ल-क. ख. । 12. 'कँ' इत्यधिक पाठः-क. ख. । 13. विंशत्या-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 14. ह्लः ह्लीः ह्लीः-क. । 15. हुँ हुँ हुंकारं-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 16. 'अयं' नास्ति-घ. । 17. हुँ-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 18. मन्त्रः-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 19. येन-क. ख. । 20. ह्लीः-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 21. हितान्तस्थ-क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।

पदस्थिता, सूर्यस्थ[1] रक्तह्रींकाराधिष्ठितः(त)सूर्यस्थवज्रहृदयो(या), विश्वपद्म-सूर्यस्थो(स्था)क्षोभ्यो(भ्या)ऽभिषेकजा। अपरं सर्वं पूर्ववत्।

तदनु नाभौ विश्वपद्मस्थारुणशुभ्रसूर्यमण्डले ह्रीः[2]कारं [3]दृष्ट्वा तन्मन्त्रः(न्त्र)-मालामक्षसूत्राकारां सितां चक्रभ्रमणयोगेन वदनविवरेण निश्चार्य बुद्धगुणगणमणि-मन्त्रौषधिचन्द्रतारालिपिशास्त्रकलादिप्रभावमादाय नाभिविवरे प्रविशन्तीं स्वपरेषां सर्वा[4]ज्ञानदहनात्मिकां ध्यायात्। द्रुतादिदोषरहितं मन्त्रं जपेत्। मन्त्रः—ह्रीं[5] ह्रीं। यदोत्थातुकामो भवति, तदा[6] मन्त्रमालां नाभिस्थ[7]ह्रींकारेऽन्तर्भाव्य पूजादिकं कृत्वा यथासुखं विहरेत्। किञ्च, आःकारजसरोजदलाभ[8]स्वजिह्वायां [9]रक्तह्रींकारं ज्वलद्भास्वररूपं विभाव्य तत्र चित्तं स्थिरीकृत्य शतार्धगुलिकामालामक्षसूत्रेण चतुःसन्ध्यं त्रिसन्ध्यं वा जपेत्।

एवं जपभावनान्वितो योगी सप्तलक्षजापेन सर्वशास्त्रकलाभिज्ञो मेधावी[10] सुग्राही गणानभिभवनीयो [11]वादी महाकविश्च भवति। ज्वर[12]लूताडाकिन्यादिभिः शोषद्रो(यि)तुमशक्यः। सिद्धे सत्यस्मिन् मन्त्रे एतन्मन्त्राभिमन्त्रिता कठिनी यस्य हस्ते दीयते, स मूर्खोऽपि कविर्भवति। वश्ये[13] त्वेनां रक्तवर्णां विभाव्य विधिवदमृत-स्वादं कृत्वा स्वनामाक्षरनिष्पन्नं साध्यं मन्त्रमालां(ला)निर्गतरश्मिभिराकृष्यानीतं पुरोवर्तितं(नं) दृष्ट्वा चित्तमोः[14]कारपरिणत[15]रक्तचन्द्रमण्डलाकारमवलोक्य तन्म-न्त्रमालानिर्गतां देवीं रक्तवर्णां[16] वामकरेण[17]ह्रीःकारजपाशधरां दक्षिणे रक्तोत्पल-कलिकानिभवज्राङ्कुशधरां साध्यपुरोवर्तिनीं पश्येत्। ततः ॐ आः [18]ह्रीः अमुकस्य

---

1. सूर्यस्थ ह्रीः—क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 2. ह्रीं—क. ख.। 3. हृष्टो—क. ख., हृत्स्थो—ग. घ., गृ. भो.। 4. र्वाज्ञानान्धकार—भो.। 5. ह्रीः—क. ख., ह्रीः—ग. घ., गृ. भो.। 6. ता मन्त्रा—क. ख.। 7. ह्रीः कारान्तर्भा—क. ख., ह्रीः—ग. घ., गृ. भो.। 8. 'स्व' नास्ति—भो.। 9. 'रक्त' नास्ति—क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 10. वीन्यद्— क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 11. 'वादी' नास्ति—भो.। 12. ज्वरत—क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 13. वश्यत्वेतां—ग.। 14. 'मोः' नास्ति—भो.। 15. 'मो' इत्यधिकं क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 16. वर्णा-क. ख.। 17. ह्रीं-क. ख., ह्री—ग. घ., गृ. भो.। 18. ह्रीं—क.।

चित्तमाकर्षय [1]हूँ जः इत्याज्ञादानानन्तरं सा देवी विधिवत् साध्य[2]देहस्यान्तः प्रविश्य चित्तचन्द्रमण्डलं पाशेन संवेष्टच अङ्कुशेन चोदयन्ती स्वचित्ते प्रवेश्य मन्त्रमालायामन्तर्भवेत्। ततस्तं साध्यं कृतकरपुटमेकान्तं परवशं साधकाभिमुखं किं करोमीति वदन्तं ध्यायादिति। एवं चतुःसन्ध्यं त्रिसन्ध्यं वा ध्यायेदचिरात् साध्यमवश्यं वशयतीति।

क्वचित् पुनरियं विश्वपद्म[3]चन्द्रस्थरक्तहूँकारपरिणता[4]लीढप्रत्यालीढपदाक्रान्तशवा ऊर्ध्वज्वलितरक्तकेशं(शा) द्विभुजा दक्षिणेन कर्तितर्जनीका वामेन रक्तपूर्णकपालधरा [5]शेषालङ्कारादिकं पूर्ववत्। [6]ॐ सर्वबुद्धडाकिनीये[7] ॐ[8] वज्रवर्णनीये ॐ[9] वज्रवैरोचनीये हूँ हूँ हूँ फट् फट् फट् स्वाहा। मूलमन्त्रः। ॐ वज्रडाकिनीये ह्रीं हूँ फट् स्वाहा। हृदयमन्त्रः। ॐ वज्र[10]योगिनीये हूँ फट् स्वाहा। उपहृदयमन्त्रः। ॐ वज्रडाकिनीये इमं वलिं गृह्ण गृह्ण ह ह ह ह ख ख ख ख अ अ अ अ मम सिद्धिं[11]प्रयच्छ हूँ फट् स्वाहा। अनेन मन्त्रेण पूर्ववदमृतीकृत्य वलिर्देयः। विशेषत्वेनाष्टम्यादौ निशि श्मशाने दातव्यः। क्वचिदियं रक्तहूंकार[12]-जाता मुक्तकुन्तलकलापा दृश्यते, क्वचिच्छवरहिता। अधिमन्त्रास्तु त एव।

क्वचित् स्वनाभिस्थशुक्लकमलसूर्ये(र्यं)स्थितसिन्दूरारुणधर्मोदयामध्ये पीतह्रीःकारजा[13] स्वयमेव कर्तितस्वमस्तकं वामहस्तस्थितां(तं) धारयन्ती, दक्षिणेन कर्ति, ऊर्ध्वविस्तृतवामबाहुः, अधोनमितदक्षिणबाहुः, प्रसारितदक्षिणपादा, संकुचितवामचरणा। कबन्धादवधूतीवर्त्मना निःसृत्यासृग्धारा तस्या मुखे पतति, अपरे ललनारसनाभ्यां निःसृत्य पार्श्वयोगिन्योर्मुखे प्रविशत इति भाव्य तत्र वामपार्श्वे श्यामवर्णा वज्रवर्णनी [14]वामेन कर्ति [15]दक्षिणेन कपालं बिभ्राणा[16] प्रसारित-

---

1. हुँ-क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 2. शान्तः-क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 3. सूर्यस्थ- भो.। 4. रक्तप्रत्या-क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 5. परिशिवशादिकं-क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 6. ॐ ॐ ॐ-क.। 7. न्ये-क.। 8-9. 'ॐ' नास्ति-क. ख.। 10. वैरोचनीये-क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 11. 'मे' इत्यधिकं-भो.। 12. कारं-ग. घ.। 13. ह्रींकारजात-क. ख., ह्रींकारजा-ग. घ., गृ. भो.। 14. दक्षिणेन-क. ख.। 15. वामेन-क. ख.। 16. बिभ्रती-क. ख.।

वामपादा संकुचित[1]दक्षिणपादा। दक्षिणपार्श्वे पीतवर्णा वज्रवैरोचनी दक्षिणेन कर्तिं वामेन कपालं बिभ्रती प्रसारितदक्षिणचरणा संकुचितवामचरणा। अपरं पूर्ववत्। ॐ सर्वबुद्धडाकिनीये [2]ॐ वज्रवर्णनीये ॐ वज्रवैरोचनीये हूँ हूँ हूँ फट् फट् फट् स्वाहा। जापमन्त्रः।

[3]पूजोच्यते—चतुरस्रमण्डलस्थसूर्यस्योपरि धर्मोदयां लिखित्वा तन्मध्ये ह्रींकारं [4]च विचिन्त्य पूजयेत्। [5]तज्जाम् उक्तरूपां भगवतीं पूजयेत्। तत्र धर्मोदयामध्ये ॐसर्वबुद्धडाकिनीये इत्यादिमन्त्रेण प्रथममर्चयेत्। ॐ सर्वबुद्धडाकिनीये[6] हूँ स्वाहा, इत्यनेनार्घादिकं दद्यात्। वामे ॐ वज्रवर्णनीये [7]हूँ स्वाहा। दक्षिणे ॐ वज्रवैरोचनीये हूं स्वाहा [इति] पूजयेत्। तत ओडियाण-पूर्णगिरि-कामरूप[8]-श्रीहट्ट-धर्म-संभोग-निर्माण-महासुख[9]कायानां प्रत्येकं चतुर्थ्यन्तं नाम विदर्भ्य ॐकारादिस्वाहान्तेन पूजयित्वा पूर्ववत् विसर्जयेदिति। कर्मान्तरे त्वियं स्वदेह-त्रैधातुकविशुद्धं कूटागारमधिमुच्येत्। झटिति नाभिमण्डले द्विजा [10]कर्तिकपाल-हस्ता अर्धपर्यङ्का [11]कृतताण्डवा जवाकुसुमसन्निभा भावनीया।

कोलास्यं दक्षिणं[12] तस्याः क्रोधास्यं वाममेव च।
सत्यद्वयविशुद्धचा तु [13]वक्त्रद्वयमुदाहृतम्॥ इति।

तदेवमादाय सिद्धोपदेशपरम्परायाता विनेयाशये(य)भेदादनन्ता भगवत्या आम्नाया बोद्धव्याः। [14]दिङ्मात्रमिदं दर्शितम्। एषु च क्रमेषु क्रममेकमादाय श्रद्धादया[15]वान् निःसङ्ग[ः] समयसेवी निर्विचिकित्सां(त्सं) भावयन्नियमेन साधयति।

उपदेशागता पूर्वपूजा लिख्यते। दशम्यां कुङ्कुमादिमार्जिते निर्मल-भाजने[16] सिन्दूरं पातयित्वा तन्मध्ये सुवर्णलेखन्या धर्मोदयामभिलिख्य तन्मध्ये

---

1. 'दक्षिणपादा' नास्ति—क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 2. 'ॐ' नास्ति—भो.। 3. पूजाक्रमः—भो.। 4. 'च विचि⋯पूजयेत्' नास्ति—भो.। 5. तज्जां⋯दद्यात्' नास्ति—घ। 6. न्ये स्वाहा-क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 7. 'हूँ' नास्ति—क. ख.। 8. कामाख्य—क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 9. खाख्यानां—क.। 10. 'कर्ति' नास्ति—क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 11. कृता—क. ख.। 12. दक्षिणे—क.। 13. चक्र—क.। 14. द्वित्रि तत्र—क.। 15. श्रद्धादयो—क.। 16. भाजन—क. ख.।

ह्रींकारं लिखेत्। ततः पार्श्वतो[1] नन्द्यावर्तमुद्रां लिखित्वा जलकुसुमैरर्चयेत्। ओडियानप्रभृतिपीठे(ठ)चतुष्टयं कायचतुष्टयं च पूर्ववत् पूजयेत्। भक्ष्यपेयादिकं समयद्रव्यं च यथालाभं निवेदयेत्। कुमारीं च पूजयेत्। अयं च विधि[2]र्नग्नेन [3]मुक्तकुन्तलेन दक्षिणाभिमुखमुपविश्य सुगुप्तमनुष्ठेयः। अन्यथा सिद्धिहानिर्नानाविधाश्च रोगा जायन्ते। ततो बलिं दत्त्वा अभिमतसिद्धि[4]प्रार्थनां कृत्वा विसर्ज्य सिन्दूरनैवेद्यादिकं कुमारिकाणामविधवास्त्रीणां वा दद्यात्। किञ्च, दशम्यामष्टम्यां चतुर्दश्यां वा यत्किञ्चित् पुष्पफलतैलताम्बूलतण्डुलशाकपर्णदधिकाष्ठलवणसिन्दूर-[5]मत्स्य[6]मांस(सं) मामकीप्रभृती(ति)योषिज्जनेन विक्रीयते, ततः किञ्चिद्यत्किञ्चिद्यथाशक्ति क्रीत्वा यथायोगं प्रसाध्य पूर्ववत् सिन्दूरनिर्मितधर्मोदयां बीजाक्षरादिकं लिखित्वा सम्पूज्य समीहितसिद्धिं प्रार्थ्य विसर्जयेत्।

अतः परं पूर्ववत् स्वप्ने वज्रयोषितामाश्वासो[7] भवतीत्युपदेशतः[8]। अपि चात्यन्तनिर्मि(मृं)ष्टदर्पण[9]तलेऽष्टम्यां सिन्दूरं पातयित्वा तत्र धर्मोदयमुद्रां लिखित्वा कोणेषु बाह्येषु [10]वंबीजं विलिख्य मध्ये मन्त्रं च, धर्मोदयाबाह्येषु चतुःपार्श्वेषु वामावर्तेन नन्द्यावर्तं लिखित्वा पुष्पादिभिः संपूज्य यथाशक्ति मन्त्रं[11]परिजप्य जपसिन्दूरं तदेकत्र भाण्डे स्थापयेत्। एवं षण्मासं यावत् कुर्यात्। ततो लाङ्गलियो-(लीये) विष[12]नलिकामध्ये तत् सिन्दूरं प्रक्षिप्य श्मशाने निखनेत्[13]। बलिं पूजां च विधाय मन्त्रं जपेद् यथाकामम्। एवं प्रत्यहं मासमेकं कुर्यात्। तत्सिन्दूरेण नन्द्यावर्ताकृतितिलकं विधाय भिक्षार्थं ग्रामं प्रविशेत्। [14]यत्र तत् तिलकं संक्रान्तं दृश्यते, तां [15]स्त्रीं यत्नेनाराधयेदिति। एवं नन्द्यावर्तेन **सिद्धिः(द्ध)शबरपादीय**वज्रयोगिन्याराधनविधिः।

---

1. पार्श्वयोनौ–क. ख.। 2. धिनानेन–क.। 3. विमुक्त–क, ख.। 4. सिद्धौ–ग. घ.। 5. मद्यादि–भो.। 6. 'मांस……किञ्चित्' नास्ति–भो.। 7. माश्चासौ–क.। 8. देश्यताः–ग.घ.। 9. दर्प–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 10. देवीबीजं–क. ख. ग. घ., गृ. भो.। 11. 'परिजप्य' नास्ति–क. ख.। 12. विषे–क. ख.। 13. निखये–क. ख.। 14. यत्र तु–क. ख, यदा–भो.। 15. 'स्त्रीं' नास्ति–क. ख. ग. घ., गृ. भो।

अत्र च योगिनीनये स्थितेन पूजामन्त्रजप[1]भोजनादिकं गुप्त्या वामेन[2] करणीयम् । पीठादियात्रां कुर्वतां वज्रडाकिनीरुद्दिश्य ग्रामनगरादौ प्रदक्षिणं वामावर्तेन कर्तव्यम् । गच्छतां प्रथमं वामपादं पुरः प्रसार्य गन्तव्यम् । यथामिलिताः पञ्चकामा वैरोचनादिविशुद्धया निर्विचिकित्स[3]मुपभोक्तव्याः[4] । सुशीलानपराधयोरभिचारकर्म न कर्तव्यम् । योषितो न ताडि(डयि)तव्याः, न क्रोद्धव्याः,न चावमन्तव्याः, विशेषेण [5]षण्मुद्राधारिण्य इति बहुप्रकाराः समयास्तन्त्रानुसारेण बुद्ध्वा परिपालनीयाः । [6]मन्त्रादयोऽपि तत एवावगम्य प्रयोक्तव्याः । विस्तरभयान्न लिखिताः । किं बहुना—

गुरुर्बुद्धो गुरुर्धर्मो गुरुः संघस्तथैव च ।
[7]गुरुर्वज्रधरः श्रीमान् गुरुरेवात्र कारणम् ॥
गुरुमाराधयेत्तस्माद्बुद्धत्वफलवाञ्छति(या) ॥ [8]इति ।

दिधायेदं विश्वं गुणकुसुमसम्मोदसुभगं
समीह[न्ते][9]भोक्तुं यदि झटिति सन्तः शमफलम् ।
तदोपेयुर्यत्नादभिसमयकल्पद्रुमभवां
नवामुन्मीलन्तीमतिरसवतीं मञ्जरिमिमाम् ॥

तन्त्राभिसमयोपायसाधनेभ्यो गुरोरपि ।
वचनात् किञ्चिदाकृष्य निर्मितेयमनाकुला ॥
यन्मयासादितं पुण्यमेतन्निर्माणसम्भवम् ।
अनेन भजतामुच्चैर्जगद् वज्राङ्गनापदम् ॥

[10]श्रीवज्रयोगिनीसाधनमभिसमयमञ्जरीनाम महाचार्य-
शुभाकरगुप्तरचितं समाप्तम् ॥

---

1. भाजना-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 2. करेण-क., तरेण करेण-ख. ग. घ., गृ. भो. । 3. त्सामु-क. ख. । 4. इतः परम्-'देवतां मन्त्रं च पृथक्त्वेन न गृह्णीयात् । बुद्धं बोधिसत्त्वांश्च भगवत्याऽधिमुक्तिकारणादष्टपदमन्त्रेण पूजा वन्दनं च कर्तव्यम् । मन्त्रं मुद्रां च स्वयं न कल्पयेत्, न च नाशयेत्' इत्यधिकः पाठः-भो. । 5. 'षण्' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 6. यन्त्रा-भो. । 7. 'गुरुर्व'...... विश्वं' नास्ति-ख. । 8. 'इति' नास्ति-क. ख. ग. घ, गृ. भो. । 9. भाक्तु-क. ख. । 10. इति श्रीगुह्यसमये तन्त्रे व्याख्यातृमहापण्डितशाक्यरक्षितपादविरचिताभिसमयमञ्जरी समाप्ता-क. ख., व्याख्यातृ'''माप्ता-ग., व्याख्यातृ''''शान्तरक्षित''''समाप्ताः-घ. ।

उद्धृतग्रन्थ-ग्रन्थकारानुक्रमणी

●

श्लोकार्ध-सूची

विशिष्टशब्दानुक्रमणी

༄༅། །དཔལ་རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མའི་སྒྲུབ་ཐབས་མངོན་པར་

རྟོགས་པའི་སླི་མ་ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ། །

[भोट खण्ड]

མངོན་པར་རྟོགས་པའི་སྙི་མ།

༄༅། །རྒྱ་གར་སྐད་དུ། ཨབྷི་སམ་ཡ་མ་ཉྫ་རི། བོད་སྐད་དུ། མངོན་པར་རྟོགས་པའི་སྙི་མ། དཔལ་[1]རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

སྟོང་ཉིད་སྙིང་རྗེའི་བདག་ཉིད་ཅན། །
གང་ཞིག་འགྲོ་བའི་བསམ་དབྱེ་བས། །
སྣ་ཚོགས་སྐུ་ནི་རྣམ་པར་འཛིན། །
རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མ་ལ་འདུད། །

ཡང་དག་བྱང་ཆུབ་བདུད་རྩིས་རབ་བཀུས་[2]དབང་གིས་དྲི་མེད་གསལ་མཛད་གང་། །
སྐྱེ་བོ་གདུལ་བྱ་དག་ལ་ཆགས་ཕྱིར་ཞི་སྒྲུང་ཕྱི་རོལ་དམར་པོར་སྟོན། །
མི་ཟད་འོད་ཅན་རྡོ་རྗེ་ཕྲོད་པ་དང་ནི་དྲི་མེད་ཁ་ཊྭཱཾ་བསྣམས། །
བཅོམ་ལྡན་རྡོ་རྗེ་རོལ་མ་དེས་ནི་ཁྱེད་ལ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་གྱུར་ཅིག །

འདིར་བླ་མ་དང་སངས་རྒྱས་དབྱེར་མེད་པའི་དད་པ་དང་། ལེགས་པར་བླངས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དང་། དབང་བསྐུར་བ་ཡང་དག་པར་ཐོབ་པས་སྣྲའི་ཚོགས་བཀྲོལ་[3]དེ་ཁ་ལྐོར་ཕྱོགས་པ་དང་། བདུད་རྩི་ལྔའི་རིལ་བུ་ལ་སོགས་པའི་སྦྱོར་བས་ཁ་ཡོངས་སུ་དག་པའི་རྣལ་འབྱོར་པས་དུར་ཁྲོད་དམ་རི་ལ་སོགས་པའི་ས་[4] ཕྱོགས་འགའ་ཞིག་ལ་སྟན་བདེ་བཞམ་[5]ཡང་ན་རོ་དངོས་ཀྱི་སྟན་ལ་འདུག་ལ། ཨོཾཨཨཱཨིཨཱིཨུཨཱུཨརིརཱི ལིལཱིཨེཨཻཨོཨཽ ཨཾཨཿ། ཀ ཁ ག གྷ ང་། ཙ ཚ ཛ ཛྷ ཉ། ཊ ཋ ཌ ཌྷ ཎ། ཏ ཐ ད དྷ ན། པ ཕ བ བྷ མ། ཡ ར ལ ཝ། ཤ ཥ ས ཧ ཀྵ ཧཱུྃ ཧཱུྃ ཕཊ།

[1] རྒྱ་དཔེར་ དཔལ་ཞེས་མེད། [2] གཞེར་ དཀྲུས། [3] གཞེར་ དཀྲོལ། [4] གཞེར་ ས་མེད། [5] གཞེར་ བཞེངས།

ཅེས་བྱའི་ཨཱ་ལི་དང་ཀཱ་ལིའི་ཕྲེང་བ་འོད་ཟེར་རྣམ་པ་ལྔ་འཕྲོ་བ་ལན་གསུམ······ བརྗོད་པས་ཡོངས་སུ་བསྐོར་ཏེ་གནས་པ་ལས་འཁོར་ལོ་གསུམ་གྱི་ལྷ་ཚོགས་སྤྲོས་པས་[1] བགེགས་ཀྱི་ཚོགས་རྣམས་འཇོམས་པར་བྱེད་པ་བསྒོམ་[2] པར་བྱ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ངག་ཡོངས་སུ་དག་པའོ། །

རྣམ་པར་དག་པའི་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་ལས་བྱུང་བའི་མཆོད་པ་ལ་སོགས་པ་[3] ནི་བྱང་ཆུབ་སྒྲུབ་པའི་རྒྱུ་ཡིན་པས་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་དག་པར་མོས་པར་བྱའོ།། དེ་ལ་གཟུགས་ནས་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་བར་དུ་དབུ་བ་དང་། ཆུ་བུར་དང་། སྨིག་རྒྱུ་དང་། ཆུ་ཤིང་དང་། སྒྱུ་མ་ལྟ་བུ་ཉིད་ཀྱིས་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ལ་སོགས་པ་ཉིད་དུ་ངེས་པར་བྱའོ།། །དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་མི་བསྐྱོད་པའོ། །ཡང་ན་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ལ་སོགས་པའི་ལྷར་མོས་པ་ཉིད་ཀྱིས་དེ་དག་གི་རྣམ་པར་དག་པའོ།[4] །

དེ་ལ་གཟུགས་དང་། ཚོར་བ་དང་། འདུ་ཤེས་དང་། འདུ་བྱེད་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྣམས་ལ་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དང་། རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་དང་། འོད་དཔག་མེད་དང་། དོན་ཡོད་གྲུབ་པ་དང་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའོ། །གཟུགས་ལ་སོགས་པའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་མི་བསྐྱོད་པའོ། །དེ་དག་གི་ཁ་དོག་ཀུང་དཀར་པོ་དང་། སེར་པོ་དང་། དམར་པོ་དང་། ལྗང་གུ་དང་། དཀར་པོ་དང་ནག་པོར་ཤེས་པར་བྱའོ། །རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ནི་ཕྱག་གཡས་ཀྱིས་འཁོར་ལོ་[5] གདེངས་པ། གཡོན་པའི་ཕྱག་དྲིལ་བུ་དང་

༡ གསེར་ ༠ སྤྲོས་པ། ༢ གསེར་ ༠ བསྒོམས། ༣ གསེར་ ༠ ལ་སོགས་པ་མེད། ༤ རྣམ་པར་དག་པའོ། །ཞེས་པ་ནས་ དེ་ལ་གཟུགས་དང་། ཞེས་པའི་བར་རེར་པོད་དཔེ་རྣམས་སུ་མེད་པ་རྒྱ་དཔེར་སྣང་བ་ལྟར་བཀོད་པ་ ༠-ཕྱོགས་བཅུའི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་སུ་གནས་པའི་དཔའ་བོ་འི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་འགུགས་པ། ཨོཾ་ཡོ་གཤུདྡྷཿ སརྦདྷརྨཱཿ ཡོ་ག ཤུདྡྷོ྅ཧམ ཨོཾ་ཨཱཿ་ཨ་ར་ལླི་ཧོཿ་ཛཿ་ཧཱུཾ་བཾ་ཧོཿ ཝཛྲ་ཌཱ་ཀི་ནི་ སམཡ་སྟྭཾ་ དྲྀ་ཤྱ་ཧོཿ་བཛྲ་ ཨ་ཛ་ལ་ ཨནྟ་བ་བེ་ཀ་ཙ་སུ་ཏྭ་ཡ་ བཝེ དད་ཏུ་ ནེ་ཤུ་ནྟཱ་ཀ ཨོཾ་ཁ་ཁ་ཁཱ་ཧི་ཁཱ་ཧི་ སརྦ་ཡཀྵ་རཀྵ་སཱ་བྷཱུ་ཏ་པྲེ་ཏ་པི་ཤཱ་ཙོ་ནྨཱ་ད [ཨ་པ་སྨཱ་] ར་ཌཱ་ཀ་ཌཱ་ཀི་ནྱ་ད་ཡ ཨི་མཾ་བ་ལིཾ གྲྀཧྞནྟུ སམཡ་རཀྵནྟུ ... [ཕ] ... ཧཱུཾ་ཧཱུཾ ཕཊ་ཕཊ་སྭཱ་ཧཱ། གཏོར་མའི་སྔགས་རྣམ་པར་དག་པའོ། ། ༥ གསེར་ ༠ འཁོར་ལོར།

ལྡན་པས་དཀྲུར་བཏེན་པ། རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་དང་། སྣང་བ་མཐའ་ཡས་དང་དོན་ཡོད་གྲུབ་པ་རྣམས་ཀྱི་ཕྱག་གཡས་རོལ་པ་དང་བཅས་པས་རིན་པོ་ཆེ[1]དང་། པད་མ་དམར་པོ་དང་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་གདེངས་པ[2]། གཡོན་པའི་ཕྱག་རྣམས་དྲིལ་བུ་དང་བཅས་ཏེ…… ཐུགས་ཀར་སྣོན་པའོ། །རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་ཕྱག་གཡས་རོལ་པ་དང་བཅས་པས་ཐུགས་ཀར་རྡོ་རྗེ[3]བསྣམས་པ།[4] དྲིལ་བུ་དང་བཅས་ཏེ་ཕྱག་གཡོན་པ་དཀྲུར་བཏེན་པ། མི་བསྐྱོད་རྡོ་རྗེའི་ཕྱག་གཡས་རྡོ་རྗེ་དང་བཅས་པས་ས་གནོན་པ། ཕྱག་གཡོན་པ་དྲིལ་བུ་དང་བཅས་པས[5]དཀྲུར་བཏེན་པའོ། །མིག་དང་། རྣ་བ་དང་། སྣ་དང་། ཁ་དང་། རིག་བྱ་རྣམས་ལ་གདི་མུག་རྡོ་རྗེ་དང་། ཞེ་སྡང་རྡོ་རྗེ་དང་། ཕྲག་དོག་རྡོ་རྗེ་དང་། འདོད་ཆགས་རྡོ་རྗེ་དང་། སེར་སྣ་རྡོ་རྗེ་རྣམས་མིང་གཞན་ཡང་སའི་སྙིང་པོ་དང་། ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་དང་། ནམ་མཁའི་སྙིང་པོ་དང་། འཇིག་རྟེན་དབང་ཕྱུག་དང་། སྒྲིབ་པ་རྣམ་པར་སེལ་བ་ཞེས་པའོ། །ཁ་དོག་ནི་དཀར་པོ་དང་། ནག་པོ་དང་། སེར་པོ་དང་། དམར་པོ་དང་། ལྗང་གུའོ། །སྐྱེ་མཆེད་ཐམས་ཅད་ལ་དབང་ཕྱུག་རྡོ་རྗེ་དཀར་པོ་སྟེ། མིང་གཞན་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཞེས་བྱ་བའོ། །གདི་མུག་རྡོ་རྗེའི་ཕྱག་གཡས་ཀྱིས་འཁོར་ལོ་གདེངས་པ། ཕྱག་གཡོན་དྲིལ་བུ་དང་བཅས་ཏེ་རོལ་པས་ཐུགས་ཀར་སྣོན་པའོ། །ཞེ་སྡང་རྡོ་རྗེའི་ཕྱག་གཡས་རྡོ་རྗེ་དང་བཅས་པས་ཐུགས་ཀར་སྣོན་པ། གཡོན་པའི་ཕྱག་དྲིལ་བུ་དང་བཅས་ཏེ་དཀྲུར་བཏེན་པའོ། །ཕྲག་དོག་རྡོ་རྗེ་དང་། འདོད་ཆགས་རྡོ་རྗེ་དང་། སེར་སྣ་རྡོ་རྗེ་རྣམས་ནི་རིམ་པ་བཞིན་རིན་པོ་ཆེ་དང་། པདྨ་དམར་པོ་དང་། སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་རྣམས་ཕྱག་གཡས་ཀྱིས་རོལ་པ་དང་བཅས་པས་གདེངས་པས་སོ། རོལ་པ་དང་བཅས་པའི་ཕྱག་གཡོན་པས་དྲིལ་བུ་ཐུགས་ཀར་སྣོན་པའོ། །དབང་ཕྱུག་རྡོ་རྗེའི་ཕྱག་གཡས་རྡོ་རྗེ་དང་བཅས་པ་ཐུགས་ཀར་སྣོན་པ། དྲིལ་བུ་དང་བཅས་པའི་གཡོན་པ་དཀྲུ་ལ་

༡ རྒྱ་དཔེར་ ° རིན་པོ་ཆེ་མེད། ༢ གསེར་ ° གཏིངས་པའོ། ༣ གསེར་ ° རྡོ་རྗེ་མེད། ༤ རྒྱ་དཔེར་ ° (སྦྲ) གནས་པ། ༥ གསེར་ ° བཅས་པ།

བརྟེན་པའོ། །དེ་ལ་གདུགས་དཀར་རྣམ་པར་སེལ་བའི་ཕྱིར་གདུགས་རྡོ་རྗེའོ། །ཞི་སྡང་རྡོ་རྗེ་ནི་ཞེ་སྡང་ལ་ཞེ་སྡང་བས་སོ། །ཕྲག་དོག་དང་། འདོད་ཆགས་དང་སེར་སྣ་སེལ་བའི་ཕྱིར་ཕྲག་དོག་རྡོ་རྗེ་ལ་སོགས་པ་གསུམ་མོ། །དབང་ཕྱུག་ཐམས་ཅད་སྟེར་[1]བའི་ཕྱིར་དབང་ཕྱུག་རྡོ་རྗེའོ། །ས་དང་ཆུ་དང་མེ་དང་རླུང་གི་ཁམས་རྣམས་རྣམ་པར་དག་པའི་རང་བཞིན་གྱིས་ལྡང་བྱེད་མ་དང་། གསོད་བྱེད་མ་དང་། འགུགས་བྱེད་མ་དང་གར་གྱི་དབང་ཕྱུག་མ་རྣམས་སེར་པོ་དང་། ནག་པོ་དང་། དམར་པོ་དང་ལྗང་གུའི་མདོག་ཅན། [2]གཡས་ཀྱི་ཕྱག་གཉིས་ན་འཁོར་ལོ་དང་། གྲི་གུག་དང་། རྡོ་རྗེ་དང་། གྲི་གུག་དང་། པདྨ་དང་། གྲི་གུག་དང་། རལ་གྲི་དང་གྲི་གུག་རྣམས་བསྣམས་པ། གཡོན་གྱི་ཕྱག་གཉིས་ཀྱིས་ཐོད་པ་དང་ཁཊྭཱཾ་ག་བསྣམས་པ་རྣམས་ནི་སྨྱོན་མ་དང་། ཌཱ་མ་རུ་དང་། གོས་དཀར་མོ་དང་སྒྲོལ་མ་ཞེས་བྱའོ། །ནམ་མཁའི་དབྱིངས་ཀྱི་རང་བཞིན་མ་དུ་བའི་མདོག་ཅན་པདྨའི་དྲ་བ་ཅན་ནི་ཞལ་གསུམ་པ་དུད་ཀ་[3]དང་། དཀར་པོ་དང་། དམར་པོ་འི་ཁ་དོག་ཅན། ཕྱག་དྲུག་པའི་གཡོན་གྱི་གསུམ་གྱིས་ཐོད་པ་དང་ཁཊྭཱཾ་ག་དང་ཞགས་པ་བསྣམས་པ། ཕྱག་གཡས་པས་ལྕགས་ཀྱུ་དང་། ཚངས་པའི་མགོ་བོ་དང་གྲི་གུག་གིས་བརྒྱན་པ་ཅན་གྱི་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་རང་བཞིན་མའོ། །དེ་ལ་ལྡང་བྱེད་མ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ནི་མིང་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་ལས་རྣམས་རབ་ཏུ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པའོ། །རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ནི་གཡས་བརྐྱང་བ་གཡོན་བསྐུམ་པའི་སྟང་སྟབས་ཀྱི་ཚུལ་དུ་བཞུགས་པ། སྤྱན་གསུམ་པ་རལ་པའི་ཐོར་ཚུགས་ཅན་ཕྱག་རྒྱ་ལྔ་དང་ལྡན་པའོ། །ལྷ་མོ་རྣམས་ནི་སྐྲ་གྲོལ་བ་གཅེར་བུ་གཡས་བརྐྱང་བ་གཡོན་བསྐུམ[4]པའི་སྟང་སྟབས་ཅན། སྤྱན་གསུམ་པ་ཕྱག་རྒྱ་ལྔ་དང་ལྡན་པ་རྣམས་སོ། །

[1] གསེར་° གཏེར། [2] རྒྱ་དཔེར་° (ཨཱཀཱབཀྲྀཏིཀྲཌྜཱཀཱིཛྙཱཿ) ཞལ་གཅིག་ཕྱག་བཞི་པ། [3] གསེར་° དུད་ཁ། [4] གསེར་° བསྐུམས།

དེ་ནས་རང་གི་སྙིང་གའི་བུ་གའི་དབུས་སུ་རཾ་ཡིག་གི་ས་བོན་ལས་བྱུང་བའི་ཉི···
མའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་པའི་བཾ་ཡིག་དམར་པོ་བལྟས་ལ། དེའི་འོད་ཟེར་གྱིས་ནང་གི་
རྟོག་པ་བསལ་ནས་བ་སྤུའི་བུ་ག་རེ་རེ་ནས་ཕྱིར་བྱུང་བས་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་བཅོམ···
ལྡན་འདས་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་དང་བླ་མ་དང་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་
དཔའ་རྣམས་མདུན་གྱི་ནམ་མཁའ་ལ་སྤྱན་དྲངས་པར་བསམས་ལ། ཕྱག་འཚལ་ནས་ས་
བོན་གྱི་འོད་ཟེར་ལས་བྱུང་བའི་པི་ཝང་མ་ལ་སོགས་པའི་ལྷ་མོ་བཅུ་དྲུག་གིས་མཆོད་པར་
བྱའོ། །དེ་ལ་པི་ཝང་མ་དང་། གླིང་བུ་མ་དང་། ཛ་ཛ་མ་དང་། ཛ་ཛ་ཁ་གཅིག[༡]མ་རྣམས་
ནི་ཞལ་གཅིག་མ་ཕྱག་བཞི་མའི་སྐུ་མདོག་སྔོན་མོ་དང་སེར་མོ་དང་དམར་མོ་དང་ལྗང་གུ···
སྟེ། ཕྱག་དང་པོ་གཉིས་ཀྱིས[༢]རང་རང་གི་སྒྲའི་གནས་བརྡུང་བར་གཞོལ་བའོ། །གཞན་
ཕྱག་གཉིས་ཀྱིས་རྡོ་རྗེ་དང་དྲིལ་བུ་བསྣམས་པའོ། །བཞད་མ་དང་སྒེག་མོ་དང་གླུ་མ་དང་
གར་མ་རྣམས་ནི་ཞལ་གཅིག་མ་ཕྱག་བཞི་མའི་སྐུ་མདོག་དམར་མོ་དང་སྔོན་མོ་དང་སེར་མོ་
དང་ལྗང་གུ་སྟེ་བཞད་མའི[༣]ཕྱག་དང་པོ་གཉིས་ཀྱིས་བཞད་པའི་སྟང་སྟབས[༤]དང་། སྒེག་
མོ་ནི་ཕྱག་དང་པོ་གཉིས་ཀྱིས་རྡོ་རྗེ་དང་དྲིལ་བུ་དཀུར[༥]བརྟེན་པའོ[༦]། །གླུ་མའི་ཕྱག་
དང་པོ་གཉིས་ཀྱིས་ཏིང་[༧]ཤག་བསྣམས་པ། གར་མའི་ཕྱག་དང་པོ་གཉིས་ཀྱིས་པདྨ་བསྐོར་
བའི་ཚུལ་ཅན་ནོ། །འདི་རྣམས་ཀྱི་ཅིག་ཤོས་ཀྱི[༨]ཕྱག་གཉིས་ཀྱིས་ཐོད་པ་དང་ཁཊྭཾ་ག་
བསྣམས་པའོ། །མེ་ཏོག་མ་དང་བདུག་སྤོས་མ་དང་མར་མེ་མ་དང་། དྲི་ཆབ་མ་རྣམས་
ཀྱི་ཁ་དོག་ནི་དཀར་པོ་དང་དུད་ཀ[༩]དང་མར་མེའི་མེ་ལྕེ་ལྟ་བུ་དང་དམར་མོ་འོ། །ཕྱག་

༡ གསེར་° ཁ་ཅིག ༢ གསེར་° ཀྱི། ༣ རྒྱ་དཔེར་° (ཧཱསཱལཱསཱ) བཞད་མ་དང་སྒེག་མའི། ༤ གསེར་° སྟངས་དང་། ༥ གསེར་° བཀུར། ༦ རྒྱ་དཔེར་° (ལཱསྱཱ་ཧསྟཱབྷྱཱཾ་ཝཛྲ་ཀཎྛཱ་ཀཊྱཱཾ༔) བརྟེན་པའོ། ཕྱག་དང་པོ་གཉིས་ཀྱིས་སྒེག་མའི་སྟངས་སྟབས་དང་། ༧ གསེར་° ཏིང་ཏིང་ཤག ༨ གསེར་° ཅིག་ཤོས་ཀྱིས། ༩ གསེར་° དུད་ཁ།

བཞི་དང་། ཞལ་གཅིག་མ་སྟེ། གཡས་ཀྱི་[1] ཕྱག་གི་[2] དང་པོ་རྣམས་ཀྱིས་མེ་ཏོག་གི་སྒྲོན་དང་༔ བདུག་སྤོས་ཀྱི་སྣོད་དང་། མར་མེའི་ཀོང་[3] བུ་དང་། དྲི་ཆབ་ཀྱི་དུང་ཕོར་བསྣམས་པའོ། །ཅིག་ཤོས་ཀྱི་ཕྱག་གསུམ་ལ་ཌམྲུ་དང་ཐོད་པ་དང་ཁཊྭཱཾ་ག་ཡོད་པའོ། །མེ་ལོང་མ་དང་། རོ་མ་དང་། རེག་མ་དང་། ཆོས་མ་རྣམས་ཀྱི་ཁ་དོག་ནི་དཀར་པོ་དང་། དམར་པོ་དང་། ལྗང་གུ་དང་། དཀར་པོ་སྟེ། ཞལ་གཅིག་མ་ཕྱག་བཞིའི་དང་པོས་མེ་ལོང་དང་། རོའི་སྣོད་དང་། སྣ་ཚོགས་པའི་གོས་དང་། ཆོས་འབྱུང་བསྣམས་པའོ། །ཕྱག་གཞན་གསུམ་གྱིས་ཌམྲུ་དང་། ཐོད་པ་དང་། ཁཊྭཱཾ་ག་བཟུང་[4] བའོ། །

དེའི་རྗེས་ལ་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་རྐང་པ་བརྒྱད་པའི་སྔགས་ཀྱིས་བསྟོད་ནས། སྡིག་པ་བཤགས་པ་དང་། བསོད་ནམས་ལ་རྗེས་སུ་ཡི་རང་བ་དང་། རྒྱལ་བ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པར་བཞེད་པ་ལ་ཡུན་རིང་དུ་བཞུགས་པའི་གསོལ་བ་གདབ་པ་དང་། [5] ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་བར་བསྐུལ་བ་དང་། རང་གི་བསོད་ནམས་ཡོངས་སུ་བསྔོས་ཏེ། བླ་ན་མེད་པའི་མཆོད་པ་བདུན་བྱས་ནས་དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་སྐྱབས་སུ་འགྲོ་བ་དང་། རྒྱལ་བའི་ལམ་བསྟེན་པ་དང་། བདག་ཉིད་ཀྱི་ལུས་[6] དབུལ་བ་དང་། སེམས་བསྐྱེད་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་བུ་གཅིག་པ་ལྟར་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དང་རོ་གཅིག་པའི་བདེ་བ་ཆེན་པོ་ལ་སྦྱོར་བར་འདོད་པས་བྱམས་པའོ། །སྡུག་བསྔལ་ལས་གདོན་པར་འདོད་པའི་རྣམ་པ་ནི་སྙིང་རྗེའོ། །དེ་ལས་སྐྱེས་པའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་དང་། ལོངས་སྤྱོད་དང་། དབང་ཕྱུག་རྣམས་མི་འབྲལ་བར་འདོད་པའི་རྣམ་པ་ནི་དགའ་བའོ། །ཐམས་ཅད་དུ་ཆགས་སྡང་དང་བྲལ་བས་ཕ་རོལ་ལ་ཕན་པའི་ཆོས་ཉིད་ལ་ཤུགས་ཀྱིས་[7] རབ་ཏུ་ཞུགས་[8] པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་བཏང་སྙོམས་བསྒོམས་ཏེ། བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚོགས་བསགས་ལ། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་

---

༡ གསེར་ ◦ ཀྱིས། ༢ གསེར་ ◦ གིས། ༣ གསེར་ ◦ སྐོང་། ༤ གསེར་ ◦ གཟུང་། ༥ རྒྱ་དཔེར་ ◦ (བུདྡྷ) སངས་རྒྱས་ཀྱི། ༦ རྒྱ་དཔེར་ ◦ (ཨཱཏྨབྷཱ) བདག་ཉིད་ཀྱི་དངོས་པོ། ༧ རྒྱ་དཔེར་ ◦ ཕ་རོལ་……………ཤུགས་ཀྱིས་བར་མེད། ༨ གསེར་ ◦ བཞུགས།

ཚོགས་འཕེལ་བར་བྱ་བའི་ཆེད་དུ། ཨོཾ་སྭ་བྷཱ་ཝ་ཤུདྡྷཿ སརྦ་དྷརྨཱཿ སྭ་བྷཱ་ཝ་ཤུདྡྷོ྅ཧཾ[༡] ཞེས་བྱ་བ་བརྗོད་ཅིང་[༢] དེའི་དོན་དྲན་པ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་སོ། །དེ་ལ་ཨོཾ་སྭ་བྷཱ་ཝ་ཤུདྡྷཿ སརྦ་དྷརྨཱཿ ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཟུང་བ་རྣམ་པར་དག་པའོ། །སྭ་བྷཱ་ཝ་ཤུདྡྷོ྅ཧཾ[༣]། ཞེས་པ་ནི་འཛིན་པ་རྣམ་པར་དག་པའོ། །

སྒྱུ་མ་མཁན་གྱིས་སྒྱུ་མ་བྱས། །
བསྒྱུས་པར་གྱུར་པ་དེ་ཡི་[༤] ཚེ། །
ཅུང་ཟད་ལུས་པ་ཡོད་མིན་ལྟར། །
ཆོས་རྣམས་ཀྱི་[༥] ན་ཆོས་ཉིད་དོ། །ཞེས་གསུང་རབ་ལས་སོ། །

ཁམས་གསུམ་དང་སྤྱན་དྲངས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་རྣམས་སྣང་བ་ཙམ་གྱི་རང་······བཞིན་གྱིས་[༦] འོད་གསལ་ལ་གཞུག་གོ །རང་ཉི་མ་ལ་ཉི་མ་བཾ་ལ་བཾ་ཟླ་ཚེས་ལ་ཟླ་ཚེས་ཐིག་ལེ་ལ་ཐིག་ལེ་ནཱ་ད་ལ། དེའི་རྟོགས་པ་ཡང་། ཨོཾ་ཤཱུ་ནྱ་ཏཱ་ཛྙཱ་ན་བཛྲ་སྭ་བྷཱ་ཝ་ཨཱཏྨ[༧]ཀོ྅[༨]ཧཾ། ཞེས་བརྗོད་ཅིང་དོན་དྲན་པས་སྦྱང་བར་བྱའོ། །སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་[༩] ཡེ་ཤེས་ཁོ་ནར་དབྱེར་མི་བྱེད་[༡༠] པས་ཇོ་ཛེའོ། །དེའི་རང་བཞིན་ནི་བདག་ཉིད་དེའི་རང་བཞིན་ཡིན་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་ནས་སྔོན་གྱི་སྨོན་ལམ་གྱི་སྟོབས་ཀྱིས་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལས་ལངས་ནས། རང་གི་སེམས་ཁོ་ན་བརྩེགས་མར་[༡༡] ཡཾ་རཾ་བཾ་ལཾ་རྣམས་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་གཞུ་དང་གྲུ་གསུམ་དང་ཟླུམ་པོ་དང་གྲུ་བཞིའི་[༡༢] རྣམ་པ་ཡིས་སྔོན་པོ་དང་དམར་པོ་དང་དཀར་པོ་དང་སེར་པོའི་ཁ་དོག་སྟེ། མཐའ་གཉིས་སུ་གཡོ་བའི་བ་དན་དང་། འབར་བ་དང་། ཐུམ་པ་དང་། རྡོ་རྗེ་རྩེ་གསུམ་པས་[༡༣] ཟུར་བཞི་མཚན་པའི་རླུང་དང་མེ་དང་ཆུ་དང་

༡ གཞེར་° ྅ཧཾ་མེད། ༢ གཞེར་° ཅིག ༣ གཞེར་° ྅་རྟགས་འདི་མེད། ༤ གཞེར་° དེའི། ༥ གཞེར་° ཀྱིས། ༦ གཞེར་° གྱི། ༧ གཞེར་° ཨཏྨ། ༨ གཞེར་° ྅་རྟགས་འདི་མེད། ༩ གཞེར་° ཀྱིས། ༡༠ གཞེར་° ཙོ་° དབྱེར་མི་ཕྱེད་པ། ༡༡ གཞེར་° བརྩེག་མར། ༡༢ གཞེར་° གྲུབ་བཞིའི། ༡༣ གཞེར་° གསུམ་པ།

སའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་རང་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་བསམ་མོ། །དེའི་སྟེང་དུ་སྃ་ཡིག་ལས་ཡང་དག་པར་བྱུང་བའི་གྲུ་བཞི་པ་ལྗོག་བརྒྱད་དང་ལྡན་པ། ཤར་དང་། ལྷོ་དང་། ནུབ་དང་བྱང་གི་ཕྱོགས་རྣམས་ལ་དཔལ་དང་བཻཌཱུརྻ་དང་ཤེལ་དང་གསེར་གྱི་རང་བཞིན་གྱི་རི་རབ······བསྒོམས་ནས། དེ་ནས་ཨོཾསུམྦྷནིསུམྦྷཧཱུྃཧཱུྃཕཊ[1]། ཨོཾགྲྀཧྞགྲྀཧྞཧཱུྃཧཱུྃཕཊཨོཾགྲྀཧྞཱཔཡགྲྀཧྞཔཡཧཱུྃཧཱུྃ[2]ཕཊ། ཨོཾཨཱནཡཧོབྷགཝཱནབཛྲ[3]ཧཱུྃཧཱུྃཕཊ། ཅེས་[4] བྱ་བའི་སྔགས་བཞི་གཡོན་པའི་མཐེ་བོ་[5]དང་། མཛུབ་མོ་བརྡབས་[6]པ་སྦྱོན་དུ་འགྲོ་བས་བརྗོད་ལ། ནག་པོ་དང་ལྗང་གུ་དང་དམར་པོ་དང་། སེར་པོས་[7]ཚངས་པའི་གནས་ནས་སའི་འོག་གི་བར་དུ་ཁྱབ་པའི་འབར་བའི་ལུས་ཅན་པོར་ཤར་དང་བྱང་དང་ནུབ་དང་[8]ལྷོ་འི་ཕྱོགས་རྣམས་སུ···སུམྦྷནི་ལ་སོགས་པའི་སྔགས་ཀྱི་འོད་ཟེར་གྱིས་རྒྱ་ཆེ་བ་ཇི་ཙམ་འདོད་པ་དང་། རྡོ་རྗེའི་གུར་གྲུ་བཞི་པ་ཡང་བསྒོམ་[9]པར་བྱའོ། །ཨོཾབཛྲཔཉྫ[10]ཀརཧཱུྃབཾཧཱུྃ་ཞེས་བརྗོད་ནས་དབེན་པར་བྱའོ། །དེ་དང་དུས་མཉམ་པ་ཁོ་ནར་ཧཱུྃ་ཡིག་ལས་སྐྱེས་ཤིང་དེས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའི་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་ཨོཾམེདིནཱིབཛྲབྷཝབཛྲབནྡྷཧཱུྃ[11]ཞེས་བརྗོད་ནས་ས་གཞི་ས་འོག་གི····བར་དུ་སྣ་[12]ཚོགས་རྡོ་རྗེའི་རང་བཞིན་དུ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པར་བྱའོ། །

རྡོ་རྗེ་དེའི་འོད་ཟེར་གྱིས་ཨོཾབཛྲཤརཛྭ[13]ལཧཱུྃསཾཧཱུྃ། ཞེས་བརྗོད་ནས་རྡོ་རྗེ་ཙེ་ལྔ་པའི་རྣམ་པ་ཤིན་ཏུ་སྲ་བ་དང་། སྟེང་དུ་མདའི་དྲ་བའོ། །དེའི་འོག་ཏུ་ཨོཾབཛྲཔཉྫརཧཱུྃབཾཧཱུྃ་ཞེས་བརྗོད་ནས་རྡོ་རྗེའི་གུར་རོ། །ཨོཾབཛྲབིཏནཧཱུྃཁཾཧཱུྃ་ཞེས་བྱ་བ་བརྗོད་པས་གནས་ཇི་ལྟ་བར་རྡོ་རྗེའི་བླ་རེའོ། །ཨོཾབཛྲཛྭལཨནལཀཧཱུྃཧཱུྃཧཱུྃ་ཞེས་བྱ་བ་བརྗོད་ནས་རྡོ་རྗེ་འབར་བ་བསམ་པར་བྱའོ། །དེའི་རྗེས་སུ་སུམྦྷ་ནི[14]ལ་སོགས་པའི་སྔགས་བཞི་ལས་གྲུབ་པའི་ཁྭ་གདོང་མ་ལ་སོགས་པའི་ལྷ་མོ་བཞི་དང་། དེ་ཉིད་ཀྱི་ཚེ་སྔགས་གཉིས་ཀྱི་འོད་ཟེར་ལས་

1 གསེར° སུམྦྷནིསུམྦྷནིཧཱུྃ། 2 གསེར° ཧཱུྃ་ཕུ། 3 རྒྱ་དཔེར° བྷནྡུ་རཛ། 4 གསེར° ཞེས། 5 གསེར° བོང་། 6 གསེར° བརྡབ། 7 གསེར° སེར་པོ་ཡིས། 8 གསེར° ནུབ་དང་མེད། 9 གསེར° བསྒོམས། 10 གསེར° པཀ 11 རྒྱ་དཔེར° ཧཱུྃ། 12 གསེར° བར་གསུམ། 13 གསེར° ཛ 14 རྒྱ་དཔེར° སུམྦྷ་ལ་སོགས།

གྲུབ་པའི་གཤིན་རྗེ་བདུན་མ་ལ་སོགས་པའི་ལྷ་མོ་བཞིའོ།[1] །འདི་དག་རྣམས་ཞལ་གཅིག་ཕྱག་གཉིས་མ་ལྟེ་བ་མན་ཆད་ཕུར་བུའི་རྣམ་པ་ཅན། ཕྱག་གཡས་པས་རྡོ་རྗེའི་ཐོ་བ་བསྣམས་པ། གཡོན་པའི་ཕྱག་གིས་རང་གི་གཟུགས་ཀྱི་རྣམ་པའི་ཕུར་བུ་བསྣམས་པ། སྦྱོར་བའི་སྦྱོར་བས་ཕྱོགས་བཅུར་སོང་བས་བགེགས་ཀྱི་ཚོགས་བཀུག་ནས་རྐང་གི་སྟྲ་རིང་པོ······བཙུད་པས་གྲུབ་པའི་རྡོ་རྗེའི་ར་བ་དང་ཉེ་བའི་བར་ཕྱོགས་དང་མཚམས་རྣམས་སུ་དོང་གི་ནང་དུ་བཅུག་ལ། ཨོཾ་ཀླཱ་ཀླཱ་[2] ཀླ་ད་ཡ་ཀླ་ད་ཡ། སརྦཏཐཱགཏ[3]ནཊཊཀཱིལཡཀཱིལཡསརྦཔཱཔཾཕཊཕཊ། ཧཱུྃཧཱུྃཧཱུྃབཛྲཀཱིལཡབཛྲདྷརོཨཱཛྙཱཔཡཏིསརྦབིགྷྣཱནྐཱཡབཱཀྩིཏྟ[4] བཛྲཀཱིལཡཧཱུྃཕཊ[5]། ཅེས་བྱ་བ་ཕུར་བུ་གདབ་པའི་[6]སྔགས་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་ཕུར་བུ་གདབ་བོ།། །ཨོཾབཛྲམུདྒརབཛྲཀཱིལཡཨ[7]ཀཊཡཧཱུྃཕཊ་ཅེས་བྱ་བ་བརྡུང་བའི་སྔགས་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་བརྡུང་བར་བྱའོ། །ཕུར་བུ་གདབ་པ་དང་བརྡུང་བ་གཉིས་ཀྱིས་བགེགས་ཀྱི་ཚོགས་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་[8]དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་རོ་གཅིག་པར་མོས་པར་བྱའོ། །ཡང་བགེགས་ལུས་པ་རྣམས་[9]ཚར་བཅད་ནས་ལྷགས་རི་ལ་ཐིམ་པ་དང་། རྒྱ་ལ་རྒྱ་བརྡབས་པ་ལས་ཐིགས་པ་འབྱུང་བའི་ཚུལ་གྱིས་མཚམས་བཅིང་[10]བའི་དོན་དུ་ཀླུམ་པོའི་རྡོ་རྗེ་དང་པདྨ་དང་འཁོར་ལོའི་ར་བ་རྣམས་བསམ་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་བགེགས་ཚར་བཅད་པའི་རྣམ་པར་དག་པས་རྡོ་རྗེའི་ར་བ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་མཚམས་མེད་ཅིང་དུས་བུ་གཅིག་ཏུ་གྱུར་པས་ཐམས་ཅད་དུ་འགྲོ་བ་ལ་བགེགས་མེད་པར་མོས་པར་བྱའོ། །

དེ་ནས་རྡོ་རྗེ་ར་བའི་[11]དབུས་སུ་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱི་[12]ཆོས་འབྱུང་གི་[13]རྣམ་པ་ཁ་ཡངས་ལ་རྩ་བ་ཕྲ་བ་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །དེའི་དབུས་སུ་སྣ་ཚོགས་པདྨ་དང་

༡ ཀྱུ་དཔེར་。(ཅོན་ཏ་ཡེ་ཏ) བསམ་པར་བྱའོ། ༢ གསེར་。ཀླཱཿཀླཱཿ། ༣ ཅོ་。ཏཐཱ། ༤ གསེར་。ནཱཀ་ཊཊཱ། ༥ ཀྱུ་དཔེར་。ཏུ། ༦ གསེར་。གང་བའི། ༧ གསེར་。ཨཱ ཀྱུ་དཔེར་。ཀཱིལམུཀཊཡ། ༨ གསེར་ ཆེན་པོ་ནི། ༩ གསེར་。རྣམ། ༡༠ གསེར་。བཅིངས། ༡༡ ཀྱུ་དཔེར་。(བཛྲཙུཛྲ) རྡོ་རྗེ་ཕུར། ༡༢ གསེར་。གྱིས། ༡༣ ཀྱུ་དཔེར་。(ཛྙཱནཨཱབེཤ) ཆོས་འབྱུང་གི་ཨེ་ཡིག

སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་ལ་གནས་པའི་བཾ་ཏྲཱཾ་[1] ཡིག་ལས་བྱུང་བའི་རྣམ་སྣང་རིགས་མ་དང་བཅས་པའི་··· བདག་ཉིད་ཀྱི་ཞལ་[2] ཡས་ཁང་ངོ་། །སོ་སོ་འི་སྐྱེ་བོ་དང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་དེ་བཞིན་ཉིད་གཅིག་པ་ཉིད་ཀྱི་[3] མཉམ་པའི་ཕྱིར་གྲུ་བཞི་མཉམ་པའོ། །དྲན་པ་ཉེ་བར་བཞག་[4] པ་དང་ཡང་དག་པར་སྤོང་བ་དང་། རྫུ་འཕྲུལ་གྱི་རྐང་པ་དང་དབང་པོ་རྣམ་པར་དག་པས་སྒོ་བཞིའོ། །ལམ་ཡན་ལག་བརྒྱད་རྣམ་པར་དག་[5] པས་ཀ་བ་བརྒྱད་ཀྱིས་མཛེས་པ། དཔའ་བར་འགྲོ་བ་དང་ནམ་མཁའ་མཛོད་དང་དྲི་མ་མེད་པའི་ཕྱག་རྒྱ་དང་སེང་གེ་རྣམ་པར་རོལ་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་བཞིའི་རྣམ་པར་དག་པས་འདོད་ཡོན་[6] གྱི་སྣམ་བུ་བཞིས་བསྐོར་···བའོ༔ ༔བསམ་གཏན་བཞི་[7] རྣམ་པར་དག་པའི་རྟ་བབས་བཞིས་བརྒྱན་པའོ། །བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་བདུན་རྣམ་པར་དག་པས་དྲ་བ་དང་དྲ་ཕྱེད་དང་ཉི་ཟླ་དང་བ་དན་དང་མེ་···ལོང་དང་རྔ་ཡབ་ཀྱིས་མཛེས་པའོ། །འདིར་བསྡུས་ནས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་དེ་དང་དེའི་རྣམ་པར་དག་པས་མཚན་ཉིད་དེ་དག་དང་ལྡན་པའོ། །དེའི་ལྟེ་བར་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཆོས་བརྒྱད་ཀྱིས་མ་གོས་པའི་རྣམ་པར་དག་པས་པཾ་ཡིག་དམར་པོ་ལས་སྐྱེས་པའི་པདྨ་འདབ་མ་བརྒྱད་པའི་ཟེའུ་འབྲུ་ལ་མ་རིག་པའི་མུན་པ་འཇོམས་པ་རྣམ་པར་དག་པས་[8] ཉི་མའི་······དཀྱིལ་འཁོར་ལ་ཉིས་འགྱུར་གྱི་ཨཱ་ལི་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་མེ་ལོང་ལྟ་བུའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི···རང་བཞིན་གྱི་ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་དང་། ཀ ཀྵ ད ཧྨ ཡ ལ་དང་[9] བཅས་པའི་ཀཱ་ལི་ཉིས་འགྱུར་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱི་[10] ཉི་མའི་དཀྱིལ་···འཁོར་གཉིས་བརྩེགས་པ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་ཁ་སྦྱོར་གྱི་དབུས་སུ་བཾ་[11] ཡིག་དམར་པོ······

---

1 གསེར་༠ བྲཱྃ རྒྱ་དཔེར་༠ ཏྲཱྃ། 2 གསེར་༠ གཞལ། 3 གསེར་༠ ཀྱི་མེད། 4 སྡེ་༠ གཞག 5 གསེར་༠ རྣམ་པར་དག་པ་མེད། 6 རྒྱ་དཔེར་༠ འདོད་ཡོན་མེད། 7 གསེར་༠ དག་པའི། 8 གསེར་༠ འཇོམས་པར་དག་པས། 9 གསེར་༠ ཀཏྐྵཡཀ། 10 གསེར་༠ གྱིས། 11 གསེར་༠ ཅོ་༠ རྒྱ་དཔེར་༠ བཾ་ཞེས་འདུག་པ་ལྟར་བཞག སྡེ་༠ པཾ།

ལས་སྐྱེས་པའི་རྡོ་རྗེའི་ལྟེ་བ་ལ་[1] གནས་པའི་ཉི་མ་ལ་གནས་པའི་བཾ་གི་ས་བོན་སོ་སོ་ར······ རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནོ། །དེ་ལས་བྱུང་བའི་འོད་ཟེར་ཕྱོགས་བཅུར་འཕྲོས་པས་བཅོམ་ལྡན་འདས་མའི་རྣམ་པས་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་བྱས་ནས་ཡང་དེ་ཉིད་ལ་བསྡུས་ ལ་བྱ་བ་གྲུབ་པའི་ཡེ་ཤེས་སོ། །དེ་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་བདག་ཉིད་ཤིན་དུ་ རྣམ་པར་དག་པ་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི[2] ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རང་བཞིན་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་རྡོ་རྗེ······ ཕག་མོ་འོ། །ཆགས་པ་ཆེན་པོ་རྣམ་པར་དག་པས་མི་རྟོག་སེ་འབྲུ[3] ལྷ་བུ་དམར་པོ་འོ།། བདེན་པ་གཉིས་རྣམ་པར་དག་པས་ཕྱག་གཉིས་པའོ། །གཡས་སྡིགས་མཛུབ[4] དང་བཅས་ དེ་གྱེན་དུ་བསྒྲེངས་པས་གདུག་པ་རྣམས་ལ་སྡིགས་པར[5] བྱེད་ཅིང་ཡེ་ཤེས་ལྔ[6] རོ་གཅིག་ དུ་གྱུར་པ་རྣམ་པར་དག་པས་རྡོ་རྗེ་དམར་པོ་བསྣམས་པའོ། །[7]ཐུར་དུ་རྩེ་གཅིག་པ་གྱེན་ དུ་རྩེ་ལྔར་ཡོད་པ་ནག་པོ་ཡུ་བ་དང་བཅས་པ་སྐམ་པོ་དང་རླྀན་པའི་མགོ་བོ་དང་། སྣ་ཚོགས་ རྡོ་རྗེ་དང་གསེར་གྱི་བུམ་པའི་རྩ་བ་ནས་འཕྲེན་པ། གཡོན་ཁའི[8] སྐྲ་དང་བཅས་པའི་སྣ་ ཚོགས་ཀྱི་བ་དན་དང་ལྡན་པས་མཛེས་པའི་ཐབས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཁ་ཊྭཱཾ་ག་དཀར་པོ་དབྱུང··· པའི་དྲུང་དུ་བརྟེན་པའོ། །བདེ་བ་ཆེན་པོ་དང་སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོ་རོ་གཅིག་པའི་རང་བཞིན་རྣམ་ པར་དག་པས་ཁྲག་གིས་གང་བའི་ཐོད་པ་བསྣམས་པ། ལོག་པའི་ལྟ་བ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ སྤངས་པས་རྣམ་པར་འགྱུར་བའི་ཞལ་གཅིག་པ། བདུད་བཞི་རྣམ་པར་འཇོམས་པས་ མཆེ་བ་གཙིགས་ཤིང་འཇིགས་སུ་རུང་བ་ལུས་དང་ངག་དང་། ཡིད་ཀྱི[9] རྣམ་པར་དག་ པས་སྙིང་རྗེའི་སྤྱན་དམར་པོ་གསུམ་པ་ཅན་གཉིས་སུ་མེད་པ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་ཕུང་ པོ་བརྒྱད་ཁྲི་བཞི་སྟོང་རྣམ་པར་བསྟན[10] པའི་རྣམ་པར་དག་པས[11] སྐྲ་གྲོལ་བ། འཁོར་ལོ་

---

[1] རྒྱ་དཔེར་ (བཛྲ་སུ་ཁ་ཡནྟྲཀྲ) རྡོ་རྗེ་ཁ་ཚོར་གྱི་དབུས་སུ། [2] གསེར་ཀྱིས། [3] གསེར་ཟེ་འབྲུ། [4] གསེར་སྡིག་མཛུབ། [5] གསེར་སྡིག་པར། [6] སྣེ་ ཡེ་ཤེས་ལ། [7] རྒྱ་དཔེར་ (ཁམེན) གཡོན་གྱིས། [8] གསེར་གཡེར་ཀ [9] གསེར་ཡིད་ཀྱིས། [10] རྒྱ་དཔེར་ (བིཀཱར) རྣམ་པར་འགྲོ་བ། [11] གསེར་མཆེ་བར་དག་པས།

དང་རྣ་རྒྱན་དང་། མགུལ་རྒྱན་དང་། ལག་གདུབ་དང་། ཁ་ཊྭཱཾ་ག་དང་། སྐེ་རགས་
དེ་ཕྱག་རྒྱ་ལྔ་དང་ལྡན་པའོ། །

ཁ་ཅིག་ནི་མགུལ་རྒྱན་དང་། རྣ་རྒྱན་དང་། ལག་གདུབ་དང་། སྤྱི་གཙུག་
གི་འཁོར་ལོའི་རྒྱན་དང་། ཚངས་སྐུད[1]་དང་། ཐལ་བ་སྟེ་ཕྱག་རྒྱ་དྲུག་ཏུ་རབ་ཏུ་གྲགས་[2]
ཞེས་བྱ་སྟེ། དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འདྲེན་པ་མོ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཕྱག་རྒྱ་དྲུག་གིས་རྒྱས་བཏབ་
པའོ་ཞེས་ཟེར་རོ། །ཕྱོགས་ཀྱི་གོས་ཅན་ལང་ཚོ་ལ་[3]བབ་པ་ཉིད་ཀྱིས་གཞོན་ནུ་དང་
བཅས་པ། ཨཱ་ལི་དང་ཀཱ་ལིའི་ཡི་གེ་ལྔ་བཅུའི་རང་བཞིན་རྒྱུ་མ་ལ་[4] བརྒྱུས་པའི་མི་མགོ་
རློན་པའི་ཕྲེང་བ་ཅན། འགྲོ་བ་ལ་སྟོང་པས་ཁྱབ་པར་མཚོན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཞབས་གཡོན་
པ་བསྐུམ་པས་གཡས་མཐོ་ལྡར་བརྐྱང་བའི་སྟང་སྟབས་[5] ཀྱིས་པདྨ་དམར་པོ་འདབ་མ་བརྒྱད་
པའི་སྟེང་གི་ཉི་མ་ལ་རྟག་པ་དང་ཆད་པའི་རྟོག་པའི་རང་བཞིན་གྱི་འཇིགས་རྗེད་དང་དུས་
མཚན་མ་མནན་པ། ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྣང་བ་ལྡན་པས་ཉི་མའི་འོད་
ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཅན། སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱི་[6] འགྲོ་བ་མི་དམིགས་པར་མཉམ་
པས་གཟི་བརྗིད་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པ་ཟླ་མཚན་དང་ལྡན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཁྲག་འཛག་པ། ཁྲག་
གི་ཐོད་པ་འཐོ་བཞིན་པ་འཐུང་བ་ལ་ཆགས་པས་ཁྲག་ལ་དགྱེས་པའོ། །རྡོ་རྗེའི་ཕྲེང་བ་
གཉིས་ཀྱི་དབུས་ན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྔའི་རང་བཞིན་གྱི་ཐོད་པའི་དུམ་བུའི་ཅོད་པན······
བཅིངས་པའོ། །འགྲོ་བའི་དོན་མཛད་པ་ཉིད་ཀྱིས་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེས་མཚན་པའི་ཐོར་ཚུགས་
ཅན།། འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་བསྡུས་པས་མིག་དང་། རྣ་བ་དང་། སྣ་དང་།
ལྗེ་དང་། ལུས་དང་། ཡིད་དང་། ཉོན་མོངས་པ་ཅན་གྱི་ཡིད་དང་། ཀུན་གཞི་
རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྟེ། རྣམ་པར་ཤེས་པ་བརྒྱད་བདག་མེད་པའི་རང་བཞིན་གྱིས་དུར་ཁྲོད་
བརྒྱད་ཀྱི་དབུས་ན་བཞུགས་པར་བསྒོམ་པའོ། །

---

༡ གསེར་༠ སྐུར། ༢ རྒྱ་དཔེར་༠ ཁ་ཅིག་ནས་གྲགས་ཞེས་པའི་བར་ཚིགས་བཅད་དུ་འདུག ༣ གསེར་༠ ལ་ཚོ།
༤ གསེར་༠ སྒྲུ་མ་ལ། ༥ རྒྱ་དཔེར་༠ སྟང་སྟབས་མེད། ༦ གསེར་༠ གྱིས།

གང་ལཱུ་ཡི་[1]པའི་མངོན་པར་རྟོགས་པ་ལས་རྡོ་རྗེའི་གུར་ལ་སོགས་པ་སྤྱང་བའི་[2]ཕྱིར་རྗེས་ཕྱོགས་སུ་སྟོང་པ་བསྒོམ་ངར་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དབང་པོ་རབ་ཀྱི······དབང་དུ་བྱས་པ་སྟེ། དེ་ལ་ནི་སྟོང་པ་ཁོ་ན་བསྟུང་བའི་མཆོག་གོ །འདིར་ནི་སྐྱེ་བོ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྤྱད་[3]པའི་ཆེད་དུ་སྟོང་པ་བསྒོམས་པའི་རྗེས་སུ་གུར་ལ་སོགས་པའི་སྤྱང་···[4]བ་དང་ལྡན་པར་བསྟན་ཏེ། དེ་ནི་མངོན་པར་རྟོགས་པ་མང་པོ་ལས་[5]གོ་རིམས་འདི་ལྟར་མཐོང་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཤར་ལ་སོགས་པའི་འདབ་མ་བཞི་ལ་རིམ་པ་ཛཱ་ལྷ་བས་[6]གཡོན་སྐོར་གྱིས་མཁའ་འགྲོ་མ་དང་། ལཱ་མ་དང་། ཁཎྜ་རོ་ཧཱ་[7]དང་། གཟུགས་ཅན་མ་རྣམས་སྐུ་མདོག་ནག་པོ་དང་། ལྗང་གུ་དང་། དམར་པོ་དང་། སེར་པོ་[8]རྣམས་སོ། །ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཞལ་གཅིག་པ་ཕྱག་བཞི་པའོ། །གཡོན་གྱིས་ཁ་ཊྭཱཾ་ག་དང་ཐོད་པ་བསྣམས་པ། ཌམ་རུ་དང་། གྲི་གུག་གཡས་ཀྱིས་བསྣམས་པ། སྤྱན་གསུམ་པ་ཞལ་མཆེ་བ་གཙིགས་པ་སྐྲ་གྲོལ་བ་གཅེར་བུ་གཡས་བརྐྱང་བ་གཡོན་བསྐུམ་པའི་སྟང་སྟབས་[9]ཅན། ཕྱག་རྒྱ་ལྔ་དང་ལྡན་པ་མགོ་བོ་སྐམ་པའི་ཕྲེང་བ་དང་ལྡན་པ་རྡོ་རྗེའི་ཕྲེང་བས་དབྲལ་བར་ནས་[10]མཚན་པ། ཀེད་པ་[11]གཡེར་ཁའི་སྒྲ་དང་བཅས་པ་ལ་སོགས་པས་བརྒྱན་པར་བསམ་མོ། །མེ་ལ་སོགས་པའི་མཚམས་ཀྱི་འདབ་མ་བཞི་[12]ལ་གཡས་སྐོར་གྱིས་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དང་ཁྲག་དང་བདུད་རྩི་ལྔ་དང་དམར་མེ་ལྔ་དངུལ་ཆུ་ལྟར་བདུད་རྩིར་གྱུར་པས་ཡོངས་སུ་གང་···བའི་པདྨའི་སྣོད་བཞི་དགོད་དོ། །

དེའི་ཕྱི་རོལ་དུ་རྡོ་རྗེ་སྲིན་པོའི་ཕྲེང་བས་བསྐོར་བ་དང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་འཁོར་ལོ···སྲིན་པོ་ཚིབས་བརྒྱད་པའི་ཤར་དང་། བྱང་དང་། ནུབ་དང་ལྷོ་འི་ཚིབས་རྣམས་ལ་ཛཱ་ལནྡྷ་[13]རམྦ་ལ་ཡ་[14]དང་། ཛཱ་ལནྡྷ་ར་དང་། ཨོ་ཊི་[15]ཡན་དང་། ཨརྦུདའི་རང་བཞིན་གྱི་གནས

---

[1] གཞིར་° ལཱུ་ཨི། [2] གཞིར་° བསྲུང་བའི། [3] གཞིར་° བསྟུས། [4] གཞིར་° བསྲུང་། [5] གཞིར་° མང་བ་ལས། [6] གཞིར་° ཛ་ལྷུ་བ། [7] གཞིར་° ཏ། [8] ཀྲུ་དཔེར་° (གོ་ཊ) དཀར་པོ། [9] གཞིར་° རྟང་བརྟབས། [10] གཞིར་° ནས་མེད། [11] གཞིར་° རྐང་པ། [12] ཀྲུ་དཔེར་° བཞི་མེད། [13] སྡེ་° ཛཱ་ལྡི། [14] ཅོ་° གཞིར་° རིམ་ལཡ། [15] གཞིར་° ཨོ་ཊི།

ལ་རབ་ཏུ་གཏུམ་མོ་དང་། གཏུམ་པའི་མིག་ཅན་མ་དང་། འོད་ལྡན་མ་དང་། སྒྲ་ཆེན་མའོ། །མེའི་མཚམས་དང་། བདེན་བྲལ་དང་། རླུང་གི་མཚམས་དང་། དབང་ལྡན་ལ་གོདཱབརཱི་དང་། རཱམེཤྭར་དང་[1]། དེབཱིཀོཊ[2]དང་། མཱལབའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་གནས་དང་། ཉེ་བའི་གནས་ལ་དཔའ་བོའི་བློ་གྲོས་མ་དང་། མིའུ་ཐུང་མ་དང་། འཊྲའི་དབང་ཕྱུག་མ་དང་། ཤིང་གྲིབ་མའོ། །པདྨའི་སྡིང་བ་དམར་པོས་བསྐོར་བའི་གཉིས་པ་གསུང་གི་འཁོར་ལོ་དམར་པོ་རྩིབས་བརྒྱད་པའི་ཤར་དང་བྱང་གི་རྩིབས་གཉིས་ལ་ཀཱམརཱུ་པ་དང་། ཨོཏྲའི་[3]ཞིང་གཉིས་ལ་ཨཻརཱབཏཱི[4] དང་། འཇིགས་བྱེད་ཆེན་མོའོ། །ནུབ་དང་ལྷོའི་ཏྲིཤཀུནི[5] དང་། ཀོསལའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ཉེ་བའི་ཞིང་གཉིས་ལ་རླུང་གི་ཤུགས་ཅན་མ་དང་ཆང་འཐུང་མའོ། །མེ་དང་བདེན་བྲལ་གཉིས་ལ་ཀལིངྒ་དང་[6]། ལཾཔཱཀ་སྟེ་ཚནྡོ་ཧ་གཉིས་ལ་ཤྭ་མ་དེ་བཱི་དང་ཤིན་ཏུ་བཟང་མོའོ། །རླུང་དང་དབང་ལྡན་དུ་ཀཱཉྩི་དང་ཧི་མ་ལ་ཡ་སྟེ་ཉེ་བའི་ཚནྡོ་ཧ་གཉིས་ལ་རྟ་རྣ[7] དང་བྱ་གདོང་མའོ། །གསུམ་པ་སྐུའི་འཁོར་ལོ་དཀར་པོའི་རྩིབས་བརྒྱད་པ་འཁོར་ལོའི་ལྡིང་བ་དཀར་པོས་བསྐོར་བའི་ཤར་དང་བྱང་གི་རྩིབས་ལ་པྲེཏཔུརཱི་དང་གྲྀཧདེབཏ་སྟེ་འདུ་བ་ཅན་གཉིས་ལ། འཁོར་ལོའི་ཤུགས་ཅན་མ་དང་། དུམ་སྐྱེས་མའོ། །ནུབ་དང་ལྷོའི་སཽརཥྚ་དང་། སུཝརྞདྭཱིཔ་སྟེ་ཉེ་བའི་འདུ་བ་ཅན་ལ། ཆང་འཐུང་མ་དང་། འཁོར་ལོའི་གོ་ཆ་མའོ། །མེ་དང་བདེན་བྲལ་ལ་[8]ནགར་[9]དང་། སིནྡྷུ་སྟེ་དུར་ཁྲོད་ལ་ཤིན་ཏུ་དཔའ་མོ་དང་། སྟོབས་ཆེན་མོ་དང་། རླུང་དང་དབང་ལྡན་དུ་མརུ་དང་། ཀུལུཏ་སྟེ་ཉེ་བའི་དུར་ཁྲོད་ལ་འཁོར་ལོས་[10]སྒྱུར་མ་དང་། བརྩོན་འགྲུས་ཆེན་མོའོ། །རབ་ཏུ་གཏུམ་མོ་ལ་སོགས་པའི་ལྷ་མོ་དེ་དག་ཞལ་གཅིག་ཕྱག་གཉིས་པའི་གཡོན་གྱིས་ཁྲག་གིས་བཀང་བའི་ཐོད་པ་དང་། གཡས་

༡ གསེར་° རཱམེ་དང་ཤྭར་དང་། ༢ གསེར་° བིཀོཊ། ༣ གསེར་° ཨོཌའི། ༤ གསེར་° ཨཻརཱབཏཱི། ༥ གསེར་° ཏྲིཀུནི། ༦ གསེར་° ཀལིམག ༧ སྡེ་° རྣམ། ༨ གསེར་° བདེན་བྲལ་དང་། ༩ གསེར་° ནགར། ༡༠ གསེར་° འཁོར་ལོ།

ཕྱོགས་མཛུབ་དང་བཅས་པས་གཏུག་པ་ཅན་ཚར་གཅོད་པའི་ཕྲ་གུག་ང་རྣམས་པའོ། །འདི་དག་གི་རྒྱན་ལ་སོགས་པའི་ཆ་ལུགས་གཞན་ནི་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་རྟོགས་པ་བཞིན་ནོ། །སྒོ་བཞི་ལ་ཁྭ་གདོང་མ་དང་། འུག་གདོང་མ་དང་། ཁྱི་གདོང་མ་དང་། ཕག་གདོང་མ་རྣམས་ནི་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ། །འདི་རྣམས་ཀྱི་གདོང་པ་ནི་མིང་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པའོ། །མཚམས་བཞི་ལ་གཤིན་རྗེ་བརྟན་མ་དང་། གཤིན་རྗེ་ཕོ་ཉ་མ་དང་། གཤིན་རྗེ་མཆེ་བ་ཅན་མ་དང་། གཤིན་རྗེ་འཇོམས་མ་སྟེ་མའི་གདོང་པ་ཅན་ནོ། །གཡས་དང་ཅིག་ཤོས་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་[1] ལྷ་མོ་གཉིས་ཀྱི་རྒྱུའི་གཡས་དང་ཅིག་ཤོས་ཀྱི་ཕྱེད་··· ལྟ་བུར་སྐུ་ཕྱེད་པའོ། །བརྒྱད་ཅར་[2] ཡང་རོ་འི་གདན་ལ་བཞུགས་པ་དང་། ཆ་ལུགས་ལྷག་མ་རྣམས་[3] མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་ཁོ་ན་བཞིན་ནོ། །ལྷ་མོ་དེ་རྣམས་ཀུང་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་གཟུབ་པ་དང་དུས་མཉམ་པ་ཁོ་ནར་སྐད་ཅིག་རྫོགས་[4] པར་བལྟའོ། །

དེ་ནས་གོ་ཆ་གཉིས་བྱས་ནས། །
ཡེ་ཤེས་འཁོར་ལོ་བསྒོམ་པར་བྱ[5]། །ཞེས་འདི་པས་གསུངས་

པའི་སྤྲང་བའི་[6] གོ་ཆ་བགོ་བར་བྱ་[7] སྟེ། བཾ་ཧྲཱུྃ[8]། ཧྲཱིཾ། ཁཾ། ཨཿཧཱུཾ[9]། ཧའི་ཡི་གེ་དག་གིས་སྙིང་མཆེད་དག་པར་བྱས་ནས་ཕག་མོ་དང་། གཤིན་རྗེ་མ་དང་། རྨོངས་བྱེད་མ་དང་། བསྐྱོད་[10] བྱེད་མ་དང་། སྐྲག་བྱེད་མ་དང་། གདུམ་མོ་སྟེ་ལྷ་མོ་དྲུག་གི་སྔགས་ཀྱིས་རང་རང་[11] གི་ལྷའི་ཁ་དོག་དང་མཚུངས་པའི་གོ་ཆ་བགོ་[12] བར་བྱའོ། །ལྟེ་བ་ལ་ཨོཾ་བཾ། སྙིང་གར་ཧཾ་ཡོཾ[13]། ཁ་ལ་ཧྲཱིཾ་མོཾ[14]། མགོ་བོ་ལ་ཧྲཱིཾ་ཧྲཱིཾ[15]། སྤྱི་གཙུག་

༡ གསེར་ ○ ཀྱིས། ༢ གསེར་ ○ བརྒྱད་ཆར། ༣ གསེར་ ○ རྣམས་ནི། ༤ གསེར་ ○ ཚོགས། ༥ རྒྱ་དཔེར་ ○ (བིཀྲ་བནྡྷ) རྣམ་བསྒོམ་བྱ། ཚིག་ས་བཅད་འདི་ལྷག་མར་འདུག ༦ གསེར་ ○ སྤྲང་བའི་ མེད། ༧ གསེར་ ○ བསྒོམ་པར་བྱ། ༨ གསེར་ ○ ཧྲཱུྃ། ༩ གསེར་ ○ ཧཾ། ༡༠ གསེར་ ○ སྐྱོད། ༡༡ གསེར་ ○ རང་ མེད། ༡༢ གསེར་ ○ བསྒོམ། ༡༣ རྒྱ་དཔེར་ ○ ཧཾ་ཡཱུྃ། ༡༤ རྒྱ་དཔེར་ ○ ཧྲིཾ་མཾ། ༡༥ གསེར་ ○ ཧེཾ་ཧཾ།

ལ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ། ཡན་ལག་ཐམས་ཅད་ལ་མཚོན་ཆ་ཕཊ་ཕཊ། ཡང་ན་ལྷ་དང་སྔགས་[1]དེ་དང་ དེ་ལས་གྲུབ་པའི་གནས་དེ་དང་དེར་ལྷ་དེ་དག་ཁོ་ན་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་ཕག་མི་[2] དམར་མོ་དང་། སྔོན་མོ་དང་། ལྗང་གུའི་ཞལ་ཅན། གཡོན་པ་ལ་ཁ་ཊྭཱཾ་ག་དང་། ཐོད་པ་དང་། ཞགས་པ་དང་། གཡས་ཀྱིས་ལྕགས་ཀྱུ་དང་། གྲི་གུག་དང་ཚངས་པའི་ མགོ་བོ་བསྣམས་པ། ག་ཤིན་རྗེ་མ་དང་། རྨོངས་བྱེད་མ་དང་། བསྐྱོད་བྱེད་[3]མ་དང་། སྐྲག་བྱེད་མ་དང་། གདུམ་མོ་རྣམས་ཀྱི་ཁ་དོག་ནི་སྔོན་མོ་དང་། དཀར་མོ་དང་། ལྗང་ གུ་དང་། དུད་ཀ་སྟེ། ཕྱག་བཞིའི་གཡོན་གྱིས་ཐོད་པ་དང་བཅས་པའི་ཁ་ཊྭཱཾ་ག་དང་། དྲིལ་བུ་བཟུང་བ་དང་། གཡས་ཀྱིས་ཅང་ཏེའུ་དང་གྲི་གུག་བསྣམས་པ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་ སྐྲ་གྲོལ་བ་གཅེར་བུ་སྤྱན་གསུམ་པ་གཡོན་བསྐུམ་པ་གཡས་བརྐྱང་བའི་སྟང་སྟངས་ཀྱིས་ བཞུགས་པར་བལྟའོ། །དེའི་རྗེས་ལ་དཔྲལ་བ་དང་། མགྲིན་པ་དང་། སྙིང་གར་ཨོཾ་ ཨཱཿཧཱུྃ་[4]གི་ཡི་གེ་དཀར་པོ་དང་། དམར་པོ་དང་། སྔོན་པོ་རྣམས་བསྒོམ་པར་བྱའོ། ། དེ་ནས་སྙིང་གའི་དབུས་སུ་པདྨ་དམར་པོ་འདབ་མ་བརྒྱད་པ་ལ་གནས་པའི་ཉི་མའི་དཀྱིལ་ འཁོར་གྱི་སྟེང་དུ་རྡོ་རྗེ་དམར་པོ་འི་ལྟེ་བ་ལ་ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་པའི་ས་བོན་བཾ་ གྱི་[5]འོད་ཟེར་གྱིས་ཕྱོགས་བཅུ་ན་བཞུགས་པའི་དབང་ཕྱུག་གི་དཔའ་མོ་[6]རྣམས་སྤྱན་བསྡུས་ པའི་[7]ཡེ་ཤེས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་འི་གཟུགས་ཛཿ ཞེས་པས་སྤྱན་དྲངས་[8]ལ་པི་ལྦང་མ་[9]ལ་ སོགས་པའི་ལྷ་མོ་བཅུ་དྲུག་གིས་མཆོད་ཡོན་ལ་སོགས་པ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་མཆོད་ལ། པཾ་ ཡིག་བརྗོད་པ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་དྲ་བའི་ཕྱག་རྒྱ་བཅིངས་ནས་དཔྲལ་བའི་དབུས་སུ་གཡོན་ སྐོར་གྱིས་བསྐོར་ཞིང་། ཧཱུྃ་[10]ཡིག་གིས་རང་དམ་ཚིག་གི་འཁོར་ལོ་ལ་ཆུ་ལ་ཆུ་ཐིམ་པ་ལྟར་ གཞུག་པར་བྱ་སྟེ། པཾ་[11]ཡིག་གིས་བཅིངས་ལ་ཧོཿཡིག་གིས་དགྱེས་པར་བྱའོ། །ཨོཾ་ཡོག

---

[1] རྒྱ་དཔེར། ([illegible]) ལྷ་དང་སྔགས་དབྱེར་མེད་པར། [2] གསེར། མོ་དང་། [3] གསེར། བྱེད་མེད།
[4] རྒྱ་དཔེར། ནི། [5] གསེར། གི [6] རྒྱ་དཔེར། (वीरवीरेश्वरी) དཔའ་བོ་དང་དཔའ་མོ་འི་དབང་ཕྱུག་གི
[7] རྒྱ་དཔེར། ([illegible]) འགྱུར་བའི། གསེར། བསྡུ་བའི། [8] རྒྱ་དཔེར། ([illegible]) དེ་ལས་བྱུང་བའི།
[9] གསེར། མ་མེད། [10] རྒྱ་དཔེར། ནི། [11] གསེར། ཙོ། བཾ།

ཤྲཱིཛྙཱཿསམྦྷཝཛྲཱཡོགཤྲཱིཛྙཱཙཀྲཱི། ཞེས་བརྗོད་ལ། ཡེ་ཤེས་འཁོར་[1]ལོ་དང་དུས་མཉམ་པར་སྤྱན་དྲངས་པའི་རྣམ་པར་རོལ་པའི་རྡོ་རྗེ་མ་རྣམས་ཀྱིས་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བདུད་རྩིས་བཀང་བའི་ཐོད་པ་དང་རྨང་བསྣམས་པ་ལ། སྙིང་གའི་ས་བོན་ལས་བྱུང་བའི་པི་ཝང་མ་ལ་སོགས་པའི་ལྷ་མོ་རྣམས་ཀྱིས་མཆོད་པར་བྱ་སྟེ།

ཇི་ལྟར་བསྒྲུབས་[2]པ་ཙམ་གྱིས་ནི། །
དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀུན་ཁྲུས་གསོལ་ལྟར། །
ལྷ་ཡི་ཆུ་ནི་དག་པ་ཡིས། །
དེ་བཞིན་བདག་གིས་ཁྲུས་བྱའོ། །ཞེས་པས་དེ་རྣམས་ཀྱི་[3]

གཡོན་པའི་ཐོད་པ་ཙང་ཟད་ཡོ་བ་ལས་བྱུང་བའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བདུད་རྩིའི་རྒྱུན་གྱིས་བཀྲུས[4]པས་རང་ཉིད་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་དུ་བསམ་མོ། །ཆུ་ལྷག་མ་ལས་གྲུབ་པའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་མགོ་བོ་ལ་རྣམ་པར་བསམས་ལ། ཨོཾསམྦྷཝདབྷཱགྱཨཱཏྨཱབྷཱཀྲྀཏ་སམཡ ཤྲཱིཡེཀྵཱུ ཞེས་བྱ་བས་བྱིན་གྱིས་བརླབ་བོ། །དེ་ལ་བཅོམ་ལྡན་འདས་མའི་སྤྱི་བོ[5]་ལ་རིགས་ཀྱི་བདག་པོ་སངས་རྒྱས་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་ནོ། །ཐུགས་དང་གསུང་དང་སྐུའི་འཁོར་ལོ་ལ་བཞུགས་པ་རྣམས་ལ་རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བར་མི་བསྐྱོད་པ་དང་། སྣང་བ་མཐའ་ཡས་དང་། རྟག་པའོ། །དམ་ཚིག་གི་འཁོར་ལོ་ལ་གནས་པ་རྣམས་ཀྱི་ནི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པའོ། །དེ་ནས་བདུད་རྩི་མྱང་བར་བྱ་སྟེ། ཡཾ་ཡིག་ལས་རླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར། དེའི་[6]སྟེང་དུ་རཾ་ཡིག་ལས་སྐྱེས་པའི་མེའི་དཀྱིལ་འཁོར། དེའི་སྟེང་དུ་ཨཿ[7]ཡིག་དཀར་པོ་ལས་སྐྱེས་པའི་པདྨའི་སྣོད་དཀར་

༡ རྒྱ་དཔེར་（ ཛྙཱནཙཀྲ ）ཡེ་ཤེས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་སྤྱན་དྲངས་པའི། ༢ གསེར་ ◦ བསྒྲུབས། ༣ གསེར་ ◦ ཀྱིས། ༤ རྒྱ་དཔེར་ ◦ ཀྲུཿ གསེར་ ◦ རུ་མེད། ༥ གསེར་ ◦ ཅོ་ ◦ སྤྱི་བོར། ༦ རྒྱ་དཔེར་ ◦ (རུ)དེ་ལ། ༧ གསེར་ ◦ ཨ།

པོ༔ མགོ་བོ་གསུམ་ལས་ཐུས་པའི་སྙིང་པོ་གསུམ་ལ་གནས་པ་ལ། ཨོཾ་ཧཾ་ཨཾ་[1]ཁཾ་ཧཱུྃ། ལྃ། མྃ། པྃ། ཏྃ། བྃ།[2] ལས་སྐྱེས་པ་དེས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའི་བདུད་རྩི་ལྔ་དང་སྒྲོན་མ་ལྔ་རྫོགས་པར་བྱས་ལ། རླུང་གིས་བསྐུལ་བའི་མེ་འབར་བའི་དྲོད་ཀྱིས་ས་བོན་གྱི་ཡི་གེ་ལ་སོགས་པ་ཞུ་བས[3] ཉི་མ་འཚར་བའི་ཁ་དོག་ལྟ་བུའི་ཁུ་རང་རང་འཕྲོས་ལ། སྟེང་དུ་མཐོ་གང་པའི་ཚད་ལ་ཧཱུྃ་དཀར་པོ་ལས་སྐྱེས་པའི་ཁ་ཊྭཱྃ་ག་མགོ་ཐུར་ལ་བསྟན་པ་དཀར་པོ་…བདུད་རྩིའི་རང་བཞིན་ལ་རླངས་པ་[4] རེག་པས་ཞུ་བ་ནང་དུ་བབ་[5]པས་ཁུ་བ་དེ་དངུལ་ཆུའི་ཁ་དོག་ལྟར་བསིལ་བར་རྣམ་པར་བསམ་མོ། །ཡང་དེའི་སྟེང་དུ་ཡི་གེ་གསུམ་གོང་ནས་གོང་དུ་བལྟས་ནས་དེའི་འོད་ཟེར་གྱིས་ཁམས་གསུམ་ན་གནས་པའི་བདུད་རྩི་ཐམས་ཅད་དང་བཅས་ཏེ༔ དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་མ་ལུས་པའི་ཐུགས་ཀ་ན་གནས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བདུད་རྩི་བཀུག་ནས་དེ་ཉིད་ལ་བསྟིམ་པ་དང་། ཡི་གེ་གསུམ་ཡང་རིམ་པས་ཞུ་བར་གྱུར་ཏེ་ཡང་ཡི་གེ་གསུམ་གྱིས་ཀྱང་[6] བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་དང་། རང་དང་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལྷ་མོ་རྣམས་ཀྱི་ལྗགས་ལ་ཧཱུྃ་དཀར་པོ་ལས་སྐྱེས་པའི་རྡོ་རྗེ་དཀར་པོ་ནས་ཀྱི་ཚད་ཙམ་གྱི་[7] འོད་ཟེར་……སྦུ་གུ་ཅན་གྱིས་རོལ་བར་བསམ་མོ། །དེ་ནས་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་མཆོད་པའི་སྤྱགས་ཀང་པ་བརྒྱད་པས་བསྟོད་པར་བྱའོ། །གལ་ཏེ་དེ་ཙམ་གྱིས་[8] དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་ཆེན་པོ་ལ་ཡུན་[9] རིང་པོར་བརྟན་པར་བྱེད་མི་ནུས་ན། དེའི་ཚེ་པདྨའི་ལྟེ་བར་གནས་པ་ཉི་མ་དང་༔ ཟླ་བ་ཁ་སྦྱོར་གྱི་དབུས་སུ་བཾ་གྱི་[10] ས་བོན་ལས་བྱུང་བའི་འོད་ཟེར་རིང་པོ་པད་མའི་སྲིད་བུ་ལྟ་བུ་ལ་སེམས་བརྟན་པར་བྱས་པའི་སྒོ་ནས་རྩ་གཉིས་ལ། སྲོག་རླུང་གི་རྒྱུ་བ་ཡོངས་སུ་བཀལ་བས་དབུས་སུ་ཞུགས་ནས་གཏུམ་མོ་འབར་བས་སྤྱི་བོའི་ཟླ་བ་ཞུ་བ་ལས། རིམ་གྱིས་འཁོར་ལོ་ལ་ཁྱབ་པས་དགའ་བ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱི་དབྱེ་བས་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་……

---

༡ གསེར་° ཨ། ༢ རྒྱ་དཔེར་° བྃ་མེད། ༣ གསེར་° ཞུ་བ། ༤ སྡེ་° རླངས་པ། ༥ གསེར་° བབས། ༦ གསེར་° ཡང་། ༧ གསེར་° གྱིས། ༨ གསེར་° གྱི ༩ རྒྱ་དཔེར་° (ཙོཏྃ) སེམས་ཡུན། ༡༠ སྡེ་° ཁཾ་གི

དགའ་བ་ནས་བྱུང་ནས་[1] རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བས་ཅིག་ཅར་དཀྱིལ་…….
འཁོར་[2] གྱི་འཁོར་ལོ་སྔོང་པར་བསྒྱུས་ཏེ་མི་དམིགས་པར་བསམ་མོ། །

ཡང་ན་རིམ་གྱིས་ཏེ་དེའི་རིམ་པ་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། འགྲོ་བ་རྣམས་དུར་ཁྲོད་ལའོ།། །།དུར་ཁྲོད་ཕྱིའི་ཞལ་ཡས་ཁང་ལའོ། །གཞལ་ཡས་ཁང་དམ་ཚིག་གི་འཁོར་ལོ་ལའོ།།[3] །།ཕྱིའི་འཁོར་ལོ་སྐུའི་འཁོར་ལོ་ལའོ། །སྐུའི་འཁོར་ལོ་གསུང་གི་འཁོར་ལོ་ལའོ།། །།གསུང་གི་འཁོར་ལོ་ཐུགས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ལའོ། །ཐུགས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ནི་ཕྱོགས་ལ་གནས་པ་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་ལའོ། །ཕྱོགས་དང་བྲལ་བ་ལ་གནས་པ་ནི་གཟུགས་ཅན་མ་ལ་སོགས་པ་ལའོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་ཡང་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་འཁོར་ལོ་ལ་བཞུགས་པའི་བཅོམ་ལྡན་འདས་མའི་གདན་ལའོ།[4] །བཅོམ་ལྡན་འདས་མའི་གདན་རྒྱ་སྐྱེས་ནི་ཉི་མ་ལའོ། །ཉི་མ་[5] འཛིགས་བྱེད་ལའོ། །འཛིགས་བྱེད་དུས་མཚན་མ་ལའོ། །དུས་མཚན་མ་ཁ་ཊྭཱཾ་ག་ལའོ། །ཁ་ཊྭཱཾ་ག་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་ལའོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་ལྟེ་བའི་པདྨ་ལའོ། །པདྨ་ཉི་མ་དང་ཟླ་བའི་ཁ་སྦྱོར་ལའོ། །ཁ་སྦྱོར་ནི་བཾ་གི་ཡི་གེ་ལའོ། །བཾ་ཡིག་ཟླ་བ་ཕྱེད་པ་ལའོ། །ཟླ་བ་ཕྱེད་པ་ཐིག་ལེ་ལའོ། །ཐིག་ལེ་ནཱ་ད་ལ་ཐིམ་པར་བསམམས་ཏེ། དེ་ཡང་སྐྲའི་རྩེ་མོ་སྟོང་[6] ཕྲག་བརྒྱད་བ་ཤགས་[7] པའི་གཟུགས་སུ་བལྟ་བར་བྱའོ། །རབ་ཀྱིས་དེ་ཡང་མི་དམིགས་སོ། །དེ་ལྟར་ཡེ་ཤེས་འཁོར་ལོའི་རང་བཞིན་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་ཡང་འོད་གསལ་བའི་རང་བཞིན་ལ་གཞུག་གོ །དེ་ལྟར་ཡང་དང་ཡང་དུ་གཞུག་པ་དང་ལྡང་[8] བར་བྱའོ། །

༡ གསེར་༠ དགའ་བ་འབྱུང་གནས། ༢ གསེར་༠ ཅིག་ཆར་དཀྱིལ་གྱི་འཁོར་ལོ། ༣ རྒྱ་དཔེར་༠ གཞལ་ཡས་ནས་འཁོར་ལོ་ལའོ། །པར་མེད། ༤ རྒྱ་དཔེར་༠ (ཕྱགབཛྲ སུཁེ) བཅོམ་ལྡན་འདས་མའི་ཞལ་ལའོ། ། ༥ གསེར་༠ ཉི་མ་ནི། ༦ སྣེ་༠ རྩེ་མོ་ཕྲག་བརྒྱད། ༧ ཅོ་༠ གཉེགས། ༨ གསེར་༠ ལྡན།

ཇི་ལྟར་མེ་ལོང་དབུགས་ཀྱི་རླུང་། །
ཐམས་ཅད་ཐིམ་པར་འགྱུར་བ་བཞིན། །
ཡང་དག་མཐའ་ཙ་རྣལ་འབྱོར་པས། །
ཡང་དང་ཡང་དུ་གཞུག་པར་བྱ། །

ཞེས་བྱ་བས་ཡང་དང་ཡང་དུ་གཞུག་པ་དང་ལྡན་པས་བདེན་པ་གཉིས་དབྱེར་…… མེད་ཅིང་[1] ཟུང་དུ་འཇུག་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་རྣལ་འབྱོར་པས་མངོན་དུ་བྱེད་དོ། །སྒོ་བར་ གྱུར་ན་ལྟེ་བའི་མཚོ་སྐྱེས་ལ་གནས་པའི་བཾ་གྱི་ས་བོན་ལ་སེམས་གཏད་ལ་འཆད་པར་འགྱུར་ བའི་སྐྱིང་པོ་དང་ཉེ་བའི་སྐྱིང་པོ་གང་ཡང་རུང་བ་ཇི་ལྟར་བརྗོད་པར་འདོད་པ་དང་དུས…… མཚུངས་པ་ཉིད་དུ་ས་བོན་གྱི་ནད་ལས་ཕྱིར་བྱུང་བའི་རླུང་དང་ལྷན་ཅིག་འཁོར་ལོ་རྣམ་པ་ ལྡས་[2] སྦྱོས་པས། འགྲོ་བའི་དོན་བྱས་ནས། རླུང་གཉིས་འཇུག་པའི་ཚེ་ཕྲེང་བ་བཀུག་ པའི་ཚུལ་དུ་ཐུགས་དང་ལྷན་ཅིག་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་གཞུག་པར་བྱའོ། །འཆད་པར་འགྱུར་ བའི་ལྷ་མོ་སོ་སོ འི་ཐུགས་བཟླས་པར་འདོད་ན་ལྷ་མོ་སོ་སོ འི་ཐུགས་བཟླས་པ་རྫོགས… ནས་[3] སྦྱོ་བ་དང་བསྡུ་[4] བ་སྔར་བཞིན་བྱའོ། །ཡང་དེ་ཁོ་ན་ལས་སྔར་བཞིན་སྣངས་[5] ཏེ་ ཀུན་འདར་[6] མའི་ལམ་ལས་རང་གི་ཁར་འཐོན་ཏེ་པདྨ་ནས་རང་གི་གནས་སུ་སོང་བས་ཏེ… བཞིན་དུ་འཁོར་བའི་[7] ཡི་གེའི་ཕྲེང་བ་བསྒོམ་ཞིང་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་ཕྲེང་བའི་ཐུགས་ སམ། སྙིང་པོ་དང་ཉེ་བའི་སྙིང་པོ་གང་[8] ཡང་རུང་བ་[9] བཟླས་པར་བྱའོ། །ཡང་ན་ས་བོན་ དེ་ཉིད་ལ་[10] ཡོངས་སུ་བསྒྱུར་བའི་ཐུགས་ཀྱི་ཕྲེང་བ་མར་མེའི་ཕྲེང་བ་ལྟར་གནས་པ་ལ…… བལྟས་ཏེ་ཧ་ཙང་མགྲོགས་པ་དང་བུལ་བ་མ་ཡིན་པས་རྟག་པ་ངན་པ་ཐམས་ཅད་སྤངས་ཏེ་ བཟླས་པ་བྱའོ། །

༡ རྒྱ་དཔེར། (ཨདྭཻཏཾནནིཥྤནྣ) དབྱེར་མེད་ཅིང་ཛོགས་པའི། ༢ གསེར། ལྡ། ༣ རྒྱ་དཔེར། (སྨྲཏིཀསམཔརཎ) སོ་སོར་སྦྱོ་བ། ༤ གསེར། སྡུ་བ། ༥ གསེར། སྣངས་ཏེ། ༦ གསེར། དར། ༧ གསེར། འཁོར་བ། ༨ གསེར། དང་ཡང་། ༩ གསེར། པ་མེད། ༡༠ གསེར། ལས།

ཨོཾ་བཛྲ་བཻ་རོ་ཙ་ནི་ཡེ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་[1] ཕཊ྄་སྭཱ་ཧཱ། བཅོམ་ལྡན་འདས་མའི་ཐུགས་ཀྱི་སྙིང་པོའོ། །ཨོཾ་བཛྲ་བཻ་རོ་ཙ་ནཱི་ཡེ་སྭཱ་ཧཱ། འདི་ཡང་ཐུགས་ཀྱི་སྙིང་པོའོ། །ཧཱུཾ་སརྦ་ཏ་ཐཱ་ག་ཏཱ་ནི་ཡེ་[2] བཛྲ་དྷཱ་ཏྭཱིཤྭ་རི་ཡེ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་[3] ཕཊ྄་སྭཱ་ཧཱ། ཉེ་བའི་སྙིང་པོའོ། །སྔགས་འདི་དག་ནི་མཐུ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པ་ཡིན་ནོ། །ཨོཾ་ན་མོ་བྷ་ག་བ་ཏེ་[4] ཨི་བཛྲ་བཱ་ར་དྷེ་[5] བ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་[6] ཕཊ྄། ཨོཾ་ན་མཿ[7] ཨ་ཏྲ་ཨ་པ་ར་ཛི་ཏེ་ཏྲཻ་ལོ་ཀྱ་མ་ཏེ་མ་ཏེ་བི་དྷེ་ཨེ་ཧི་[8] ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ྄། ཨོཾ་ན་མཿ་སརྦ་བུདྡྷ་བོ་དྷི་སཏྭ་ཨ་པ་ཏེ་[9] མ་ཧཱ་བཛྲེ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་[10] ཕཊ྄། ཨོཾ་ན་མོ་བཛྲ་ས་ནེ་ཨ་ཛི་ཏེ་ཨ་པ་ར་ཛི་ཏེ་བ་ཤཾ་ཀ་[11] རཱ་ཎེ་ཏྲ་བ་ས་མ་ནེ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་[12] ཕཊ྄། ཨོཾ་ན་མཿ ཀྲོ་དྷ་ཨ་ཀྲོ་ཤ་ཡཱ་[13] ཀྲོ་དྷ་ཀ་[14] རཱ་ཤི་ནི་[15] ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ྄། ཨོཾ་ན་མ་སྟུ་ཏྲ་[16] ས་ནེ་མ་ར་ཎེ་[17] སྟམྦྷ་ནི་ཨ་པ་ར་ཛི་ཏེ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ྄། ཨོཾ་ན་མོ་ཛ་ཡ་[18] བི་ཛ་ཡེ་ཛམྦྷ་ནི་[19] སྟམྦྷ་ནི་མོ་ཧ་ནི་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ྄། ཨོཾ་ན་མོ་བཛྲ་བ་ར་དེ་[20] མ་ཧཱ་ཡོ་གི་ནི་[21] ཀཱ་མེ་ཤྭ་རི་ཁ་གེ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ྄། འདི་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་མའི་མཆོད་པའི་སྔགས་རྐང་པ་བརྒྱད་པའོ། །

དེ་ནས་ཕྲེང་བའི་སྔགས་ནི། ཨོཾ་བཛྲ་བ་ར་ཧི་བྲཱྀཏྟཾ་གེ་[22] ཏཏྲ་ཊཾ[23] ཀི་ཀི་ནི། ཁི་ཁི་ནི་ཧྲྀཏ་ཧྲྀཏ་བཛྲ་ཏ་སེ་ཨོཾ་ཡ་ཨོཾ་ཡ་བཛྲ་ཁ་ཌྒ་ཀ་[24] པ་ལ་ཧྲི་རི་ཎི་མ་ཏ་པི་ཤི་ཏ་མ་ས་ཤུ་ཤྟི་[25] མ་ཧཱ་ཨ་ཤུ་ཏྲ་ཏྲ་བྷི་ཏ་ཤ་ན་[26] ཧྲཱི་ཎ་ར་ཤི་ར་མ་ལ་སཾ་པྲི་ཏ་ཧྲཱི་ཎཱ་ཤི་ཎ་སུ་ཧྲཱི་ཎི་སུ་ཧྲཱི་ཏཎ་ཏཎ་པཾ་ཙ་ཏ་ན་ཤ་ཏ

---

[1] གཞན། ཧཱུྃ་ཕཊ྄་མེད། [2] གཞན། ཡེ་མེད། [3] གཞན། ཧཱུྃ། [4] གཞན། བ་མེད། [5] གཞན། བྷ་ར་དྷི། [6] གཞན། ཧཱུྃ། [7] གཞན། ནམཿ། [8] གཞན། ཧཱུྃ། [9] གཞན། ཀྵུ་བྷ་ཏེ། [10] གཞན། ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ྄། [11] གཞན། ཨོཾ་ན་མོ་བཛྲ་ཨ་པ་ར་ཛི་ཏེ་ཨ་པ་ར་ཛི་ཏེ་བ་ཤཾ་ཀ [12] གཞན། ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ྄། [13] རྒྱ་དཔེ་དང་གཞན་བྲིས་ནང་གསལ་བ་ལྟར་བཞག སྡེ། ཨོཾ་ན་མོ་བི་ཁ་ནི་ཁ་ནི་ར་ཁ་ཎི། [14] གཞན། ཀྲི། [15] རྒྱ་དཔེར། ཀ་ར་ཝི། [16] ཅོ། སྟུ རྒྱ་དཔེར། ས་ན་ཏྲ་ས་ནེ། [17] གཞན། སྟམྦྷ་ནི་པ་ར་ཛ་ཡེ། [18] ཅོ། ཛ་ཡེ། [19] གཞན། ཨོཾ་ན་མོ་བི་ཛ་ཡ་ཛམྦྷ་ནི། [20] གཞན། ཧེ་ཊ་ཀ། [21] གཞན། ནི། [22] གཞན། ཕྲེ་ཏྲཱྀ། [23] གཞན། པྲ་ཊི། [24] གཞན། ཀ་མེད། [25] རྒྱ་དཔེར། གཞན། ཨོཾ་ས་ས་ཤི་ནི། [26] གཞན། པྲ་བི་ཏྲ་ས་ནི།

པཱཔཱཾ་ཤདྷཱནཱཾ[1] སརྦཱཔཱཀྵཱཾ་མཏཱ་མཱཾ་སཏྭཙྪེཏནཱ་ཀྲཱ་ཧྲྀཥྚྭཏེ[2] ཏཱཾཧ་ཙཱཀཱར་ལིཉི་མཏཱཥྭདྲེ[3] ཧྲཱིདེཙཀཱདེ

བཤ[4] གྲཱམཏིཀྲྀ་ཤཏཱཥྭཱ་ཧྲཱིརེཤཏཱཥྭབཏཱབེ་ཧཱད[5] ཤཏཱཥྭཱནཱཏེ། ཛྭལིདདེཛཤེཛྭལཤྭཁརཱཡཾ་ཀྲཱལ[6] ཡོ

ཙཏེབཛྲ་ཧཱརཱིརེབཛྲཨཱཤཏེ[7] མིལིམིལི། དིམིལིདིམིལི། ཏེཏེཏཏ། ཀྲྀཀྲྀ། ཁཁ། རྡྷུརྡྷུཙཙ།

[8] རྡྷུཙརྡྷུཙ། སྲུཙསྲུཙ། ཨསྟྲིད[9] མཏཱཡོགིནཱི[10] པགྷིདསིདྷྲཱུབྲྀ[o] རྡྷུབྲྀ[o] རྡྷཾ། གྲཱིགྲཾ། ཏེཏེཏཏ། བྷྲཱི་མེ

ཏཤཏཤ། བེརེཏཏཏོ་ཏོ།[11] །ཧཱུཾཧཱུཾད྄ལིཀྲཱུབེན[12] ཧཱདཤཏཱཥྭཀཱི་ཛེདགྷཱགདཔརིབརེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ།

སཾཏྲེབེཁཿགཛྲཱུཔེགཿཏྲྀལོཀྲཱུདརིམཏཱཤསྭདྲམེཁལིགྲཱཤགྲཱཤཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། བྷྲཱིརདྭཱདིཧཱུཾཧཱུཾ། ཏཱཏཱ[13]

མཏཱཔཱཧཱཱུམཱཏཏཱཡོགཱི[14] ཧཱཪཱ དཱཛཱཀཱིནཱི་ལོཀཱ་ནཱཾ་ཙཏཱཛྲྀནཱིཤད[15] ཤྲཱདཡཀཱཪཱ[16] ཀེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། བྷྲཱུད

དཱུཤནཱི་མཏཱབེརེཔརམ[17] ཤིདྡྷཱཡོགཱི་ཧཱར[18] ཕཊཧཱུཾཧཱུཾཕཊསྭཱཧཱ།

སྔགས་འདི་ནི་ནུས་མཐུ་ཆེན་པོ་སྟེ་བཟླས་པ་ཙམ་གྱིས་འགྲུབ་པར་འགྱུར་རོ། །

ཟླ་བ་གཟས་བཟུང་བའམ་ཉི་མ་གཟས་བཟུང་[19] བའི་དུས་སུ་གཟས་མ་ཐོང་བར་བཟླས་……

པར་བྱ་བ་ནི་ཛ་སྦྱིད་མ་གྲོལ་གྱི་བར་དུའོ།[20] །དེ་ནས་ཛ་སྦྱིད་བཟླས་པ་བྱས་པ་དེ་སྲིད་དུ་

བྱད་མེད་སྟོང་ཕྲག་གཅིག་གིས་རྗེས་སུ་བསྟེན་པར་འགྱུར་རོ། །བསྒོམ་པ་སྔོན་དུ་འགྲོ་

བས་ཅིག་ཅར་[21] བཟློད་པ་ཙམ་གྱིས་འགྲུགས་པར་འགྱུར་རོ། ཁྲོ་བའི་སེམས་ཀྱིས་གསོད་

པར་བྱེད་དོ། །བསྐྲད་པ་དང་དབྱེ་བ་དང་རེངས་པར་ཡང་བྱེད་དོ། །མེ་ཏོག་ལ་ལན་

༡ གསེར་。སོ་ཧྲཱཏནཏནཱཏྭཱཧཱཀྵཾབྷྲཱཤཏཱཏཱཤམཏྭཱ། ༢ རྒྱ་དཔེ་དང་གསེར་བྲིས་ནང་གསལ་བ་ལྟར་བཞག སྣེ་。སྟྭརྡེ། ༣ གསེར་。སྟྭདྲེ། ༤ གསེར་བྲིས་དང་རྒྱ་དཔེར་གསལ་བ་ལྟར་བཞག སྣེ་。སུཨཁྲ ༥ གསེར་。བཏཱཨཱཧད ༦ གསེར་。ཡེ་གལ། ༧ གསེར་。ཨམན། ༨ གསེར་。རྡྷུརྡྷུཙཙརྡྷུརྡྷུཙཙ། ༩ རྒྱ་དཔེར་。ཨསྟྲིད། ༡༠ གསེར་。གྷིད། ༡༡ གསེར་。ཏོཿཏོཿ ༡༢ གསེར་。རྒྱ་དཔེར་。བེནཱཁབེཁད ༡༣ གསེར་。ཏཿཏཿ ༡༤ གསེར་。ཡོགི ༡༥ གསེར་。པཱརྡེཤད྄ཿ ༡༦ གསེར་。ཨཀཱཀཱརེ། ༡༧ གསེར་。བཱེརེཔམ། ༡༨ རྒྱ་དཔེར་。གོཧྲཱི། ༡༩ རྒྱ་དཔེར་。ཉི་མ་གཟས་བཟུང་བ་མེད། ༢༠ རྒྱ་དཔེ་ལྟར་ན་འགྱུར་འདི་ལྟར་ཅི་དགོས་ཏེ། ཟླ་བ་གཟས་བཟུང་བ་བལྟ་བཞིན་དུ་བཟླས་པར་བྱ་བ་ནི་ཛ་སྦྱིད་མ་གྲོལ་གྱི་བར་དུའོ། ། ༢༡ གསེར་。ཅར།

གཅིག་བཟླས་ནས་ནམ་མཁའ་ལ་གཏོར་ན་ཚངས་པ་ལ་སོགས་པ་གཞན་ལ་སྟོན་པར་ནུས་སོ།[༡] །དུར་ཁྲོད་ཀྱི་སོལ་བ་ལ་ལན་ཅིག་བཟླས་ནས་ཁྱིམ་རམ་གྲོང་ཁྱེར་ལ་བྲངས་ན་མེ་འབར་བར་མཐོང་བར་འགྱུར་རོ། །རྨ་བྱའི་སྒྲོ་ལ་ལན་གཅིག་བཟླས་ནས་ནམ་མཁའ་ལ་བསྐོར་བས་ཡང་ཞི་བར་འགྱུར་རོ། །གྱོ་མོ[༢] ལ་ལན་གཅིག་བཟླས་པས་སྐྱེ་ཚན་དུ་བླང་གྱི་དམག་བཞིའི་ཡན་ལག་སྟོན་ནོ། །རྨ་བྱའི་མདོངས་བཟློག་ནས་བསྐོར་བས[༣] མི་སྣང་བར་འགྱུར་རོ།[༤] །དེ་ལྟ་བུ་ལ་སོགས་པ་འདོད་ནུས་པའི་བྱེ་བྲག་གཞན་དུ་གསུངས་སོ། །

ཨོཾཊཱཀྐིནཱིཡེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། མཁའ་འགྲོ་མའིའོ། །ཨོཾལཱམེཧཱུཾཧཱུཾ[༥]ཕཊ། ལཱམ་ཡིའོ། །ཨོཾཁཎྜརོཧེཧཱུཾཧཱུཾ[༦]ཕཊ། དུམ་སྐྱེ་མའིའོ། །ཕྱོགས་འདི་ནི་ལས་ཐམས་ཅད་ཀྱིའོ། །ཨོཾརཱུཔིཎཱིཡེཧཱུཾཧཱུཾ[༧]ཕཊ། གཟུགས་ཅན་མའིའོ། །དེ་ནས་རབ་ཏུ་གཏུམ་མོ་ལ་སོགས་པའི་སྔགས་ནི་འདི་ཡིན་ནོ། །ཨོཾཔྲཙཎྜེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། [༨]ཨོཾམཧཱནཱསེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། ཨོཾབཱིརམཏཱིཡེཧཱུཾཧཱུཾ[༩]ཕཊ། ཨོཾཁརྦཱརཱིཡེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། ཨོཾལངྐེཤྭརཱིཡེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། ཨོཾདྲུམཙྪཱཡེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། ཨོཾཨཻརཱཝཏཱིཡེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། ཨོཾམཧཱབྷཻརབཱི[༡༠]ཡེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། ཨོཾཝཱཡུབེགཱེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། ཨོཾསུརཱབྷཀྵཱིཡེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། ཨོཾཤྱཱམཱདེཝཱིཡེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། ཨོཾསུབྷདྲེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། ཨོཾཧཡཀརྞེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། ཨོཾཁགཱནནེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། ཨོཾཙཀྲབེགཱེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། ཨོཾཁཎྜརོཧེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། ཨོཾཤཽཎྜིནཱིཡེཧཱུཾཧཱུཾ[༡༡]ཕཊ། ཨོཾཙཀྲཝརྨི[༡༢]ཎཱིཡེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། ཨོཾསུབཱིརེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། ཨོཾམཧཱབལེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། ཨོཾཙཀྲཝརྟིནཱིཡེ[༡༣]ཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། ཨོཾམཧཱབཱིརྱེཧཱུཾཧཱུཾཕཊ། ཨོཾཀཱཀཱ[༡༤]

---

༡ རྒྱ་དཔེར། མེ་ཏོག་ལ་……སྟོན་པར་ནུས་སོ། །མེད། ༢ གསེར། གྱོ་མོག ༣ གསེར། མདོངས་བཟློག་ནས་བསྐོར་བས་ཡན་གཉིས་འདུག ༤ རྒྱ་དཔེར། རྨ་བྱའི་མདོངས་ནས་འགྱུར་རོ། །པར་མེད། ༥ གསེར། ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ། ༦ གསེར། ཧཱུཾ། ༧ གསེར། ཧཱུཾ་ཕཊ། ༨ རྒྱ་དཔེར། ཨོཾ་ཙཎྜ་ཀཱཀྵི་ཡེ་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ། ཨོཾ་པྲ་ཛྙཱ་བ་ཏྲི་ཡེ་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ། ཨོཾ་མ་ཧཱ། ༩ གསེར། མེ་དྷ་ཡེ་ཧཱུཾ་ཕཊ། ༡༠ གསེར། རྦེ། ༡༡ གསེར། ཎཱ་ཧཱུཾ་ཕཊ། ༡༢ རྒྱ་དཔེར། བརྨ། ༡༣ གསེར། ཡེ་མེད། ༡༤ གསེར། ཀཱ་ཀཱ

སེ་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ། ཨོཾ་ཨུ་ལཱུ་ཀ་སྱེ་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ།[1] ཨོཾ་ཤྭཱ་ན་སྱེ་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ[2]་ཕཊ། ཨོཾ་སཱུ་ཀ་ར་སྱེ[3]་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ། ཨོཾ་ཡ་མ་དཱུ་ཏཱི་ཡེ་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ། ཨོཾ་ཡ་མ་དཾཥྚྲཱི་ཡེ་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ། ཨོཾ་ཡ་མ་དཾཥྚྲཱི་ཎཱི་ཡེ་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ། ཨོཾ་ཡ་མ་མ་ཐ་ནཱི་ཡེ་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ།

འདི་ལྟར་རེ་ཞིག་ལཱུ་ཡི་པའི་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་རིམ་པ་བཀྲུས་པར་ལྷ་མོ······སུམ་ཅུ་རྩ་བདུན་གྱི[4] བདག་ཉིད་ཀྱི་བཅོམ་ལྡན་འདས་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་དེ་ཁོ་ན་ལས་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་དབྱེ་བའི་བྱེ་བྲག་གཞན་བདག་གི་བླ་མས་རྡོ་རྗེ་ཕྲེང་བ་ལས'''གསུངས་པ་བྲི་བར་བྱ་བ་ནི་འདྲེན་པ་མོ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཕྱག་གཉིས་མཁའ''''འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་དང[5]། ཁྭ་གདོང་མ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱང་གཡོན་ན་ཐོད་པ་དང་མཚན་ཁྲང་ལ་རྟེན་པའི་ཁ་ཊྭཱཾ་ག་བསྣམས་པ། གཡས་ཀྱིས་ཌ་མ་རུ་བསྣམས་པ། གཞན་ཐམས་ཅད་སྔར་བཞིན་ནོ། །ཡང་ན་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་སྐུ་མདོག་སེར་མོ་འདམ་སྔོན་མོ་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་བཞི་ཡང་སེར་མོ། གཡས་ན་ཌ་མ་རུ་བསྣམས་པའོ། །ཕྱུགས་ཀྱི་[6]འཁོར་ལོའི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་དཀར་མོ། ཕྱག་གཡས་ཀྱིས་རྡོ་རྗེ་དང་བཅས་པའི་སྡིགས་མཛུབ་མཛད་པའོ། །གསུང་གི་འཁོར་ལོ་[7]ནག་མོ་ཕྱག་གཡས་ཀྱིས་རྡོ་རྗེ་དང་བཅས་[8]པའི་སྡིགས་མཛུབ་བོ། །སྐུའི་འཁོར་ལོ་[9]དམར་མོ་[10]གཡས་པའི་ཕྱག་ན་འཁོར་ལོ་དང་བཅས་པའི་སྡིགས་མཛུབ་བོ། ཁྭ་གདོང་མ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱི་གཡས་ཀྱིས་སྡིགས་མཛུབ་དང་བཅས་པས་གྲི་གུག་བསྣམས་པའོ། །ལྷ་མོ་ཐམས་ཅད་ན་གཡོན་པའི་ཕྱག་གིས་ཐོད་པ་བཟུང་བའོ།[11] །ཀ་ཤེན་ཛེ་བརྟན་མ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་གཡས་ཀྱིས་ཌ་མ་རུ་དང་། གཡོན་གྱིས་སྡིགས་མཛུབ་དང་བཅས་པའི་མིའི་མགོ་བོ་བསྣམས་པའོ། །

1 གཞན་°ཨུ་ལུ་ཀ་ཡ་ཧཱུཾ་ཕཊ། 2 གཞན་°ཧཱུཾ་ཧཱུཾ། 3 གཞན་°སེ་ཀ་ར་སེ། རྒྱ་དཔེར་°སུ་ཀ་ར་སེ། 4 གཞན་°ཀྱིས། 5 རྒྱ་དཔེར་°(ཌཱ་ཀི་ནྱཱ་དྱཱ་ཤྩ་ཏུར་བྷུ་ཛཱ་ཤྩཿ) མཁའ་འགྲོ་མ་བཞི་ཕྱག་བཞི་དང་། 6 གཞན་°ཕྱུགས་ཀའི། 7 སྣེ་°འཁོར་ལོའི། 8 རྒྱ་དཔེར་°(སཔདྨ) པད་མ་དང་བཅས། 9 སྣེ་°ལོའི། གཞན་ཕྲིན་ལྟར་བཞག 10 གཞན་°དམར་མོར། 11 གཞན་°གཞིང་པའོ། །

མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་དང་། ཁྭ་གདོང་མ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་གཡོན་གྱི་དབྱུང་བ་ལ་ཁ་ཊྭཱཾ་ག་[1] བརྟེན་པའོ། །བཅུ་གཉིས་པོ་རྣམས་བརྒྱང་བསྐུམ་གྱི་ཚུལ་གྱིས་གར་མཛད་པའོ། །གཞན་རྣམས་ནི་སྔར་བཞིན་ནོ། །ཧྲིའི་ང་རྒྱལ་སྤྱངས་[2]པ་དང་། རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ཐོབ་པར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་[3]བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་སུམ་ཅུ་རྩ་བདུན་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པའི་རང་བཞིན་དུ་རིག་པར་བྱའོ། །

དེ་ལ་གཟུགས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ལ་སྒོམ་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ལུས་དྲན་པ་ཉེ་བར་གཞག་པ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མའོ། །ཚོར་བའི་ཕུང་པོ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་སྒོམ་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཚོར་བ་དྲན་པ་ཉེ་བར་གཞག་པ་ནི་ལཱ་མའོ། །འདུ་ཤེས་དང་འདུ་བྱེད་ཀྱི་ཕུང་པོ་སྒྲུ་མའི་རང་བཞིན་དུ་ངེས་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཆོས་དྲན་པ་ཉེ་བར་གཞག་པ་ནི་དུམ་སྐྱེས་མའོ། །རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཕུང་པོ་[4] རབ་ཏུ་རྣམ་པར་འབྱེད་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་[5] ཕྱིར་སེམས་དྲན་པ་ཉེ་བར་གཞག་པ་ནི་གཟུགས་ཅན་མའོ། །ཆོས་ཐོས་པར་འདོད་པ་ལ་ཤིན་ཏུ་འབད་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་འདུན་པའི་རྫུ་འཕྲུལ་གྱི་རྐང་པ་ནི་རབ་ཏུ་གདུང་མོའོ། །བརྩོན་འགྲུས་རྒྱུན་མི་འཆད་པར་གོམས་པ་བརྩོན་འགྲུས་ཀྱི་རྫུ་འཕྲུལ་གྱི་[6] རྐང་པ་ནི་གདུང་པའི་མིག་ཅན་མའོ། །ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དཔྱོད་པ་རྫུ་འཕྲུལ་གྱི་རྐང་པ་ནི་འོད་ལྡན་མའོ། །བྱང་ཆུབ་མངོན་དུ་བྱེད་པ་ལ་ལྷག་[7]པའི་བསམ་པ་ཉིད་ཀྱིས་སེམས་ཀྱི་རྫུ་འཕྲུལ་གྱི་རྐང་པ་ནི་སྣ་ཆེན་མའོ། །བདེན་པ་དང་དཀོན་མཆོག་གསུམ་དང་ལས་དང་འབྲས་བུ་ལ་ཡིད་ཆེས་པ་དང་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་ངེས་པ་ལ་དབང་དུ་ཆུབ་པའི་ཕྱིར་དད་པའི་དབང་པོ་ནི་དཔའ་བོ་ཨི་བློ་ཅན་མའོ། །ཅི་ནས་ཀྱང་བྱ་བ་ངེས་པར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་བརྩོན་འགྲུས་ཀྱི་དབང་པོ་ནི་མིའུ་ཐུང་མའོ། །མ་རིག་པའི་གཉེན་པོ་མ་བརྗེད་པ་ལ་དབང་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་དྲན་པའི་དབང་པོ་ནི་ལང་ཀའི་དབང་ཕྱུག་མའོ། །སེམས་རྩེ་གཅིག་པ་

༡ གསེར་° ག་མེད། ༢ གསེར་° སྤང་། ༣ གསེར་° ཕྱིར་མེད། ༤ རྒྱ་དཔེར་° (སཏྟྭ) རང་བཞིན། ༥ རྒྱ་དཔེར་° (བིཤུདྡྷཀྵ) ཀྱི་རྣམ་པར་དག་པའི། ༦ གསེར་° རྫུ་འཕྲུལ་གྱི་མེད། ༧ གསེར་° ཕྱིད་པ་ལྷག་པའི།

ཉིད་ལ་དབང་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་དབང་པོ་ནི་ཤིང་གི་གྲིབ་མའོ། །གླང་བུ་དང་དོར་བུ་ངེས་[1]པ་ལ་དབང་ཆུབ་པའི་ཕྱིར་ཤེས་རབ་ཀྱི་དབང་པོ་ནི་རབ་ཏུ་བརྟན་མའོ། །

དད་པ་ལ་སོགས་པའི་དབང་པོ་རྣམས་ཁོ་ན་མཐར་ཐུག་པར་ཕྱིན་པས་སྟོབས་རྣམས་སོ། །དད་པའི་སྟོབས་ནི་འཛིགས་བྱེད་ཆེན་མོ་འོ། །བརྩོན་འགྲུས་ཀྱི་སྟོབས་ནི་རླུང་གི་ཤུགས་ཅན་མའོ། །དྲན་པའི་སྟོབས་ནི་ཆང་འཐུང་མའོ། །ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་སྟོབས་ནི་ཤུཀླ་དེབིའོ། །ཤེས་རབ་ཀྱི་སྟོབས་ནི་ཤིན་ཏུ་བཟང་མོ་འོ། །

ཏིང་ངེ་འཛིན་ཁོ་ན་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་རྒྱུ་ཡིན་པས་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཡང་དག་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་ནི་རྟ་རྣ་མའོ། །ལེ་ལོའི་སྐབས་མི་འབྱེད་པའི་ཕྱིར་བརྩོན་འགྲུས་ཡང་དག་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་ནི་བྱ་གདོང་མའོ། །དགེ་བ་ལ་ཀུན་ནས་ཞེན་པའི་ཕྱིར་དགའ་བ་ཡང་དག་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་ནི་འཁོར་ལོའི་ཤུགས་ཅན་མའོ། །ལས་དགེ་བ་ལ་ལས་སུ་རུང་བ་ཉིད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་སྦྱངས་པ་ཡང་དག་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་[2] ཡན་ལག་ནི་དུམ་སྐྱེས་མའོ། །བདག་མེད་པའི་རང་བཞིན་དུ་ངེས་པས་ཆོས་རབ་ཏུ་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་ཡང་དག་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་ནི་ཆང་འཚོང་མའོ། །ཚུལ་ཁྲིམས་བརྗེད་པ་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་དྲན་པ་ཡང་དག་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་ནི་འཁོར་ལོའི་གོ་ཆ་མའོ། །ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཕྱིར་བཏང་སྙོམས་ཡང་དག་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་ནི་ཤིན་ཏུ་དཔའ་མོ་འོ། །ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པའི་དོན་བསྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པའི་ལྟ་བ་ནི་སྟོབས་ཆེན་མའོ། །དམ་པའི་བྱ་བ་བཙམས་པ་ཡོངས་སུ་མི་གཏོང་བའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པའི་རྟོག་པ་ནི་འཁོར་ལོས་[3] སྒྱུར་མའོ། །སེམས་ཅན་མི་སླུ་[4] བའི་ཕྱིར་[5] ཡང་དག་པའི་ངག་ནི་བརྩོན་འགྲུས་ཆེན་མོ་འོ། །

༡ གསེར་° དོར་བྱས། ༢ གསེར་° ཡན་ལག་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི། ༣ གསེར་° འཁོར་ལོ། ༤ གསེར་° མི་བསླུ།
༥ རྒྱ་དཔེར་° (བཙན) ཆོག་གི་ཕྱིར།

དགེ་བ་བཅུའི་བྱ་བ་ལས་མི་འདའ་བར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པའི་ལས་ཀྱི་མཐའ་ནི་ཁྲ་[༡] གདོང་མའོ། །སེམས་ཅན་ལ་གཡོ་སྒྱུ་མེད་པས་འཚོ་བའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པའི་འཚོ་བ་ནི་ཞུག་གདོང་མའོ། །དགེ་བའི་ཆེད་དུ་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པའི་རྩོལ་བ་ནི་ཁྱི་གདོང་མའོ། ། སངས་རྒྱས་ཀྱི་གསུང་གི་དོན་དྲན་པའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པའི་དྲན་པ་ནི་ཕག་གདོང་མའོ། ། ཡང་དག་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་འོ། །དགེ་བའི་ཆོས་མ་སྐྱེས་པ་སྐྱེད་པར་བྱེད་[༢] པ་ནི་ག་ཤིན་རྗེ་བརྟན་མའོ[༣]། །སྐྱེས་པའི་ཆོས་རྣམས་[༤] ཡང་དག་པར་བསྲུང་བ་[༥] ནི་ག་ཤིན་རྗེ་ཡོ་ཀ་མའོ། །མི་དགེ་བའི་ཆོས་སྐྱེས་པ་རྣམས་སྤོང་བ་ནི་ག་ཤིན་རྗེ་མཆེ་བ་ཅན་མའོ། །མི་དགེ་བའི་ཆོས་མ་སྐྱེས་པ་རྣམས་མི་བསྐྱེད་པའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པར་སྤོང་བ་ནི་ག་ཤིན་རྗེ་འཇོམས་མའོ། །

རབ་ཏུ་དགའ་བ་དང་དྲི་མ་མེད་པ་དང་། འོད་བྱེད་པ་དང་། འོད་འཕྲོ་བ་ཅན་དང་། ཤིན་ཏུ་སྦྱངས་[༦] དཀའ་བ་དང་། མངོན་དུ་གྱུར་པ་དང་། རིང་དུ་སོང་བ་དང་། མི་གཡོ་བ་དང་། ལེགས་པའི་བློ་གྲོས་དང་། ཆོས་ཀྱི་སྤྲིན་ཞེས་བྱ་བ་ས་བཅུ་རྣམ་པར་དག་པའི་རིམ་པས་གནས་དང་ཉེ་བའི་གནས་ལ་སོགས་པ་རྐྱའི་[༧] དཀྱིལ་འཁོར་ལྷག་པར་ནང་གིས་[༨] རྣལ་འབྱོར་པས་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །

ཉི་ཤུ་རྩ་བཞིའི་དབྱེ་བ་ཡིས། །
གནས་སོགས་འདིར་ནི་རྣམ་པར་གནས། །
དེ་ཕྱིར་དེ་རུ་འགྲོ་ཉིད་ཀྱིས། །
དེ་ཉིད་ཅན་གྱི་སྐྱོ་མི་བྱ། །
དེ་ཡི་ཁམས་ནི་འཆད་པར་འགྱུར། །

---

༡ གསེར་。ཁ། ༢ གསེར་。སྐྱེ་བར་བྱེད། ༣ གསེར་。གཏན་མའོ། ༤ རྒྱ་དཔེར་。(ཨུཏྤནྣཱ་ནཱཾ་ཀུ་ཤ་ལཱ་ནཱཾ) དགེ་བའི་ཆོས་སྐྱེས་པ་རྣམས། ༥ གསེར་。གསུང་བ། ༦ གསེར་。སྦྱངས་པ། ༧ གསེར་。སྐུ་ཡི། ༨ གསེར་。ནང་གི

རྣལ་འབྱོར་ཕྱི་རུ་རྒྱུ་བའི་ཕྱིར། །
དེ་ཡི་ཕྱི་རོལ་སྤྱངས་ནས་ནི། །
རྣལ་འབྱོར་རོལ་པས་གནས་པར་བྱ། །ཞེས་གསུངས་སོ།

དེ་ལ་པུ[1]ཛྲ་ཨོཾ་ཨ་གོ་རྣ་དེ་ཤྭ། ཀཱ་ཤཱི་ཉྀ་གོ་ཀ[2]ལཀྵི་པྲི་གྲིསོ་སྤུ་ནསི་མ་ཀུ[3]། མགོ་ལ་ཕྱུ་ལླི་ར་མྦླ་ལ་ཡར་རབ་ཏུ་གཏུམ་མོ་འོ། །ཛཱ་ལནྡྷ་ར་ར་སྤྱི་བོ་འི་གཙུག་ལ་གཏུམ་པའི་མིག་ཅན་མའོ། །ཨོ་ཊྲ་ན[4] གཡས་ཀྱི་རྣ་བར་འོད་ལྡན་མའོ། །ཨར་བུད་ལྟག་པ་ལ་སྣ[5] ཆེན་མ་སྟེ་གནས་སོ། །གོ་དཱ་ཝ་རཱི་རྣ་བ་གཡོན་པ་ལ་དང་པོ་འི་བློ་ཅན་མའོ། །རཱ་མེ་ཤྭ་ར་སྨིན་མཚམས་སུ་མི་ཡུ་ཐུང་མའོ། །དེ་ཝཱི་ཀོ་ཊ[6] མིག་གཉིས་པོ་ལ་ལང་ཀའི་དབང་ཕྱུག་མའོ།། མཱ་ལ་བ་དཔུང་པ་གཉིས་ལ་ཤིང་གྲིབ་མ་སྟེ་ཉེ་བའི་གནས་སོ། །ཐུགས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་སྟེ་ནམ་མཁའ་ལ་སྤྱོད་པའོ། །འདིས་ནི་ས་བླ་ལ[7] གནས་པ་རྣམས་ཡང་དག་པར་བསྡུས་སོ། །

ཀཱ་མ་རཱུ་པ་མཚན་ཁུང་གཉིས་ལ་རབ་ཏུ་བརྟན་མའོ། །ཨོ་ཊེ[8] ནུ་མ་གཉིས་ལ་འཇིགས་བྱེད་ཆེན་མོ་སྟེ་ཞིང་ངོ་། །ཏྲི་ཤ་ཀུ་ནི་ལྟེ་བ་ལ་རླུང་གི་ཤུགས་ཅན་མའོ། །ཀོ་ས་ལ་སྣ་ལ་ཆང་འཐུང་མ་སྟེ་ཉེ་བའི་ཞིང་ངོ་། །ཀ་ལིང་ག་ཁ་ལ་ཤྱཱ་མ་དེ་བཱི་འོ། །ལམ་པཱ་ཀ་མགྲིན་པར་ཤིན་ཏུ་བཟང་མོ་སྟེ་ཚནྡོ་ཧའོ། །ཀཱཉྩི་སྙིང་ག་ལ་རྟ་རྣ་མའོ། །ཧི་མཱ་ལ[9] མདོམས་ལ་བྱ་གདོང་མ་སྟེ་ཉེ་བའི་ཚནྡོ་ཧའོ། །འདི་དག་གསུང་གི་འཁོར་ལོ་སྟེ་ས་ལ་སྤྱོད་པའོ། །འདིས་ནི་ས་སྟེང[10] ན་གནས་པ་རྣམས་བསྡུས་སོ། །

ཡི་དྭགས་ཀྱི་གྲོང་ཁྱེར་གསང་བའི་གནས་ལ་འཁོར་ལོ་འི་ཤུགས་ཅན་མའོ། །གྲྀཧ་དེ་བ་ཏཱ་བ་ཤང་ལམ་དུ་དུམ་སྐྱེས་མ་སྟེ་འདུ་བ་ཅན་ནོ། །སཽ་རཥྚ་བརླ་གཉིས་ལ་ཆང་

༡ གསེར་° སྲ། ༢ གསེར་° ཀཀོ ༣ རྒྱ་དཔེར་པུཎྜ་ནས་ཤིམ་ཀུ་བར་གྱི་སྔགས་ཡིག་རྣམས་རྗེས་སུ་ང་རོ་ཅན་དུ་འདུག་གོ ༤ གསེར་° ཨོ་ཊྲ་ཎ རྒྱ་དཔེར་ཨོ་ཊི་ཡན། ༥ སྡེ་བསྟན་ནང་ལས་སྣ་ཆེན་ཞེས་འདུག་ཀྱང་གསེར་བྲིས་དང་ཅོ་ནེ་ལྟར་བཞག་པར་སྣང་ངོ་། ། ༦ གསེར་° བེ་ཀོ ༧ གསེར་° ས་ལ། ༨ གསེར་° ཨོ་ཊེ། ༩ གསེར་° ཧི་མཝ། ༡༠ གསེར་° འདིས་ནི་ས་ནི་ས་སྟེང་།

འཚོང་མའོ། །གསེར་གླིང་བྱིན་པ་གཉིས་ལ་འཁོར་ལོའི་གོ་ཆ་མ་སྡེ་ཉེ་དའི་འདུ་བ་ཅན་ནོ༑ ༑གྲོང་ཁྱེར་སོར་མོ་རྣམས་ལ་ཤིན་དུ་དཔའ་མོ་འོ། །སིན་དྷུ་བོལ་གོང་གཉིས་ལ་སྟོབས་མོ་ཆེ་སྡེ་དུར་ཁྲོད་དོ། །མཚུ་མཐེ་བོང་གཉིས་ལ་འཁོར་ལོས་[1]སྒྱུར་མ། [2]ཀུལླུ་ཏ་པུས་མོ་གཉིས་ལ་བརྩོན་འགྲུས་ཆེན་མོ་སྡེ་ཉེ་བའི་དུར་ཁྲོད་དོ། །རྐྱའི་འཁོར་ལོ་སྡེ་ས་འོག་ལ་སྤྱོད་པ་རྣམས་བསྡུས་སོ།[3]

འདིར་ནི་གདམས་ངག་འདི་ཡིན་ཏེ། པཾ་ཛཾ་[4]ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཐིག་ལེ་དང་བཅས་པར་ངེས་པར་བརྟགས་ཏེ། པུཾ་[5]ལ་སོགས་པའི་ཡི་གེ་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་རྩིབས་ཀྱིས་སྟོང་པའི་འཁོར་ལོའི་རྣམ་པས་གནས་ལ་སོགས་པ་རྣམས་སྤྱི་བོ་[6]ལ་སོགས་པར་ཅིག་ཅར་གྱིས་བལྟ་བར་བྱའོ། །གནས་ལ་སོགས་པ་དེ་དག་[7]ཏུ་དེ་དང་དེའི་གནས་ལ་གནས་པའི་རྩ་རྣམས་ལྷ་དེ་དང་དེའི་གཟུགས་སུ་[8]ཡོངས་སུ་གྱུར་པར་རྣམ་པར་གནས་པར་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །ཇི་ལྟར་ཕྱི་རོལ་གྱི་ཞིང་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཉེ་བར་གནས་པའི་ཚུལ་གསོ་བར་བྱེད་པ་ལྟར་ལུས་ལ་ཡང་རྩ་རྣམས་ཀྱིས་སེན་མོ་ལ་སོགས་པ་གསོ་བར་བྱེད་པས་མཚམ་པ་ཉིད་དོ། །ཕྱི་རོལ་དུ་[9]རྡོ་རྗེའི་གནས་བྱང་ཆུབ་ཆེན་པོ་[10]ནི་[11]གནས་དང་[12]ནི་རཉྫ་ནའི་ཆུ་བོ་འོ། །ལུས་ལ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་འཁོར་ལོ་ནི་རྡོ་རྗེའི་གནས་སོ༑ ༑ཨཝ་དྷཱུ་ཏཱི་[13]ནི་ནཻ་རཉྫ་ནའོ། ཁ་དང་སྣ་བུག་གཡས་དང་གཡོན་དང་། བཤང་ལམ་ལ་རིམ་གྱིས་བྱ་གདོང་མ་ལ་སོགས་པ་སྒོ་སྐྱོང་མ་རྣམས་སོ། །ནུ་བ་གཡས་གཡོན་གཉིས་

༡ གསེར་° འཁོར་ལོ། ༢ གསེར་° ཀུལླུ། ༣ རྒྱ་དཔེར་° (ཀཱམཙཀྲེ་བུདྡྷཌཱཀི་ནཱི། ཨཝདྷཱུཏཱི་ཀཱ་ཏུ་ནཱ་སཾ་གྲཧཿ) སྐུའི་འཁོར་ལོ་སྡེ་ས་འོག་ལ་སྤྱོད་པའོ། །འདིས་ནི་ས་འོག་ལ་གནས་པ་རྣམས་བསྡུས་སོ། ༤ གསེར་° པཾ་ཛཾ། ༥ གསེར་° པུཾ། ༦ གསེར་° སྣམས་སྤྱི་བོ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་སྤྱི་བོ། ༧ གསེར་° དེ་དག་ མེད། ༨ གསེར་° སུ་ མེད། ༩ གསེར་° དུ། ༡༠ རྒྱ་དཔེར་° (མཧཱ་བོ་དྷི་ཤྲཱི་ཛཀཾ) བྱང་ཆུབ་ཆེན་པོ་ནི་འདུ་ཤེས། ༡༡ གསེར་° བྱང་ཆུབ་ཆེན་པོ་མ། ༡༢ གསེར་° དང་ མེད། ༡༣ གསེར་° ཨཝ་དྷཱུ་ཏི།

ལ་མིག་དང་[1]མིག་ལ་ག་ཤིན་ཛྙེ་བཏྣན་[2]མ་ལ་སོགས་པའོ། །སྙིང་ག་དང་མགྲིན་པ་དང་དཔྲལ་བ་དང་ལྟེ་བའི་པདྨའི་ཟེའི་འབྲུ་ལ་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་བཞིའོ་ཞེས་བྱ་བ་རྐྱུའི་དཀྱིལ་[3]འཁོར་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་ཡང་དང་ཡང་དུ་ལྷག་པར་མོས་པ་བརྟན་པར་བྱའོ། །

དེ་ནས་གཏོར་མ་དབུལ་བ་ནི་བཟའ་བ་ལ་སོགས་པ་[4] མདུན་དུ་བཞག་པ་ལ་སྔར་བཤད་པའི་རིམ་པས་དག་པར་བྱས་ལ། ཟླ་ངའི་ཕྱག་རྒྱ་དང་དེའི་སྔགས་གཉིས་ཀྱིས་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་རྫོགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་མདུན་དུ་སྤྱན་དྲངས་ལ་ཕྱུགས་[5] སུ་གསོལ་ཏེ། མཆོད་ཡོན་ལ་སོགས་པ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་ཡང་དག་པར་མཆོད་ནས་ལག་པ་གཉིས་ཨཱ་ལི་དང་ཀཱ་ལི་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་ཟླ་བ་དང་ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་རང་བཞིན་གྱི་ནང་དུ་ཧཱུྃ་ཡིག་བསྒྲུས་ལ་ཨོཾཨཱཿཎཱུཾ་ཎུ་ཨཎུགཏཱཿ[6]སརྦཏཐཱགཏཱཿསྥ྄རསྥ྄ར[7]ཨཎུསྤྲཝིཀྲྀཏཱསརྦཏཐཱགཏཱཿཨཱདུནདཨཎུསྤྲཝིཀྲྀཏཿསརྦཏཐཱགཏཱཿཧཱུྃ་ཞེས་བྱ་བ་[8]སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་ཟླ་བ་དང་ཉི་མ་ལ་གནས་པ་ཧཱུྃ་ཡིག་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་རྡོ་རྗེའི་ཐལ་མོ་འི་ལག་མཐིལ་དུ་བདུད་རྩིའི་སྣོད་དེ་གཞག་[9]པའམ་བསྐོམས་ཏེ་འདོད་ངའི་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་ཆེད་དུ་འདི་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ།

ལྷ་མོ་ཚད་མ་དམ་ཚིག་ཚད་མ་དང་། །
དེས་གསུངས་པ་ཡི་ཚིག་ནི་ཚད་མ་མཆོག །
བདེན་པ་འདིས་ནི་ལྷ་མོ་དེ་དག་རྣམས། །
བདག་ལ་རྗེས་སུ་འཛིན་པའི་རྒྱུར་གྱུར་ཅིག །

དེ་ནས་མཆོད་བྱ་དང་མཆོད་བྱེད་མཆོད་[10]པ་རྣམས་དབྱེར་མེད་པར་བལྟས་ལ་བདུད་རྩིའི་སྣོད་དེ་ཕྱོགས་ལ་གཡོན་སྐོར་དུ་ཤར་ཕྱོགས་ནས་བརྩམས་ནས་[11]སོ། །

༡ རྒྱ་དཔེར་° ([illegible]) གཉིས་དང་མིག་གཡས་གཡོན་གཉིས་ལ། ༢ གསེར་° གཏན། ༣ གསེར་° བྱ་བ་དཀྱིལ་འཁོར། ༤ གསེར་° མའི། ༥ གསེར་° བཞུགས། ༦ གསེར་° ཎཱུཾ་ཎུ་ཨཎུགཏཱཿ ༧ གསེར་° པར་སྤར། ༨ གསེར་° ཞེས་པ། ༩ གསེར་° བཞག ༡༠ གསེར་° མཆོད་མེད། ༡༡ གསེར་° ནས་མེད།

མཚམས་ལ་མེ་མཚམས་ནས་བརྩམས་ནས་གཡས་སྐོར་བསྐོར་ཞིང་། ཧཱུྃ་དཀར་པོ་ལས་བྱུང་བའི་རྡོ་རྗེའི་ལྷུགས་[1] ཅན་གཙོ་མོ་ལ་སོགས་པ་འཁོར་ལོ་གསུམ་གྱི་ལྷ་རྣམས་ལ་རང་རང་གི་སྔགས་ལན་གཅིག་བརྗོད་པས་བསྐོར་ཞིང་ཨོཾ་ཨཱཿ[2] ཧཱ་ཧཱི་ཧོཿཛཿཧཱུྃ་བཾ་ཧོཿབཛྲཌཱཀིནཱིསམཡསྟྭཾ དྲྀཤྱཧོཿ། འདིས་ལན་གཅིག་གམ་གཉིས་སམ་གསུམ་མམ་བཞིའམ་ལྔ་བརྗོད་པས་དབུལ་བར་བྱའོ། །དེ་ལ་ཞལ་བསིལ་དང་ཕྱག་ཕྱིས་དང་གོ་ལ་ལ་སོགས་པ་དྲངས་ནས་པི་ཝང་མ་ལ་སོགས་པས་ཡང་དག་པར་མཆོད་ཅིང་བསྟོད་ནས། གསོལ་བ་བཏབ་པར་བྱའོ། །

སྤྱོད་དང་[3] ཞི་ལ་ཆགས་མཉམ་ཀུན་དུ་རྟོག་པའི་ཚུལ་བཅོམ་ཞིང་།།
ཁྱོད་ནི་དངོས་ཀུན་རང་བཞིན་ཉིད་དུ་མཁའ་བཞིན་གཟིགས་གྱུར་པ།།
ཀླུ་བའི་ཆུ་ཡིས་རབ་རྒྱས་སྙིང་རྗེའི་ཐུགས་ནི་རྒྱ་མཚོའི་མཆོག །
ལྷ་མོ་རྣམས་ཀྱིས་བདག་ལ་ཕྱིན་དུ་བརྩེ་བར་མཛད་དུ་གསོལ། །

དེ་ནས་དུར་ཁྲོད་བརྒྱད་ལ་གནས་པའི་ཕྱོགས་སྐྱོང་རྣམས་ལ་སྔར་བཞིན་དུ་བསྐོར་ཞིང་། ཨོཾཁཁཁཱཧིཁཱཧིསརྦཡཀྵརཱཀྵསབྷཱུཏཔྲེཏཔིཤཱཙ[4] ཙཨུནྨཱདཨཔསྨཱར ཌཱཀཌཱཀི ནྱདཡཨིམཾབལིཾགྲྀཧྞནྟུ སམཡརཀྵནྟུསརྦསིདྡྷིམེཔྲཡཙྪནྟུ ཡཐེབཾཡཐེཥྚཾབྷུཉྫཐ པིབཐཛིཏྲཐ མཱཏིཀྲམཐམམསརྦཀཱརྻཏཱཡས[5] སུཁཾ[6] བིཤུདྡྷིསཧཡིཀཱབྷཝནྟུ ཧཱུྃཧཱུྃཕཊཕཊ སྭཱཧཱ། འདི་ལན་གཉིས་བརྗོད་པས་དབུལ་བར་བྱའོ། །བདུད་རྩི་དེ་དག་[7] གསོལ་བས་ཕྱོགས་སྐྱོང་རྣམས་བདེ་བ་ཆེན་པོ་ལྡན་པའི་སྐྱུར་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །དེའི་རྗེས་སུ་གོ་ལ་ལ་སོགས་པ་ཐུན་མོང་དུ་དབུལ་ལོ། །སྙིང་གའི་[8] ས་བོན་ལས་བྱུང་བའི་པི་ཝང་མ་ལ་སོགས་པས་ཡང་དག་པར་མཆོད་ནས་[9] འདོད་པའི་དངོས་གྲུབ་བླངས་ལ་བདའི་ལག་པས་ཡང་དག་

[1] གསེར་༠ ལྷུགས། [2] གསེར་༠ ཨར། [3] གསེར་༠ དམ། [4] གསེར་༠ ཙ། [5] གསེར་༠ ཀྵརདཡ། [6] གསེར་༠ ཤྲི། [7] གསེར་༠ དག་མེད། [8] ཅོ་ནེ་༠ (ས་ཤྲིཡ) ངང་གི་སྤྱོད་གཞི། [9] ཅོ་ནེ་༠ (ཨཱཿཔརམདནྟེཛེ ས ཧཱུྃ) ཤང་པ་བརྒྱུད་པའི་ལུགས་ཀྱིས་བསྒྲོད་ཅིང་།

པར་བཛྲ་བྱས་ལ་ལྷག་ཆད་ཁ་བསྐང་བའི་དོན་དུ་ཡི་གེ་བརྒྱ་པ་[༡] དྲིལ་བུ་དཀྲོལ་བ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་བརྗོད་པར་བྱའོ། །

དེ་ནས་ཨོཾཡོགཤུདྡྷཿསརྦདྷརྨཱཿཡོགཤུདྡྷོ྅[༢] ཧཾ་ཞེས་བྱ་བ་བརྗོད་ཅིང་པདྨའི་ཕྱག་རྒྱས་ཡོངས་སུ་མཉེས་པར་བྱས་ནས། ཕྱག་རྒྱ་དེ་ཉེ་བར་སྤྲུད་པ་ནི་འཁྱུད་པའི་ཕྱག་རྒྱ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བའི་ཚུལ་གྱིས་གཡོན་པའི་མཐེ་བོང་དང་། སྲིན་ལག་བཏབ་པའི་མཐར་[༤] སེ་གོལ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་ཨོཾབཛྲསྥུཿཞེས་བརྗོད་ཅིང་གཤེགས་སུ་གསོལ་བས་འཁོར་ལོ་དེ་བདག་ཉིད་ལ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་གཞུག་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་སྨོན་ལམ་གདབ་སྟེ་ལྷའི་ང་རྒྱལ་གྱིས་གནས་པར་བྱའོ། །

ཁྲུས་ཀྱི་དུས་སུ་དབང་བསྐུར་བའི་ཆོ་གས་བྱའོ། །བཟའ་བའི་དུས་སུ་རང་གི་ལུས་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོའི་བདག་ཉིད་དུ་ཅིག་ཅར་བསམས་ནས་ཆོ་ག་ཇི་ལྟ་བས་གཏོར་མ་དབུལ་བའམ་ཡང་ན་ཡི་གེ་གསུམ་གྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་ལའོ། །ཨོཾཁཁཁཱཧིཁཱཧི་ཞེས་པའི་སྔགས་ལན་གཅིག་བརྗོད་པས་ཕྱོགས་སྐྱོང་རྣམས་ལ་དབུལ་ལ།[༥] ཆོས་ཐམས་ཅད་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱི་ང་རྒྱལ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་འབར་བ་ལ་སོགས་པས་དག་པར་བྱས་ལ་ཆོ་ག་བཞིན་དུ་བཟའ་བ་ལ་སོགས་པ་ཨོཾསམཡཤུདྡྷཿ[༦] སརྦདྷརྨཱཿསམཡཤུདྡྷོ྅ཧཾ།[༧] ཞེས་བྱ་བས་ཆོས་ཐམས་ཅད་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱི་ང་རྒྱལ་གྱིས་ཧཱུྃ་ཡིག་ལས་བྱུང་བའི་ལྕགས་རྡོ་རྗེ་དཀར་པོའི་རང་བཞིན་དུ་བྱས་ནས། ཨོཾཨམྲྀཏོདཀཧཱུྃཧཱུྃཛཛདཱ ཨཱཿཁཾ[༨] ཧཱུྃ་ཞེས་བྱ་བས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་ནས་ལྟེ་བ་ལ་གནས་པའི་བཾ་ཡིག་ཡི་གེ་གསུམ་གྱིས་ཚིམ་པར་བྱའོ། །

---

༡ ཀྲུ་དཔེར་˳ (མནྟྲ) བཀྲ་པའི་སྔགས། ༢ གཞེར་˳ ༣ (ཨ་ཏྲགས་ལ་དེ) མེད། ༤ གཞེར་˳ པའི་མཐར་ མེད། ༥ གཞེར་˳ དབུལ་གོ། ༦ གཞེར་˳ ནྡྷསཐ། ༧ གཞེར་˳ ནྡྷོཀ། ༨ གཞེར་˳ ཨཱཁ།

ཉི་མའི་གྱུང་གི་ཐུན་ལ་བསམ་གཏན་གྱི་ཁང་བུར་ཞུགས་[1] ནས་ཨོཾ་ཨཿ[2] ཧཱུྃ་ཨོཾ་སརྦ་ཡོ་གི་ཙིཏྟཾ་ ཀཱ་ཡ་བཱཀ་ཙིཏྟ་བཛྲ་སྭ་བྷཱ་ཝ། ཨཱཏྨ་ཀོ྅ཧཾ།[3] ཨོཾ་བཛྲ་པུཎྱ་ཛྙཱཿ སརྦ་བཛྲ་པུཎྱ་ཛྙཱ་ཀོ྅ཧཾ།[4] ཞེས་བྱ་བའི་སྔགས་གསུམ་བརྗོད་ཅིང་། ཅིག་ཅར་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོར་ལྷག་པར་མོས་པ་[5] བྱ་སྟེ། ཐམས་ཅད་སྔར་བཞིན་བྱས་ནས། ཅི་བདེ་བར་གནས་པར་བྱའོ།[6] །

ནམ་ཕྱེད་ཀྱི་ཐུན་ལ། ཉི་མ་ཕྱེད་ཀྱི་ཐུན་བཞིན་དུ། ཐམས་ཅད་བྱས་ནས། [7]ངག་གི་བྱ་བ་ཐམས་ཅད་ཨ་ལི་ཀཱ་ལིའི་རང་བཞིན་དུ་རྟོགས་ནས། [8]ཨ་ལ་སོགས་པའི་[9]ཡི་གེ་ཀཱ་ལིའི་[10] མཐར་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་[11]ཕཊ་ཕཊ་ཅེས་བྱ་བ་བརྗོད་ནས། འོད་གསལ་ལ་མངོན་དུ་གྱུར་པར་བྱས་ནས་གཉིད་ལ་ཡང་འོད་གསལ་དུ་མོས་ཤིང་ཉལ་བར་བྱའོ། །ཐུན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཐར་ཡི་གེ་བརྒྱ་པ་བརྗོད་པར་བྱའོ། །ཐོ་རངས་ཀྱི་ཐུན་ལ་འོད་གསལ་ལས་ལངས། དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོར་མོས་པ་བྱས་ཏེ་སྔར་བཤད་པ་ཐམས་ཅད་ཉམས་སུ་བླང་བར་བྱའོ།། །།

ཕྱི་རོལ་གྱི་མཆོད་པའི་ཚིག་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ། འདིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་ལ་མཆོད་པར་འདོད་པ་བདག་གིས་ཐོ་རངས་ལངས་པའམ། ཡང་ན་ཇི་ལྟར་འདོད་པ་ལ་རྡོ་རྗེ་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་མའི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པའི་སྔགས་པས་ས་གཞི་གཙང་མ་ལ་ལག་པ་བཞག་སྟེ། ཨོཾ་སུམྦྷ་ནི་སུམྦྷ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་སྔགས་བརྗོད་ནས་བདུད་རྩི་

༡ གསེར་° བཞུགས། ༢ གསེར་° ཨཿཧཱུྃ། ༣ གསེར་° ཀོ་ཧཾ། ༤ གསེར་° དཀྐོ་ཧཾ། ༥ གསེར་° མོས་པར།
༦ གསེར་° གནས་པར་བྱའོ། །ནམ་ཕྱེད་ཀྱི་ཐུན་ལ་ཉི་མ་ཕྱེད་ཀྱི་ཐུན་བཞིན་བྱས་ནས་ཅི་བདེ་བར་གནས་པར་བྱའོ། །
༧ གསེར་° ངག་གི་བྱས་ནས་ངག་གི ༨ གསེར་° ཨ་ལ་སོགས་པ་ཡི་གེ་ཀཱ་ལིའི་རང་བཞིན་དུ་རྟོགས་ནས་སོ།
༩ གསེར་° པ། ༡༠ གསེར་° ཀཱ་ལིའི། ༡༡ གསེར་° ཧཱུྃ་ཧཱུྃ།

ཟླ་དང་ཉི་ཞིམ་པོ་ལ་སོགས་པའི་རི་ལྦུའམ་གཞན་གང་ཡང་རུང་བའི་རྫས་དང་བསྲེས་པའི་ལྡེ་བའི་རིལ་བུས་མཎྜལ་ཟུར་བཞི་པ་བྱུགས་ཏེ། དེའི་དབུས་སུ་ལག་པ་བཞག་ལ་པ་[1]ཛ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཡི་གེ་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་རྣམས་དང་གནས་དང་ཉེ་བའི་གནས་ལ་སོགས་པ་མིང་བཅུ་པོ་ཡང་དེ་དང་དེའི་སའི་ཆ་ལག་པར་མོས་པ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་བརྗོད་ཅིང་། དེ་ནས་མཎྜལ་དེ་ལ་སྐད་ཅིག་མས་འབྱུང་བ་ཆེན་པོ་བཞི་ལ་གནས་པའི་རི་རབ་ཀྱི་སྟེང་དུ་པདྨ་དམར་པོ་ལ་གནས་པའི་ཉི་མ་ལ་བཾ་གི་ཡི་གེ་བལྟའོ། །དེའི་འོད་ཟེར་གྱིས་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་སྤྱན་དྲངས་ཏེ། དེ་ལ་རབ་ཏུ་ཞུགས་ཤིང་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས། བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་འཁོར་དང་བཅས་པ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་རྫོགས་པར་བལྟའོ། །

དེའི་རྗེས་སུ་རང་གི་སྙིང་གའི་ས་བོན་ལས་འཕྲོས་པའི་པི་ལྦང་མ་ལ་སོགས་པའི་ལྷ་མོ་རྣམས་ཀྱིས་ཡང་དག་པར་མཆོད་ཅིང་། དེ་ལས་སྤྲོས་པའི་རིན་པོ་ཆེ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པ་བདུན་བཤམས་ལ། ཇི་ལྟར་ཚོགས་དག་པར་གྱུར་བའི་ལག་[2]པ་གཡོན་པས་མཎྜལ་གྱི་དབུས་སུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་ལ་ཡི་གེ་གསུམ་གྱིས་མེ་ཏོག་དབུལ་ལོ། །ཡང་དེ་ཉིད་ལ་བཅོམ་ལྡན་འདས་མའི་སྙིང་པོ་དང་ཉེ་བའི་སྙིང་པོའི་སྔགས་གཉིས་ཀྱིས་དབུལ་ལོ། །དེའི་རྗེས་སུ་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་གཤིན་རྗེ་འཇོམས་མ་ལ་ཐུག་གི་[3]བར་དུ་རང་རང་གིས་[4]ཐུགས་ཕྱོགས་རྣམས་ལ་གཡོན་སྐོར་དང་ཕྱོགས་བྲལ་རྣམས་ལ་གཡས་སྐོར་གྱིས་གནས་ཇི་ལྟ་བར་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་མེ་ཏོག་དབུལ་བར་བྱའོ། །དེ་ནས་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་ལག་པའི་མཆོད་པའི་རིམ་པས་ལག་པ་ལ་བསྐྱེད་པའི་ལྷ་རྣམས་ལ་གནས་དེ་དང་དེ་དག་གི་སྔགས་ཨོཾ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་མེ་ཏོག་དབུལ་ལོ། །དེ་ནས་ལག་པ་གཡོན་པར་སོ་སོ་ན་པའི་མེ་ཏོག་ནི་ཀང་པ་བརྒྱད་པའི་སྔགས་བརྗོད་པ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གཏོར་ཏེ་སྤྱི་བོར་ཐལ་མོ་སྦྱར་བ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བ་ལག་པ་ལ་གནས་

---

༡ གཞེར་༌ ཕྱ། ༢ གཞེར་༌ ལག་པའི་ཤག་པ། ༣ གཞེར་༌ ཐུགས་ཀེ ༤ གཞེར་༌ ཀི

པའི་ལྷའི་འཁོར་ལོ་བདག་ཉིད་ལ་བསྒོམ་[1] པར་བྱའོ། །དེའི་རྗེས་སུ་སྙིང་པོ་ལ་སོགས་པ་དང་ཁང་པ་བརྒྱད་པའི་ཕྱོགས་ཀྱིས་བསྐོར་བ་སྔོན་དུ་འགྲོ་ངས་ཇི་ལྟར་བརྗོད་པའི་བསྟོད་པས་ཡང་དག་པར་བསྟོད་དོ། །ཇི་ལྟར་ནུས་པས་སྡིག་པ་བཤགས་པ་ལ་སོགས་པ་དང་། བསམ་གཏན་དང་ཕྱོགས་བཟླས་པ་དང་སྨོན་འཇམ་གདབ་པ་ལ་སོགས་པ་བྱས་ནས་ཡི་གེ།··· བརྒྱ་པ་བརྗོད་ཅིང་། ཨོཾ་ཡོ་གཤུདྡྷཿ སརྦདྷརྨཱ་ཡོ་གཤུདྡྷོ྅ཧཾ་ཞེས་བརྗོད་དེ། ཕྱོགས་དང་བཅས་པའི་པདྨ་བསྐོར་བའི་ཕྱག་རྒྱས་དགྲོལ་བར་ཇུས་ལ། ཕྱག་རྒྱ་ཉེ་ངར་བསྡུས་ནས་འཁྲུད་པའི་ཕྱག་རྒྱ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་རེ་གོལ་གདབ་པ་དང་བཅས་པའི་ཨོཾ་བཛྲ་སུཿ[2] ཞེས་བརྗོད་པས་གཤེགས་སུ་གསོལ་ཏེ་འཁོར་ལོ་དེ་དག་བདག་ལ་རབ་ཏུ་གཞུག་གོ །དེ་ནས་མཎྜལ་གྱི་རིམ་དབྱེ་བར་བྱའོ་ཞེས་ཤེས་པར་བྱའོ། །

ལག་པ་ལ་མཆོད་པའི་ཆོ་ག་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ། ཚོགས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ལ་སོགས་པ་ལ་དཔལ་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་འི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པའི་རྣལ་འབྱོར་པས་ལག་པ་གཡོན་····· པའི་མཐེ་བོ་དང་མཛུབ་མོ་དང་གུང་མོ་དང་སྲིན་ལག་དང་མཐེའུ་ཆུང་དང་དེ་དག་གི་སེན་··· མོ་འི་རྩེ་མོ་རྣམས་ལ་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་དང་། རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དང་། སྣང་བ་མཐའ་ཡས་དང་། མི་བསྐྱོད་པ་དང་། རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་དང་། དོན་ཡོད་གྲུབ་པའི་རང་བཞིན་རིམ་པ་བཞིན་དུ་དཀར་པོ་དང་སེར་པོ་དང་དམར་པོ་དང་ནག་པོ་དང་། ལྗང་གུའི་ཁ་དོག་རྣམས་ནི། ཨོཾ་ཧནམཿཏི[3]སྭཱ་ཧཱ། བ་ལིཾ་ཏེ།[4] ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཏོཿ[5] ཕཊྟེཾ་ཀེ་ཡེ་ཀེ་རྣམས་རྣམ་པར་བསྐྱེད་དོ། །ལག་པའི་མཐིལ་དུ་སྐད་ཅིག་མས་རྫོགས་པར་གྱུར་པའི་པདྨ་དམར་པོ་འདབ་མ་ལྔ་པ་བསམས་ལ། དེའི་ཤར་ལ་སོགས་པའི་འདབ་མ་རྣམས་ལ་གཡོན་སྐོར་གྱིས་རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བར་[6] གཤིན་རྗེ་མ་དང་གཏི་མུག་མ་དང་། ཀུན་བསྐྱོད་མ་དང་། དྲག་མོ་དང་། གཏུམ་མོ་འི་རང་བཞིན་གྱིས་སྔོན་མོ་དང་། དཀར་མོ་དང་། སེར་མོ་

༡ གསེར་༠ བསྒོམ། ༢ གསེར་༠ སུམ། ༣ གསེར་༠ མཏི། ༤ གསེར་༠ ཏེ། ༥ གསེར་༠ ཏོ། ༦ གསེར་༠ ཛ་ལྟར།

དང་། ཀླུང་ཀུ་[1]དང་། དུ་བའི་མདོག་ཅན་རྣམས་ནི་ཧཾ་ཡཾ་[2]ཧྲཱིཾ་མཾ་ཧྲཱིཾ་ཧྲཱིཾ་[3]ཀླཱྀཾ་ཀླཱྀཾ་ཕཊ་ཕཊ་ཅེས་ས་བོན་གྱི་ཡི་གེ་རྣམས་བལྟའོ། །ཟེའུ་འབྲུ་ལ་རྗེ་རྗེ་ཕག་མོ་འི་རང་བཞིན་ཁ་དོག་དམར་མོ་ཨོཾ་བཾ་ཞེས་བྱ་བའི་ས་བོན་ནོ། །དེ་དག་[4] དེ་དག་གི་གཟུགས་བརྟན་ནམ་འཁོར་ལོ་གསུམ་ལག་[5]པའི་རྒྱབ་ཏུ་གསལ་བར་བལྟའོ། །

དེ་ནས་ལག་པར་སོན་པའི་ས་ཆུ་མེ་རླུང་དང་ནམ་མཁའི་ཁམས་ལ་ལྟུང་བྱེད་མ་དང་། གསོད་བྱེད་མ་དང་། འགུགས་བྱེད་མ་དང་། གར་གྱི་དབང་ཕྱུག་མ་[6]དང་། པདྨའི་དྲ་བ་ཅན་གྱི་རང་བཞིན་དུ་ལྷག་པར་མོས་ཏེ། དེ་ནས་[7]ལག་པར་སོན་པའི་ཡི་གེ་རྣམས་ལ་ཁུ་བའི་རྫས་བྱུགས་ལ་ལག་པའི་མཐིལ་དེར་[8]རྣལ་འབྱོར་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་[9]པའི་འཁོར་ལོ་གསུམ་གྱི་རང་བཞིན་དུ་ལྷག་པར་མོས་ཏེ། ཁུ་བ་ལ་སོགས་པའི་རྫས་དེ་ཡི་གེ་གསུམ་གྱི་ཐུགས་དང་རྐང་པ་བརྒྱད་པའི་ཐུགས་ཀྱིས་དབུལ་བར་བྱའོ། །ད་ནས་མཆོད་པས་ཡང་དག་པར་མཆོད་ལ་ལྷག་ཆད་ཡོངས་སུ་བསྐང་བར་བྱ་བའི་དོན་དུ་ཡི་གེ་བརྒྱ་པ་བརྗོད་ཅིང་ཚོགས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་དོན་དུ་གསོལ་བ་བཏབ་ལ། ཁུ་བའི་རྫས་དེ་རྫས་གཞན་ལ་བསྒྲུབས་པའམ་ཡང་ན་གཞན་ཅིག་ཏུ་བསྒྲུབས་ནས་ལག་པར་གནས་པའི་རྫས་དེ་གཡོན་པའི་སྦྱིན་ལག་གིས་བཟུང་ནས་སྙིང་ག་དང་ལྟེ་དང་དཔྲལ་བ་ལ་ཀླཱྀཾ་ཨཱཿཨོཾ་ཞེས་བརྗོད་པ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་བྱུགས་ཏེ་ལྷའི་ཚོགས་དེ་རྣམས་བདག་ལ་རབ་ཏུ་ཐིམ་པར་ལྷག་པར་མོས་པ་[10]བྱའོ། །ཆོ་ག་འདི་ནི་ཀུན་དུ་སྤྱོད་པའི་རྒྱུད་ལས་རབ་ཏུ་གྲུབ་པའ། །ལག་པ་མཆོད་པའི་ཆོ་གའོ། །

ཡང་ན་གོང་དུ་བཤད་པའི་ཚོགས་དག་པར་གྱུར་པའི་ལག་པ་གཡོན་པའི་སྦྱིན་ལག་གིས་[11]གནས་དང་ཉེ་བའི་གནས་ལ་སོགས་པའི་མིང་བཅུ་བརྗོད་ཅིང་ཇི་ལྟར་ཚོགས་

---

[1] གསེར་། ཀླུངས་ཀུ [2] གསེར་། ཧཾ་ཡཾ [3] གསེར་། ཧྲཱིཾ་ མེད། [4] གསེར་། དེ་དག་ མེད། [5] གསེར་། ལགས།
[6] གསེར་། ཕྱུག་མ། [7] རྒྱ་དཔེར་། (༥༥༩༥) དེ་ནས་དེ་ལས། [8] གསེར་། དེ། [9] གསེར་། བརླབས།
[10] གསེར་། མོས་པར། [11] གསེར་། གིས་ མེད།

དག་པར་བྱས་པའི་ཚང་གིས་[1]འཁོར་ལོ་རྫར་གཟུམ་ཉིས་བརྩིགས་མངོན་པར་བྲིས་ལ་······
དེའི་དབུས་[2]སུ་འཁོར་ལོ་ཟླུམ་པོ་འོ། །དེ་ལ་རང་གི་སྙིང་གའི་ས་བོན་ལས་སྤྲོས་པའམ་
དེའི་འོད་ཀྱིས་བཀུག་པའི་རྟེན་དང་བརྟེན་པར་བཅས་པའི་བཅོམ་ལྡན་འདས་མའི་འཁོར་ལོ་
རྣམ་པར་བསམས་ལ། དེ་ལ་བདུད་རྩི་རྣམ་པ་ལྔ་ལ་སོགས་པའི་རང་བཞིན་གྱིས་རྫོགས་
པར་བྱས་པའི་བཟའ་བ་དང་བཏུང་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཡི་གེ་གསུམ་མམ་ཀྱང་པ་བརྒྱད་པའི་
སྔགས་ཀྱིས་པདྨའི་སྣོད་ལ་སོགས་[3]པའི་བདུད་རྩིར་གྱུར་པའི་མདུན་མཐེ་བོང་དང་སྲིན་······
ལག་གཉིས་ཀྱིས་བླངས་ལ་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་ལ་རང་གི་སྙིང་པོ་དང་ཉེ་བའི་སྙིང་པོ······
གཉིས་ཀྱིས་[4]དབུལ་ལོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་ག་ཞིན་ཛྷེ་འཛོམས་པའི་[5]མཐར་
ཐུག་པ་ལ་རང་རང་གི་[6]སྔགས་ཀྱིས་དེ་དག་ལ་ཚིམ་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་མཆོད་པས་
ཡང་དག་པར་མཆོད་ལ། ལྷག་པ་དང་ཆད་པ་བསྐང་བའི་ཕྱིར་ཡི་གེ་བརྒྱ་པ་བརྗོད་ནས་··
ཚོགས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་[7]པའི་དོན་དུ་གསོལ་བ་གདབ་སྟེ། ཨོཾ་ཡོ་ག་ཤུ་[8]དྡྷཿ
སརྦདྷརྨཱཿཡོ་ག་ཤུདྡྷོ྅ཧཾ་ཞེས་བརྗོད་ཅིང་། པདྨ་བསྐོར་བའི་ཕྱག་རྒྱས་དབྱེས་པར་བྱས་
ལ། དེའི་ཕྱག་རྒྱ་ཉི་བར་བསྒྱུ་བས་འཁྱུད་པའི་ཚུལ་སྟོན་དུ་འགྲོ་བས་[9]སྲིན་ལག་གིས་
ས་ལ་རེག་ཅིང་ཨོཾ་བཛྲ་མུཿཞེས་བརྗོད་ནས་གཞེགས་སུ་གསོལ་དེ་འཁོར་ལོ་དེ་བདག་ལ་[10]
ཐིམ་པར་བསམ་མོ། །དེ་ནས་ས་དེ་ལ་གནས་པའི་མདུན་གཡོན་པའི་སྲིན་ལག་གིས་
བླངས་ནས། དེས་སྙིང་ག་དང་ལྟེ་དང་དཔྲལ་བ་ལ་ཧཱུཾ་ཨཱཿཨོཾ་བརྗོད་པ་སྟོན་དུ་འགྲོ་བས་
བྱུག་ཅིང་ལག་པ་ལ་སོགས་པའི་ལྷ་རྣམས་ཀྱི་འཁོར་ལོར་[11]བདག་ལ་རབ་དུ་ཞུགས་པར་
བལྟའོ། །ལག་པས་མཆོད་པའོ། །དེ་ནས་ཧཱུཾ་[12]དཀར་པོ་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་རྡོ་རྗེའི་

༡ གཞེར་° གིས་ མེད། ༢ གཞེར་° དེའི་དུས། ༣ གཞེར་° སོན་པའི། ༤ གཞེར་° ཀྱིས་ མེད། ༥ གཞེར་° མའི།
༦ སྡེ་° གིས། ༧ གཞེར་° བརླབས། ༨ གཞེར་° ཨོཾ་ཀ་ཤུ ༩ གཞེར་° འགྲོ་བར། ༡༠ གཞེར་° དེ་དག་ལ།
༡༡ གཞེར་° ཀྱིས་འཁོར་ལོ། ༡༢ རྒྱ་དཔེར་° (ཨོཾ་ཀུམྨ ཨོཾ་ཀཱར) ཨོཾ་དཀར་པོ་ཨོཾ་ཡིག

ལྷེ་ཅན་གཡས་པའི་དཀར་གཟར་དང་། ཅིག་ཤོས་ཀྱི་[1] བླུགས་གཟར་གྱིས་རང་བ་[2] ལྟེ་བའི་པདྨའི་ཟེའུ་འབྲུ་ལ་གནས་པའི་འབར་བའི་ཕྱེང་དས་འཁྲུགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ··· སྦྱིན་སྲེག་བྱ་ཞེས་ལྷག་པར་ནང་གི་སྦྱིན་སྲེག་གོ །

ལྷག་མ་ཨོཾཨཱཿཧཱུཾཙཀྲེ[3]ཁཱ་ཧི་བཛྲཨརྡྷིཏིཁཱ་ཧི[4] ཨིམཾབལིཾ་ཀྲུཥྞ་ཧ་ཞེས་པས་དབུལ་བར་བྱའོ། །

དེ་ནས་ཁམས་གསུམ་གྱི་འཁོར་ལོ་འི་སྟོང་པ་དང་སྙིང་རྗེའི་གཉིས་སུ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མེ་ལ་མན་ངག་བཞིན་དུ་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པའི་ཞིང་བསྲེགས་[5] པ་ནི་བླ་ན་མེད་པའི་སྦྱིན་སྲེག་གོ །ཞི་བ་དང་རྒྱས་པ་ལ་སོགས་པའི་ཕྱི་རོལ་གྱི་སྦྱིན་སྲེག་གི་ཆོ་གའི་ལས་ཀྱི་རྗེས་སུ་འབྲང་བར་གྱུར་[6] པའི་ཐབ་དང་། མེ་ཏོག་དང་ཤིང་དང་སླུབ་པའི་ཐབས་ལ་སོགས་པ་རྗེས་སུ་དྲན་པར་བྱའི་[7]། འདིར་ཡི་གེ་[8] མངས་པས་འཇིགས་པས་མ་བྲིས་སོ། །དེ་ལྟར་རེ་ཞིག་མཆོད་པ་དང་གཏོར་མའི་ཆོ་ག་ལ་སོགས་པ་དང་བཅས་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་སྒོམ་[9] པ་རྒྱས་པར་བསྟན་པའོ། །

བར་མ་འདོད་པས་ནི་ཕྱོགས་ཀྱི་[10] འདབ་མ་བཞི་ལ་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་བཞིའོ། །ཕྱོགས་བྲལ་གྱི་འདབ་མ་རྣམས་པདྨའི་སྟོད་ལ་གནས་པའི་དམ་ཚིག་གི་རྫས་རྣམས་སོ། །དབུས་སུ་ཇི་ལྟར་བསྟན་པའི་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ་ལྷ་ཐྲའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །གཏོར་མ་དང་མཆོད་པ་ལ་སོགས་པ་ཇི་ལྟར་འབྱོར་པས་ལྷ་པོ་རྣམས་རང་རང་གི་སྔགས་རྣམས་ཀྱིས་བྱའོ། །སྲུང་[11] བའི་འཁོར་ལོ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱང་སྔར་བཞིན་དུ་བྱའོ། །ཚུལ་གཞན་ཡང་འདི་ནི་ཨོ་རྒྱན་གྱི་གནས་

༡ གཞན་༔ ཀྱིས། ༢ གཞན་༔ རང་གི་ མེད། ༣ གཞན་༔ ཙ། ༤ གཞན་༔ ཏིཁ་ཊ། ༥ གཞན་༔ བསྲེག
༦ གཞན་༔ འགྱུར། ༧ གཞན་༔ བྱའོ། ༨ གཞན་༔ འདིར་ཡི་གེ་ མེད། ༩ གཞན་༔ བསྒོམ། ༡༠ གཞན་༔ ཀྱིས།
༡༡ གཞན་༔ བསྲུང་།

ལས་བྱུང་བའི་རིམ་པས་ནི་ཞབས་གཡོན་སྟེང་དུ་བརྐྱང་དར་གྱུར་པའོ། །སྐྱེད་[1]པར་བྱེད་པའི་[2]ས་བོན་དང་སྙིང་པོ་ལ་སོགས་པའི་སྔགས་རྣམས་དང་འཁོར་གྱི་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་··· སོགས་པ་ཡང་སྔར་བཤད་པ་བཞིན་ནོ། །

བསྡུས་པ་ལ་དགའ་བས་ནི་ཇི་ལྟར་བཤད་པའི་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་གཅིག་པུ··· ཉིད་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །མཆོད་པ་ལ་སོགས་པ་ཇི་ལྟར་འབྱོར་བས་[3]བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་ལ་བྱའོ། །ཚུལ་གཞན་ཡང་གང་ལ་ཡང་འདི་དག་ནི་རང་གི་སྙིང་གར་ཟླ་བ་ལ་གནས་པའི་ཨོཾ་དཀར་པོའི་འོད་ཟེར་རྣམས་ཀྱིས་བཀུག་པའི་སངས་རྒྱས་ལ་སོགས་པ་ལ་མཆོད··· ནས་ཇི་སྲིད་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་བར་དུ་རྣམ་པར་བསྒོམས་དེ། ཟླ་བ་དང་རྡོ་རྗེ་དང་བཾ་གི་ས་བོན་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་པདྨ་དང་ཟླ་བའི་གདན་ཅན་ཡང་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །

འོན་ཏེ་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་འདི་ཁ་ན་རྡོ་རྗེ་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་མ་རྡོ་རྗེ་རྣལ··· འབྱོར་མ་ཞེས་ཀྱང་ཟེར་རོ། །ལྷག་མ་འདི་སྟེ་གཞུང་དང་གདམས་ངག་ཇི་ལྟ་བར་མན་ངག་གི་རྣམ་པར་དབྱེ་བས་བཞི་སྟེ། འདི་ལྟ་སྟེ་[4]རང་གི་ལྟེ་བའི་དབུས་སུ་གནས་པའི་རཾ་[5]ལས་བྱུང་བའི་ཆའི་འཁོར་ལོ་ཟུར་གསུམ་པའི་སྟེང་དུ་པདྨ་དམར་པོ་འདབ་མ་བཞི་པ་ལ་ཡི་གེ། ཧྲཱིཿ[6]དམར་པོ་བལྟའོ། །དེ་དག་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་སྐུ་མདོག་དམར་མོ་ཞབས་གཡོན་བསྐུམ་ཞིང་གཡས་བརྐྱང་བས་རོའི་གདན་ལ་གནས་པ་དབུ་སྐྲ་དམར་པོ་བྱིན་ལ་བརྫེས་པ། ཕྱག་བཞི་པའི་གཡས་པ་གཉིས་ན་རྡོ་རྗེ་དང་ལྕགས་ཀྱུའོ། །གཡོན་གཉིས་ན་ཁ་ཊྭཱཾ་ག་དང་ཐོད་པ་དང་། ཕྱོགས་མཐུན་དང་ཞགས་པར་བཅས་པ་འཛིན་པ། གསུམ་པ་འབྱུང་བ་ཕག་ཞལ་ཅན་གྱི་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་[7]བསྒོམ་པར་བྱའོ། །

---

༡ རྒྱ་དཔེར་◦ (ཝི་ཀཱ་ས་ན་ཀྲྀ) རྫོགས་པར་བྱེད། ༢ གསེར་◦ པའི་ མེད། ༣ རྒྱ་དཔེར་◦ (ཡ་ཐཱ་ཀྲྀ) ཇི་ལྟར་བརྗོད་པའི། ༤ གསེར་◦ འདི་ལྟར། ༥ གསེར་◦ རམ། ༦ གསེར་◦ ཧྲིཿ ༧ རྒྱ་དཔེར་◦ (ཝཛྲ་ཝཱ་རཱ་ཧཱི) བཅོམ་ལྡན་འདས་མའི་རང་བཞིན།

ཁྱད་པར་གྱི་གཟུགས་ནི་གོང་བཞིན་དུ་སྟེ་དཔལ་རྡོ་རྗེ་ཕག་ཞལ་མའི་རིམ་པའོ།། ཁྱད་པར་ནི་ཨོཾ་སྒྲི་ཧྲིཾ་ཧཱུཾ་[1]ཞེས་བྱ་བ་ནི་[2]སྙིང་པོ་འོ། །ཨོཾ་བཛྲ་བཱ་རཱ་ཧཱི་ཨ་བཱི་[3]ཤ་ཡ་ས་ཏྭཱཾ་ཏཱ་ཀ་ཊཾ་ཧཱུཾ་སྭཱ་ཧཱ་ཞེས་པ་ནི་སྙིང་[4]པོ་འོ། །ལྷ་མོའི་རྣལ་འབྱོར་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་འབུམ་ཕྲག་གཅིག་བཟླས་པས་འགྲུབ་པར་འགྱུར་བ་ལ་ཐེ་ཚོམ་མེད་དོ། །ཨོཾ་ཨཱ་ཧྲཱིཾ་ཧྲུཾ་ཧཿཧཿསྔགས་འདི་དག་གིས་རས་རིས་ཀྱི་མདུན་དུ་ཤ་ཆེན་[5]གྱི་ཞུ་མས་བདུག་སྤོས་དབུལ་ལོ། །ཞག་ཉི་ཤུ་རྩ་གཅིག་གིས་འདོད་པའི་དོན་འགྲུབ་པའོ། །ཨོཾ་ཧྲཱུཾ་[6]ཀཾ་ཀཾ་[7]ཧཿཧཿཧཱིཿཧཱིཿཧཱིཿཧཱིཿ[8]ཕེཾ་ཕེཾ་ཞེས་པའི་ཡི་གེ་བདགས་[9]ནས་བདུད་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ལས་རབ་ཏུ་ཞི་བའི་དོན་དུ་ཉེ་བར་སྦྱོར་[10]པ་ལྷུས་མཚན་མོ་གཏོར་མ་བཏང་ངོ་། །སྣོད་མ་ཡིན་པ་ལ་ཚིག་འདི་བསྟན་པར་མི་བྱའོ།། དེས་རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་རློབ་པར་འགྱུར་རོ། །ཨོཾ་ཧྲཱི་ཧྲཱ་ད་ཡ་ས་ཏྭ་ཏུཊྚཱཾ་ཧཱུཾ་[11]ཕཊ་སྭཱ་ཧཱ་ཞེས་པ་འདིས་དང་པོ་གཏོར་མ་ཕུལ་ནས་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོའི་སྒྲུབ་པ་ལ་འབད་པར་བྱའོ། །སྔར་བཤད་པའི་གཏོར་མའི་ཚིག་ལ་སོགས་པ་ཡང་འདིར་བྱ་སྟེ། ཚིག་ལྷག་མ་ཁྱད་པར་འཕགས་པས་སོ། །

ཚུལ་གཞན་ཡང་འདིར་སྙིང་གར་པདྨ་དམར་པོ་ལ་ཨཾ་ལས་བྱུང་བའི་ཉི་མ་ལ་གནས་པའི་ཧྲཱིཾ་དཀར་པོས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའི་རྡོ་རྗེ་དམར་པོ་རྩེ་ལྔ་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་སྐུ་མདོག་དཀར་མོ་པདྨ་དམར་པོ་དང་ཉི་མ་ལ་གནས་པ་མི་ཤེས་པའི་སྐྱེས་བུའི་སྟེང་དུ་ཞབས་གཡོན་བསྐུམ་གཡས་བརྐྱང་བས་གནས་པའོ། །དེའི་སྙིང་གར་ཉི་མ་ལ་གནས་པའི་ཧྲཱིཾ་དམར་པོའི་ཡི་གེས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའི་ཉི་མ་ལ་གནས་པའི་རྡོ་རྗེའོ། །སྣ་ཚོགས་པདྨ་དང་ཉི་མའི་གདན་ལ་གནས་པའི་མི་བསྐྱོད་པས་དབང་བསྐུར་ཏེ། གཞན་ཐམས་ཅད་ནི་སྔར་བཞིན་ནོ། །

---

[1] གསེར་ ཧྲཱི། [2] གསེར་ བྱ་བའི་ནི། [3] གསེར་ ཨབི། [4] གསེར་ ཏུཏྟཾ་ནི། [5] རྒྱ་དཔེར་ (ཤུན་ཧྲིད་ཡམ) ཤ་བའི་སྙིང་པོ་ཡིན། ། [6] གསེར་ ཁ་ཚན། [7] གསེར་ ཀཾ་ཀཾ། [8] གསེར་ ཧྲིཿཧྲིཿ། [9] གསེར་ བཏགས། [10] གསེར་ སྦྱོར། [11] གསེར་ ཏུཏྟཾ།

དེའི་རྗེས་སུ་ལྟེ་བར་སྣ་ཚོགས་པདྨ་ལ་གནས་པའི་ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་དམར་སྐྱ་ལ་ཧྲཱིཿདཀར་པོ་བལྟས་ལ། སྔགས་དེའི་ཕྲེང་བ་དཀར་པོ་ཕྲེང་བའི་རྣམ་པ་[1]བཞིན་དུ་འཁོར་ལོ་བསྐོར་བའི་ཚུལ་འཕྲོར་གྱི་ཁ་ནས་འཐོན་དེ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་གྱི་ཚོགས་དང་ནོར་བུ་དང་སྔགས་དང་སྨན་དང་ཟླ་བ་དང་སྐར་མ་དང་ཡི་གེའི་བསྟན་བཅོས་ཀྱི་སྒྱུ་རྩལ་ལ་སོགས་པའི་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་ཁྱེར་ནས་ལྟེ་བའི་བུ་གར་རབ་ཏུ་ཞུགས་པས་རང་དང་གཞན་གྱིས་མི་ཤེས་པའི་སྨུན་[2]པ་བསྒྲིག་པའི་བདག་ཉིད་ཅན་སྒོམ་ཞིང་། སྐྱུར་བ་ལ་སོགས་པའི་ཉེས་པ་དང་བྲལ་བས་སྔགས་བཟླས་སོ། །སྔགས་ནི་ཧྲཱིཾ་ཧྲཱིཾ་ཞེས་པའོ། །གང་གི་ཚེ་ལྡང་བར་འདོད་པར་གྱུར་ན་དེའི་ཚེ་སྔགས་ཀྱི་ཕྲེང་བ་ལྟེ་བ་ལ་གནས་པའི་ཧྲཱིཾ་[3]གི་ཡི་གེ་ལ་རབ་ཏུ་ཐིམ་ནས་མཆོད་པ་ལ་སོགས་པ་བྱས་ལ་ཇི་ལྟར་བདེ་བས་ལྡང་བར་བྱའོ།། ཡང་ན་ཡི་གེ་ཨཿཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་པདྨའི་འདབ་མ་ལྔ་བུར་[4]གྱུར་པའི་ལྟེ་ལ་[5]ཧྲཱིཿ[6]དམར་པོ་གསལ་ཞིང་འབར་བ་རྣམ་པར་བསྒོམས་དེ། དེ་ལ་སེམས་རྩེ་གཅིག་པས་བརྟན་པར་བྱས་ནས་བརྒྱ་ཕྲེད་ཀྱི་ཕྲེང་བ་ལ་ཐུན་གསུམ་མམ། བཞིར་བཟླས་པར་བྱའོ། །

དེ་ལྟར་བཟླས་པ་དང་། བསྒོམ་[7]པའི་རྣལ་འབྱོར་པས་འབུམ་ཕྲག་བདུན་བཟླས་པས་བསྟན་བཅོས་ཐམས་ཅད་ལ་མཁས་པར་འགྱུར་བ་དང་། བློ་རྣོ་བར་གྱུར་པས་འཛིན་བཟང་བ་དང་། ཚོགས་ཀྱི་ཟློལ་གྱིས་མི་ནོན་པ་དང་། [8]སྨན་ངག་ལ་མཁས་པར་གྱུར་པ་དང་། རིམས་དང་དུག་དང་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ཀྱིས་གནོད་[9]མི་ནུས་པར་འགྱུར་རོ།། སྔགས་འདི་གྲུབ་པར་གྱུར་ན་སྔགས་འདི་བཟླས་པའི་ཐོད་ལེ་ཀར་གང་གིས་[10]ལག་ཏུ་གཏད་པ་དེར་[11]སློངས་པ་ཡིན་ཡང་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་ལ་མཁས་པར་འགྱུར་རོ། །དབང་དུ་བསྡུ་བ་ལ་འདི་ཉིད་དམར་པོའི་རྣམ་པར་བསྒོམས་དེ། ཆོ་ག་བཞིན་དུ་བདུད་རྩི་ཐུངས་ནས་རང་

---

༡ གསེར་༠ རྣམ་པ། ༢ རྒྱ་དཔེར་༠ (སནྡྷཱ) མི་ཤེས་པ་ཐམས་ཅད། ༣ གསེར་༠ ཧྲཱིཾ། ༤ གསེར་༠ ལྔར། ༥ རྒྱ་དཔེར་༠ (སརྫཱ) རང་གི་ལྟེ་ལ། ༦ རྒྱ་དཔེར་༠ ཧྲཱིཾ། ༧ གསེར་༠ སྒོམ། ༨ རྒྱ་དཔེར་༠ (ཥཊྟཱམཊྟཀཱཔི) སྨྲ་བ་དང་སྨན་ངག་མཁན། ༩ གསེར་༠ གནོན། ༡༠ གསེར་༠ གི ༡༡ གསེར་༠ དེས།

གི་མིང་གི་ཡི་གེ་དང་པོ་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་བསྒྲུབ་བྱ་བསྒོམས་ཏེ་ཐུགས་ཀྱི་ཕྲེང་བ་ལ་[1] འཕྲོས་པའི་འོད་ཟེར་རྣམས་ཀྱིས་བཀུག་ནས་མདུན་དུ་གཞུག་[2] པར་བལྟ་སྟེ། [3]དེའི་སེམས་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་ཟླ་བ་དམར་པོའི་རྣམ་པར་གྱུར་པར་དམིགས་ཏེ། ཐུགས་དེའི་ཕྲེང་བ་ལས་འཕྲོས་པའི་ལྷ་མོ་དམར་མོ་ཕྱག་གཡོན་པ་ན་ཧྲཱིཿལས་བྱུང་བའི་ཞགས་པ······ དམར་པོ་འཛིན་པ། གཡས་པས་མེ་ཏོག་ཨུཏྤལ་ཁ་མ་བྱེ་བ་ལྟ་བུའི་རྡོ་རྗེ་ལྕགས་ཀྱུ་འཛིན་པ་བསྒྲུབ་བྱའི་མདུན་དུ་གནས་པར་བལྟའོ། །དེ་ནས་ཨོཾ་ཨཿཧྲཱིཿ[4] ཨམུཀཙིཏྟཾ ཨཱཀཪྵཡ ཧྲཱིཛཿ ཞེས་བྱ་བས་བསྐུལ་བའི་རྗེས་ལ་ལྷ་མོ་དེ་བསྒྲུབ་བྱའི་ལུས་ཀྱི་ནང་དུ་ཆོ་ག་བཞིན་དུ་ཞུགས་[5] ནས་དེའི་སེམས་ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་གནས་པ་དེ་ཞགས་པས་དྲིལ་ནས······ ལྕགས་ཀྱུས་བསྐུལ་ཞིང་རང་གི་སྙིང་གར་རབ་ཏུ་ཞུགས་ཏེ་ཐུགས་ཀྱི་[6] ཕྲེང་བ་ལ་ཐིམ་པར་བསམ་མོ། །དེ་ནས་བསྒྲུབ་བྱ་དེ་ཐལ་མོ་སྦྱར་བ་དང་གཞན་གྱི་དབང་[7] འབའ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་པ་དང་། སྒྲུབ་པ་པོའི་མངོན་སུམ་དུ་གྱུར་པ་ཅི་ཞིག་བྱ་ཞེས་སྨྲ་བར་[8] བསམ་མོ། །དེ་ལྟར་ཐུན་གསུམ་མམ་ཐུན་བཞི་ལ་བསྒོམས་པས་བསྒྲུབ་བྱ་མྱུར་དུ་ངེས་པར་དབང་དུ་འགྱུར་རོ། །

ཚུལ་གཞན་ཡང་འདིར་[9] སྣ་ཚོགས་པདྨ་དང་ཉི་མ་ལ་[10] གནས་པའི་ཀླཱི་དམར་པོ་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་ཞབས་གཡོན་བསྐུམ་ཞིང་གཡས་བརྐྱང་བས་རོའི་གདན་ལ······ བཞུགས་པ། དབུ་སྐྲ་དམར་ཞིང་འབར་བ་གྱེན་དུ་བརྫེས་པ་ཕྱག་གཉིས་ཀྱིས་གཡས་པས་[11] གྲི་གུག་དང་སྡིགས་མཛུབ་མཛད་པ། གཡོན་པས་ཁྲག་གིས་བཀང་[12] བའི་ཐོད་པ་འཛིན་པ་སྟེ། རྒྱན་ལ་སོགས་པ་ལྷག་མ་ནི་གོང་བཞིན་ནོ། །

---

༡ གསེར་༠ ཙོ་༠ ལས། ༢ གསེར་༠ བཞག ༣ རྒྱ་དཔེར་༠ (ཙིཏྟམཱཿཀཪ) སེམས་ཨོཿཨིག ༤ གསེར་༠ ཧྲི།
༥ གསེར་༠ བཞུགས། ༦ གསེར་༠ ཀྱིས། ༧ གསེར་༠ དབང་དུ། ༨ གསེར་༠ བྱ་བར། ༩ གསེར་༠ འདི།
༡༠ རྒྱ་དཔེར་༠ (ཙནྡྲ) ཟླ་བ་ལ་གནས་པའི། ༡༡ གསེར་༠ པས་མེད། ༡༢ གསེར་༠ བཀང་།

ཨོཾསརྦབུདྡྷཌཱཀིནཱིཡེ། ཨོཾབཛྲཝརྞནཱིཡེ[1]། ཨོཾབཛྲབཻརོཙནཱིཡེཧཱུྃཧཱུྃཧཱུྃཕཊཕཊཕཊསྭཱཧཱ། ཙ་བའི་སྔགས་སོ། །ཨོཾབཛྲཌཱཀིནཱིཡེཏྲཾ[2] ཧཱུྃཕཊསྭཱཧཱ། སྙིང་པོ་འི་སྔགས་སོ།། །ཨོཾབཛྲཡོགིནཱིཡེཧཱུྃཕཊ[3]སྭཱཧཱ། ཉེ་བའི་སྙིང་པོ་འི་སྔགས་སོ། །ཨོཾབཛྲཌཱཀིནཱིཨཱིམཾབ[4]ལིཾཁྲིཏྟཾཁྲིཏྟཾ[5] ཏཏཏཏཁཁཁཁཨཨཨཨམམམཿདཀྵམྨེ[6] ཁྲཡཙྪཙྪཧཱུྃཕཊསྭཱཧཱ་ཞེས་བྱ་བའི་སྔགས་འདིས་གོང་བཞིན་དུ་བདུད་རྩིར་གྱུར་པའི་གཏོར་མ་དབུལ་ལོ། ཁྱད་པར་དུ་ཚེས་བརྒྱད་ལ་སོགས་པའི་དུས་ཀྱི་མཚན་མོ་དུར་ཁྲོད་ལ་སོགས་པར་དབུལ་བར་བྱའོ། །

ཚུལ་གཞན་ཡང་འདི་ཉིད་ཀྱི་དམར་པོ་ལས་སྐྱེས་པའི་དབྱུ་སྐྲའི་ཚོགས་གྲོལ…… བར་ཡང་མཐོང་ངོ་། །གཞན་ཡང་རོ་འི་གདན་མེད་པ་ཡང་ཡོད་དེ་སྔགས་རྣམས་ནི་སྔར་གྱི་དེ་ཉིད་དོ། །ཚུལ་གཞན་ཡང་རང་གི་ལྟེ་བ་ལ་གནས་པའི་པདྨ་དཀར་པོ་དང་ཉི་མ་ལ་གནས་པའི་ཆོས་འབྱུང་སེར རྐྱར་ལྟར་དམར་ངའི་དབུས་སུ་ཡི་གེ་ཧྲཱིཿསེར་པོ་ལས་བྱུང…… བའི་སྐུ་མདོག་སེར་མོ་རང་ཉིད་ཀྱིས་གྱི་གྱུག་གིས་རང་གི་སྐེ་བཅད་ནས་མགོ་བོ་ལག་པ… གཡོན་པ་སྟེང་དུ་བཀྲུང་བས་འཛིན་པ། ལག་པ་གཡས་པ་གྲི་གུག་འོག་ཏུ་བཀྲུང་བས་འཛིན་པ། ཞབས་གཡས་པ་བཀྲུང་ཞིང་གཡོན་བསྐུམ་པ། སྐེ[7] ལས་རྩ་ཨབྡྷཏྟིའི་ལམ་ལས་ཁྲག་གི་རྒྱུན་འཐོན་ནས་རེའི་ཁར་ལྷུང་སྟེ། གཞན་ཕ་རོལ་གྱི་རྒྱུན་གཉིས་ནི་ལ་ལན་དང་རསན་ལས་འཐོན་དེ་ངོས་གཉིས་ཀྱིས་རྣལ་འབྱོར་མ་གཉིས་ཀྱི[8] ཁར་འཛུག་པ་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་གཡོན་པའི་ངོས་སུ་རྡོ་རྗེ་རབ་སྔགས་མ་ལྗང་གུ་གཡོན་པས་གྲི་གུག་དང་གཡས་པས་ཐོད་པ་འཛིན་པ། ཞབས་གཡས་བསྐུམ་ཞིང་གཡོན་བཀྲུང་བའོ། །གཡས་ངོས་སུ་རྣམ་པར[9] སྣང་མཛད་མ་སེར་མོ་གཡས་པས་གྲི་གུག[10] དང་གཡོན་པས་ཐོད་པ……

༡ གསེར་༠ ཨོ། ༢ གསེར་༠ ཏྲི། ༣ གསེར་༠ ཕཊ་མེད། ༤ གསེར་༠ བ་མེད། ༥ གསེར་༠ ཁྲིཏྟཾ་མེད། ༦ རྒྱ་དཔེར་༠ མྨེ་མེད། ༧ གསེར་༠ སྐྱེས་ལས། ༨ གསེར་༠ ཀྱིས། ༩ གསེར་༠ པར་མེད། ༡༠ གསེར་༠ ཡུག

འཛིན་པ་ཞབས་གཡས་བརྐྱང་ཞིང་གཡོན་བསྐུམ་པའོ། །གཞན་ཐམས་ཅད་ནི་སྔར་བཞིན་[1]ནོ། །ཨོཾ་སརྦ་བུདྡྷ་ཌཱ་ཀི་ནཱི་[2]ཡེ་[3]བཛྲ་ཝརྞ་ནཱི་ཡེ། ཨོཾ་བཛྲ་བཻ་རོ་ཙ་ནཱི་ཡེ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་[4]ཕཊ་ཕཊ་ཕཊ་སྭཱ་ཧཱ་ཞེས་པ་ནི་བཟླས་པའི་སྔགས་སོ། །

མཆོད་པའི་རིམ་པ་[5]ནི་མཎྜལ་ཟུར་བཞི་པ་ལས་ཉི་མའི་སྟེང་དུ་ཆོས་འབྱུང་བྲིས་ནས་དེའི་དབུས་སུ་ཡི་གེ་ཧྲཱིཿངམ་དེ་ལས་བྱུང་བའི་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་སྔར་བཤད་པའི་གཟུགས་ཅན་མ་ལ་མཆོད་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་ཆོས་འབྱུང་གི་ནང་དུ། ཨོཾ་སརྦ་བུདྡྷ་ཌཱ་ཀི་ནཱི་ཡེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་སྔགས་ཀྱིས་དང་པོར་མཆོད་དོ། །ཨོཾ་སརྦ་བུདྡྷ་ཌཱ་ཀི་ནཱི་ཡེ་ཧཱུྃ་སྭཱཧཱ་ཞེས་བྱ་བ་འདིས་མཆོད་ཡོན་ལ་སོགས་པ་དབུལ་ལོ། །གཡོན་དུ་ནི་ཨོཾ་བཛྲ་ཝརྞ་ནཱི་ཡེ་ཧཱུྃ་སྭཱཧཱ་དང་[6]། གཡས་སུ་ཨོཾ་བཛྲ་བཻ་རོ་ཙ་ནཱི་ཡེ་ཧཱུྃ་སྭཱཧཱ་ཞེས་བྱ་བས་མཆོད་དོ།། དེ་ནས་ཨོཏྟུན་དང་སྤྲོཙཱ་གིར་དང་ཀམཎྜབ་དང་ཤྲཱིཕལ་དང་། ཆོས་སྐུ་དང་། ལོངས་སྐུ་དང་། སྤྲུལ་སྐུ་དང་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་སྐུ་རྣམས་ལ་རེ་རེ་བཞི་[7]པའི་མཐར་ཐུག་[8]གི་མིང་དང་སྦྱོར་ནས་བཏགས་པ་དང་། ཨོཾ་གོང་དུ་བཏགས་པ་དང་། ཐ་མར་སྭཱཧཱ་བཏགས་ལ་མཆོད་དེ་སྔར་བཞིན་དུ་གཤེགས་སུ་གསོལ་བར་བྱའོ། །ཚུལ་གཞན་ཡང་འདི་ཉིད་རང་གི་ལུས་ཁམས་གསུམ་རྣམ་པར་དག་པའི་གཞལ་ཡས་ཁང་དུ་ལྷག་པར་མོས་ཏེ། སྐད་ཅིག་མས་ལྟེ་བའི་དཀྱིལ་དུ་ཕྱག་གཉིས་ཀྱི་གུག་དང་ཐོད་པ་ལྡན་པའི་[9]སྒྲོལ་ཀྱང་ཕྲེད་པའི་གར་གྱི་ཚུལ་གྱིས་གནས་པ་ཛ[10]བའི་མི་ཏོག་ལྟ་བུ་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །

དེ་ཡི་[11]གཡས་སུ་ཕག་ཞལ་ཏེ། །
གཡོན་དུ་བྲི་མོ་འི་ཞལ་ཁོ་ན། །
བདེན་གཉིས་རྣམ་པར་དག་པ་ཡིས། །
ཞལ་གཉིས་སུ་ནི་བརྗོད་པའོ། །

---

༡ གསེར་ བཞིན་པ་བཞིན་ནོ། ༢ གསེར་ ཀི་ནི། ༣ རྒྱ་དཔེར་ ཨོཾ། ༤ གསེར་ ཙོ་ ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ། ༥ རྒྱ་དཔེར་ (པཱུ་ཛཱ་ཝི་དྷི) མཆོད་པ་བརྗོད་པས། ༦ གསེར་ དང་ མེད། ༧ གསེར་ བཞིན། ༨ གསེར་ མཐར་གི ༩ གསེར་ ཙོ་ པ། ༡༠ གསེར་ ཛྙ། ༡༡ གསེར་ དེའི།

དེའི་ཕྱིར་འདི་དག་ལ་སོགས་པ་གྲུབ་ཐོབ་ཀྱི་མན་ངག་ལས་རིམ་པ་དང་རིམ···པས་འབྱུང་བའི་གདུལ་བྱའི་བསམ་པའི་དབྱེ་ངས་བཅོམ་ལྡན་འདས་མའི་མན་ངག་གི་དབྱེ····བླག་མཐའ་ཡས་པའི་དབྱེ་བ་རྟོགས་པར་བྱ་སྟེ། ཕྱོགས་གཅིག་ཙམ་འདིར་བསྟན་ཏོ། རིམ་པ་འདི་རྣམས་ལས་རིམ་པ་གཅིག་ཞུས་ནས་[1] དད་པ་ཅན་སྙིང་རྗེ་དང་ལྡན་པ་དང་······ཆགས་པ་དང་བྲལ་བ་དམ་ཚིག་ལ་གནས་པ་སོམ་ཉི་མི་ཟ་བས་བསྒོམ་པས་ངེས་པར·······བསྒྲུབ་པར་བྱའོ། །

གདམས་ངག་ལས་བྱུང་བའི་དུས་ཀྱི་མཆོད་པ་བྲི་བར་བྱ་སྟེ། ཚེས་བཅུ་ལ་གུར་ཀུམ་ལ་སོགས་པས་ཕྱིས་པའི་དྲི་མ་མེད་པའི་སྣོད་ལ་སིནྡྷུར་བཙགས་ནས་དེའི····དབུས་སུ་གསེར་གྱི་སྐྲུ་གུས་[2] ཆོས་འབྱུང་[3] མངོན་པར་བྲིས་ཏེ། དེའི་དབུས་སུ་ཡི་གེ་ཧྲཱིཾ་བྲིའོ། །ཡང་ན་ས་ཚོན་གྱིས་[4] མཎྜལ་ཟུར་བཞི་པ་བྱས་ཏེ་དབུས་སུ་སིནྡྷུརས་ཆོས་འབྱུང་བཀོད་ནས་དེ་ལ་ཡི་གེ་བཾ་བྲིས་པ་དེའི་ངོས་སུ་གཡུང་དྲུང་གི་ཕྱག་རྒྱ་བྲིས་པ་ལས།། ཆུ་ལས་སྐྱེས་པ་[5] དང་སྐམ་ལས་སྐྱེས་པའི་མེ་ཏོག་གིས་མཆོད་དེ། ཨོ་ཊྱཱན་ལ་སོགས་པའི་གནས་བཞི་དང་སྐུ་བཞི་གོང་[6] བཞིན་དུ་མཆོད་དོ། །བཟའ་བ་དང་བཏུང་བ་ལ་སོགས་པའི་དམ་ཚིག་གི་རྫས་འཁོར་བ་བཞིན་དུ་དབུལ་བར་བྱ་ཞིང་། གཞོན་ནུ་མ་རྣམས་ཀྱང་མཆོད་པར་བྱའོ། །ཚིག་འདི་ནི་གཅེར་བུ་དང་། སྐྲ་གྲོལ་[7] བ་དང་ལྷོ་ཕྱོགས་སུ་མངོན་པར་བལྟས་ཏེ་ཉི་བར་འདུག་ནས་ཤིན་ཏུ་གསང་ཞིང་སྦས་པས་བསྒྲུབ་པ་ལ······འབད་པར་བྱའོ། །དེ་མ་ཡིན་ན་དངོས་གྲུབ་ཉམས་པར་འགྱུར་བ་དང་། ནད་རྣམས་ཀྱང་སོ་སོར་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ནས་གཏོར་མ་ཕུལ་ནས་མངོན་པར་འདོད་པའི་དངོས་གྲུབ་གསོལ་བ་བདབ་སྟེ་གཤེགས་སུ་གསོལ་ལོ། །སིནྡྷུར་དང་ལྷ་བཤོས་ལ་

---

༡ གསེར་ ༠ ཡས་པའི·········ཞུས་ནས་པར་ཆད། ༢ གསེར་ ༠ སྐྲུག་གུས། ༣ གསེར་ ༠ འབྱུང་ མེད། ༤ གསེར་ ༠ གྱི། ༥ གསེར་ ༠ པ་ མེད། ༦ གསེར་ ༠ བཞི་གོང་ མེད། ༧ གསེར་ ༠ སྐྲ་གྲོལ།

སོགས་པ་ནི་གཞོན་ནུ་མ་རྣམས་དང་། ཡང་ན་བུད་མེད་ཡུགས་ས་མོ་མ་ཡིན་པ་ལ་དབུལ་
བར་བྱའོ། །ཡང་ན་ཆོས་བཅུའམ་ཆོས་བརྒྱད་དམ་ཆོས་བཅུ་བཞི་ལ་བུད་མེད་ཀྱིས་འཚོང་
བར་བྱེད་པ་གང་ཡང་རུང་བའི་མེ་ཏོག་དང་། ཤིང་ཏོག་[1]དང་མར་ནག་དང་གོ་ལ་དང་
འབྲས་དང་སྦོ་དང་ཞོ་དང་མེ་ཤིང་དང་[2]ཙྭ་དང་སིནྡྷུར་དང་[3]མདུན་ལ་སོགས་པ་རུང་...
ཟད་ཇི་ལྟར་འབྱོར་བས་ཉེས་[4] ནས་ཅི་ནུས་པའི་གཡོས་བྱས་ནས[5]། སྔར་བཞིན་དུ་
སིནྡྷུར་ལས་བྱས་པའི་ཆོས་འབྱུང་ལ་ས་བོན་གྱི་ཡི་གེ་ལ་སོགས་པ་བྲིས་ནས་ཡང་......
དག་པར་མཆོད་ལ་འདོད་པའི་དངོས་གྲུབ་ལ་གསོལ་བ་གདབ་ཅིང་གཤེགས་སུ་གསོལ་ལོ།།
གཞན་ཐམས་ཅད་ནི་སྔར་བཞིན་དུ་བྱའོ། །

དེའི་རྨི་ལམ[6]་རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མ་ལུང་སྟོན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་མན་ངག་གོ །
གཞན་ཡང་ཤིན་ཏུ་དག་པའི་མེ་ལོང་ལ་ཆོས་བརྒྱད་ལ་སིནྡྷུར་བཀྲམ་ནས་དེ་ལ་ཆོས......
འབྱུང་གི་ཕྱག་རྒྱ་བྲིས་ཏེ། ཕྱིའི་ཟུར་རྣམས་སུ་བཾ་གི་ས་བོན་རྣམ་པར་བྲིས་ལ་དབུས་སུ་
ཧཱུཾ་བྲི་བར་བྱའོ། །ཆོས་འབྱུང་གི་ཕྱི་རོལ་གྱི་ངོས་བཞི་ལ་གཡུང་དྲུང་རིས་གཡོན་
དུ་འཁོར་བར་བྲིས་ལ། མེ་ཏོག་ལ་སོགས་པས་ཡང་དག་པར་མཆོད་ཅིང་ཧཱུཾ་ཇི་ལྟར་
ནུས་པ་ཡོངས་སུ་བཟླས་ཏེ་སིནྡྷུར་སྣོད་ཅིག་ཏུ་གཞག[7]་གོ །ཇི་ལྟར་ཇི་སྲིད་ཟླ་བ་
དྲུག་གི་བར་དུ་བྱའོ། །དེའི་རྗེས་ལ་བཙན་དུག[8] ལངགལི་ལ་སྦྲུ་གུ་ཅན་གྱི་དབུས་སུ་
སིནྡྷུར་བཙུག་ནས་དུར་ཁྲོད་དུ་སྦས་ཏེ་གཏོར་མ་དང་མཆོད་པ་བྱས་ནས་ཇི་ལྟར་འདོད་
པའི་ཆེད་དུ་ཧཱུཾ་བཟླས་སོ། །དེ་ལྟར་ཉི་མ་རེ་རེ་ཞིང་ཟླ་བ་གཅིག་ཏུའོ། །དེ་ནས་
སིནྡྷུར་དེས་གཡུང་དྲུང་རིས་ཀྱི་མཛོད་སྤུ་ནས་བྱས་ཏེ་བསོད་སྙོམས་ལ་གྲོང་ཁྱེར་དུ......

[1] གསེར་. རྟོག [2] གསེར་. མེ་ཤིང་དང་ མེད། [3] རྒྱ་དཔེར་. (མཧཱ་ སཱུ་ (སིཾ) སཱུམ་ཀཱི་ ཤྲཱ་ཀྲཱི་ཏྲཱི་ (ཏཱི) ཨོཾ་ ཧི་དྷཱ་ཌཱ་ཏེ་ཏ་ ན་ཀྲཱི་ ཨ་ཏེ, ཏཏཿ་ཀཱི་ཏྲཱི་ཏོ་ཏ) ཉེ་ཁ་སཱུམ་ཀཱི་ ལ་སོགས་པའི་བཙོན་མོ་རྣམས་ཀྱིས་ཚོང་ནས།
[4] རྒྱ་དཔེ་དང་གསེར་ནང་ཉོན་ཞེས་འདུག་པ་ལེགས། སྡེ་. རྒྱོས། [5] གསེར་. ཏེ། [6] གསེར་. ཅོ་. མི་ལམ་དུ།
[7] གསེར་. བཞག [8] གསེར་. ལྡང་།

རབ་ཏུ་འཇུག་གོ །དེའི་ཚེ་[1] མངོན་སུམ་ནས་དེ་བུད་མེད་གང་ལ་[2] འཕོས་པར་མཐོང་བར་འགྱུར་ན་དེ་ལ་འབད་པས་བསྙེན་བཀུར་བྱའོ། །དེ་ལྟ་བུའི་[3] གྲུབ་ཐོབ་རི་ཁྲོད་པའི་ཞབས་ལས་བྱུང་བའི་ཚུལ་གྱིས་གསུང་དུང་གིས་རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མ་མཉེས་པར་བྱེད་པའི་ཆོ་གའོ།།

དེ་ལ་རྣལ་འབྱོར་མའི་ཆ་ལུགས་སུ་གནས་པས་མཆོད་པ་དང་སྔགས་བཟླས་པ་དང་བཟའ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་རབ་ཏུ་གསང་ནས་གཡོན་པས་བྱའོ། །གནས་ལ་སོགས་པ་བལྟ་བའི་ཕྱིར་འགྲོ་བར་འདོད་པས་རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་དམིགས་པ་གཏད་ནས་གྲོང་ཁྱེར་ལ་སོགས་པ་ལ་གཡོན་སྐོར་དུ་བསྐོར་བར་བྱའོ། །འགྲོ་བ་ལ་[4] ནི་དང་པོ་རྐང་པ་གཡོན་པ་བཀྲུང་ནས་འགྲོ་བར་བྱའོ། །ཇི་ལྟར་བཤམས་པའི་འདོད་ཡོན་རྣམ་པ་ལྔས་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པར་དག་པས་སོ་སོ་ཉི་མེད་པར་ལོངས་སྤྱོད་དོ། །ལྷ་དང་སྔགས་ཐ་དད་དུ་གཟུང་བར་མི་བྱའོ། །སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ལ་སོགས་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་མས་ལྷག་[5] པར་མོས་པས་རྐང་པ་བརྒྱད་པའི་སྔགས་ཀྱིས་མཆོད་ཅིང་ཕྱག་བྱའོ། །སྔགས་དང་ཕྱག་རྒྱ་རང་གི་རྟོག་[6] པས་མི་བྱ་ཞིང་གཞིག་[7] པར་ཡང་མི་བྱའོ་[8]། །ཚུལ་ཁྲིམས་དང་ལྡན་པ་དང་ཉེས་པ་མེད་པ་ལ་མངོན་སྤྱོད་ཀྱི་ལས་མི་བྱའོ། །བུད་མེད་རྣམས་ལ་བརྡུང་བ་དང་ཁྲོ་བ་དང་སྨད་པར་མི་བྱའོ།། །ཁྱད་པར་དུ་ཕྱག་རྒྱ་དྲུག་འཛིན་པ་རྣམས་ལ་མ་ཡིན་ནོ། །འདི་ལ་སོགས་པ་དམ་ཚིག་གི་རྣམ་པ་རྒྱུད་ཀྱི་རྗེས་སུ་འབྲངས་པས་ཤེས་ནས་བསྲུང་བར་བྱའོ། །འཁྲུལ་འཁོར་[9] ལ་སོགས་པ་ཡང་དེ་ཉིད་ལས་ཤེས་པར་རབ་ཏུ་སྦྱར་བར་བྱ་སྟེ། མངས་པས་འཇིགས་པས་མ་བྲིས་ཏེ་མང་པོ་ལ་དོན་མེད་དོ། །

---

༡ རྒྱ་དཔེར་° (ཡ༥ ༥༥) དེ་ལ་གང་དུ། ༢ གསེར་° ལ་ལ། ༣ གསེར་° བུ་ནི། ༤ གསེར་° ལ་མེད། ༥ གསེར་° ལྷག་ས། ༦ གསེར་° རྟོགས། ༧ གསེར་° བཞིག ༨ རྒྱ་དཔེར་° ལྷ་དང་སྔགས་…… མི་བྱའོ།། པར་མེད། ༩ རྒྱ་དཔེར་° (མ༡༥) སྔགས།

ལྷ་མ་སངས་རྒྱས་ལྷ་མ་ཆོས། །
དེ་བཞིན་ལྷ་མ་དགེ་འདུན་ཏེ། །
ལྷ་མ་དཔལ་ལྡན་རྡོ་རྗེ་འཛིན། །
ལྷ་མ་ཉིད་ནི་རྒྱུ་རྐྱེན་འགྱུར། །
དེ་ཕྱིར་སངས་རྒྱས་ཐོབ་འདོད་པས། །
ལྷ་མ་དག་ནི་མཆོད་པར་བྱ། །ཞེས་སོ། །

སྤྲོད་པ་དག་པར་གྱུར་པའི་ཡོན་ཏན་མེ་ཏོག་དྲི་བཟང་འདི་ནི་བྱས་པ་ཡིས། །
མཁས་པ་བརྒྱ་ལམ་ཞི་བའི་འབྲས་བུའི་གོ་འཕང་མྱུར་དུ་སྤྱོད་འདོད་རྟེན་པ་ན། །
དེ་ཚེ་མངོན་པར་རྟོགས་པ་དཔག་བསམ་ཤིང་ལས་རབ་བྱུང་རྒྱས་པར་བརྩད་བཟང་[1]ངའི། །
ཤིན་ཏུ་རོ་ལྡན་སར་[2]པར་གྱུར་པའི་སྐྲི་མ་འདི་ནི་ཉེ་བར་བསྟེན་[3]པར་གྱིས། །

རྒྱུད་[4]དང་མངོན་རྟོགས་ཐབས་དག་དང་། །
ལྷ་མའི་ཞལ་ནས་སྒྲུབ་[5]ཐབས་ལས། །
བག་ཙམ་བསྡུས་ནས་འཁྲུལ་[6]པ་མེད། །
འདི་ནི་ལེགས་པར་བརྩམས་པའོ། །
བདག་གིས་འདི་ནི་བྱས་པ་ཡི། །
དེ་ལས་བྱུང་བའི་དགེ་བ་དེས།[7] །
འགྲོ་ཀུན་རྡོ་རྗེ་མཛེས་མ་ཡི། །
གོ་འཕང་མྱུར་དུ་ཐོབ་པར་ཤོག །

དཔལ་རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མའི་སྒྲུབ་ཐབས་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་སྒྲི་མ་ཞེས་བྱ་བ་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་དགེ་བའི་འབྱུང་གནས་སྦས་པས་མཛད་པ་རྫོགས་སོ།། །།

རྒྱ་གར་ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་པཎྜི་ཏ་མཁས་པ་ཆེན་པོ་དཱན་ཤཱིལས་སྒྲ་རང་འགྱུར་དུ་བྱས་པའོ།། །།

---

1 གསེར་。ཟད། 2 གསེར་。ཚོ་。གསར། 3 གསེར་。རྟེན། 4 གསེར་。རྒྱུ། 5 གསེར་。སྒྲུབས།
6 གསེར་。འཁྲུགས། 7 གསེར་。དེ།